



सपुण स्वरायरी साजम

# राजा राममोहनरायसे गांधीजी

[भारतकी आजादीक अतिहासका अरु समीक्षा]

मगनभाओ प्रभुदाम देसाओ

अनुवादक

रामनारायण घोषरी



नवजीवन प्रकाशन मन्दिर

अहमदाबाद

मद्रक और प्रकाशक  
जीवणजी डाह्याभाआ देसाजी  
नवजीवन मुद्रणालय अहमदाबाद-१४

○ सर्वाधिकार नवजीवन ट्रस्टके अधीन १९५९

पहली आवृत्ति ३

## प्रकाशकका निवेदन

गुजरात विद्यापीठ अखिलवाचन मंडल गुजरात पुस्तक गता राममोहन रायजी गाराजा श्री मृज्जवन् म्मारख प्रथमांगकी अब पुस्तक हमें प्रकाशित का था। गुजरातमें यह पुस्तक मन् १८५७ वं शताब्दी महामुक्क अग्रज्यमें प्रसिद्ध का गयी था। अगवा हिन्दा मन्वन्तिका गूजरात विद्यापीठ हमें अनुमति का जिनर लिख हम विद्यापीठ बन आमारी हैं।

अिममें पिछला दो गी वर्षों (मन् १७ ७ म १९५७ तक क) हमार भागीय अतिशय अडकी ममाणा का गयी है। अिउ पुस्तकका जम कम हुआ अिममें दिन दिन बानाका म्मावण आ है अिउ विषयमें श्री मगतभाजी दगाभान कपनी प्रमाणामें विस्तारम बनाया है। अत हम अिउ आणाम य हिन्दा मन्वन्तिका हिन्दा नगतन गामन प्रम्नुत करत ह वि रूडा कौन्ता तथा गामाय पाट्राका यह पुस्तक अुपयागा और लिखम्य मान्य हागा।



## प्रस्तावना

जिम पुस्तकका अपना नाम बनाता है कि यह भारतका आजागीके अतिहासका एक मसाला है अर्थात् यह अंग्रेज अतिहासका विवरण-ग्रन्थ है। जन जिममें अंग्रेज अतिहासका व्योमकार बनाने की मिश्या न बना करनेका मंग अिराज हा था।

विर नी म कपमि मानता आया ह कि अंग्रेज व्योमकार बनाने अत्र मिश्या जाना चाशिय। एक तरहम वर ना अंग्रेज मिशिनका स्वप्न नी मन मन-हा-मन मेवन किया है। मरा १६०० म १८०० तकका अतिहास भारतका जयज व्यापारगाही अंग्रेज स्वप्न आरम्भिक अस्थात ममें है। आग १८५५ तरका अंग्रेज काना कपरेगा मन नयार रमा है। अमर घाट यह क्या आग मिश्या जानी चाशिय। परतु यह म्वा और वर वाम जय हागा तत्र हागा। जिम वाच १८२५ म १०० कपक अतिहासका विग्रम मसाला करनेवाका पाठपुस्तकों किना अध्ययनकताका तयार करना चाशिय यह म्वा अर मिशिनका नात म्वाका म्मूत हुआ है। कारण आजक विद्यार्थीको अंग्रेज म्वात गतजिारा माने हा ना भारतक भावा नागरिकक नात अंग्रेजी मिश्या अपूरी रगा अतिना हा नरा नवजान भारतको वह ममष ही नरा मगा। हमारा मिश्या प्रगातमें आज भी यह कमा पूरा नहीं हुआ है। अर जुममें गुधार हाना चाशिय।

परतु यह पुस्तक अंग्रेज मनाश्याका माथा पणिम नहा है। जिमका अन्तलि अरमित ममें हुआ। मत् १९५४ में गुजरात कौञ्जक अतिहास और अध्यापन म्मूत अरन २५ कपक जगदक अुत्पापमें अर व्याख्यात माशका आरोरता किया था। अमें भाग नरनी म्मूत बनाया गया था। विरय मिश्या गया म् — नाग्रेज कय स्वतत्र हुआ? यह विरय मरा रचिया था। जिमकी कर्वा करनक मिश्र मन गारक मिश्या — मरा राममाहनगमष मापाका। म् पुस्तक जिम नाग्रेज प्रगातित हा रहा है।

व्याख्यात म् दा प्गातें मन जा कता का वह थाताजारा मिश्रम माूम हुआ। मन गाका अंग्रेज रमित विरयका प्रगातितता म्मूत ना म्

म अमक वारेमें कुछ ख लिख डालू ता शिक्षण अन माहित्य \* के पाठकाका जच्छा गगगा । अमके मपाठके नाने मज कुछ-नकुछ लिखना तो पता हा है तव यह विषय क्या बुरा है? जिस प्रकार मन जनवरी १५४ में यह खमाग गरु की और १९५५ के नवम्बर तक किस्तामें जारी रखी । अिस अरसेमें म १९४ क इतिहास तक पचा था । १९४२ का समय आन पर यह खमाग रक गयी । १९४२ स १९४७ तकके ५ वर्षोंका अत्यन्त गतिवान इतिहास भाग अमक वा अमी अभी तयार किया है । अतना भाग अिस पुस्तकमें पहली बार प्रकाशित हा रहा है । अमक अगवा अय सारी सामग्री शिक्षण अन साहित्य में प्रकाशित हुआ खेास कर अिस पुस्तकका सम्पादन किया गया ।

अलवता पुस्तकका मुख्य भाग अिमके प्रथम ११० पठ ह । जसमें मन इतिहासका अब समग्र समाप्ता प्रस्तुत करक गक्षणमें यह क्या कही है कि भारत कम आजा हुआ ।

अम पुस्तकका रूप देने समय विचार आया कि अिम क्याका पूर्ति करनवाग दूसरी सामग्री तयार हो सके ता अमे भी ले जना ठाक होगा । अिसमे पुस्तकका अुपयोगिता भा बू जायगी । यह मानकर पूर्तिके रूपमें अिसम म खानवाली दूसरा सामग्री शिक्षण अन माहित्य में स चुनकर यहा ली गयी है । म मानता हू कि पाठकाको वह पम आपगा ।

मूल इतिहासका समीक्षण माय पूर्तिकी यह सामग्री चुनकर रखनमें जा खयाल मरा नजरमें था अम यहा सभमें बता हू । पूर्तिके आरभक ६ प्रकरणमें कुछ विषय इतिहासिक सामग्री है । अुसक द्वारा पिछ १०० वर्षक कुछ काम अकाने इतिहास पर प्रकाश प मवगा । प्रकरण ७ म १२ में जाजाक प्रमव निर्मात्राक वारेमें कुछ सामग्री है । अतमें गागाजाने वारमें मख्य अनका मत्राप्रही काय-वदतिका चित्र मिगा । वाका इतिम ४ प्रकरणमें दग विधानका और अमक वा नवीन भारतक कुछ मख्य प्रनाका चचा है । यह सामग्री १९६० म १९५ तकके खामें म हा गा गयी है । अब खयन मिवा (ना गा गागागम पका है) जीर मय ख भरे है । पाठकाके निवन्त है कि अह पन समय अुनक नाच ली हुआ खि

\* गुरुरान विद्यापाठका गजराता नामिक जियका नाम बू कर अब नवत्रावन कर दिया गया है ।

जानेकी तारीखें ध्यानमें रखें क्यकि जनका चचा भारा अियात्ति पर अिमका छाया हागी, जो अिम समय पन्ने पर मल गाना नहा माग्म हागी ।

समाधाकी गगी तथा खचकि विस्तारके बारेमें दो गल कहन उन्ना ह । यह गलभाअ गल ता अिम गवाग्म हकी थी कि दा-चार लखीम व्याख्यानका मम बता दिया जाय । अिमका इसर पाठकाको गुस्के प्रकरणमें लिखाआ ग्या । व प्रकरण लगभग स्परलाके नाउ नसे माग्म हाग । ज्या ज्या म अुसमें आग ग्ता गया और क्या हमार समयके नजगीक जानी गजी त्या त्या अिम सक्षिप्त गीमें अनजान ही फेरवल्ल होता गया । क्या कुछ विस्तारस लिखी जानी रहा । अिसकी किम्में म हर महीन लिखता जा रहा था पहग्म लिखकर रखी हुआ क्याना विस्तारमें नहा दे रहा था । अिम प्रकार चग्त चग्ते १९४२ के काग् तक म आया कि आगका किम्त रक गया जो अभा तक रुकी हुआ है । अिसका कारण यह था कि क्रिष्म मिगनके आगमनसे ग्बर १९४७ तकक पाच-सान वर्षोंमें घटनाआकी अमी परम्परा चगी कि वह सारा सूत्र याग् करके ही अपनी बात लिखी जा सकनी था । अिसक लिअ अुम विषयका मामगी दखना जरूरा था ।

अिम प्रकार ग्वा हुआ काम अिस पुष्पकव प्रकाशनके निमित्तम याग् समय पहग् हायमें लिखा । १९४० क वाग्क अितिहासके य प्रकरण काफी लम्ब हा गय हैं । मुअ लगता है कि वे पाठकाको पमन् अप्पेग क्याकि १९४२ स १९४७ तक ना कुछ हुआ अुमका सक्षिप्त क्या अनमें पाग्वाका मिग्गी । य प्रकरण तयार करनमें मुय श्री वा पी० मेननकी पुस्तक अि ट्रान्सफर आक पावर अिन अिग्या स अच्छी मन् मिली । अिमक लिअे म द्दश्यम अुनका आभार मानता ह । यकि वह पुस्तक न मिग्ता ता क्या कहनके लिअ मय अुनसा तत्कालीन सामगी दखना पडता और फिर नी अिम काग्में हुआ घटनाआक था मनन अम अान्तरिक जानकार जो कुछ कह सकन ह वह तो मिल ही नहीं सकता था । यह पुस्तक हमार दगाक अितिहासक अिम प्रकरणक मिअतिअमें बग कामका प्रय है ।

मेरा ग्दाल है कि भारतना आजागाक अितिहासका अिम ढगका समाग्या पुस्तकव रूपम हमार भाषा (गुजराती) में पन्ना हा बाग् प्रकाशित हा रही है । भारतका अिम वालका अितिहास अिममें पहलका अनक धनाशिपाकी गति मति तथा रीति-नीतिमें मौगिक परिवनन बतानवाग् है । अिममें अहिमन्





हृत्वा गच्छति ज्ञानं वा पतनं वा तत्र त्रिषु स्थितिषु ॥ अत्रान्नं भाग्यं  
 स्वप्नं प्राधानं त्रिषु च नृणां ॥ अथवा यदि च ना मनात्तत्र त्रिषु च नृणां  
 त्राणा अमरं गच्छति तान् ज्ञानं ज्ञानं द्वारा ज्ञानात् और त्रिषु चिदानं  
 त्रिषु बुद्धान् अथवा ज्ञानं अथवा क्रिया च ॥ यत् तन्मु क्वचत् त्रिषु च नृणां  
 है। अन्तर्मे जाति रम धम भाषा ग नगच्छता भत् मा नृणां ॥ मनस्य ज्ञान  
 मित्रतन्नात् प्रति वक्ष्यात् च ज्ञानं यत् यत् स्वत्वं त्रि मात् मनस्य  
 भाषात्तन् ॥ अथवा पाणिवाग्निं ज्ञानं मनस्य ज्ञानं तथा गच्छतान्  
 त्रिषु — त्रिषु प्रकाशा अत्रान्नं अथवा ज्ञानं त्रिषु मायात्तत् प्रमत्तित्वी  
 आत्मा है। अथा अथवा स्वभावं ज्ञानं तत्रयगता मात्तव प्रमत्तं ॥ गच्छान्  
 यत् अत्रान्नं त्रिषु मित्राया है। अत्र यत् प्रमत्तं मात्तु त्रिषु च मात्तव ॥  
 भाषतः त्रिषु स्वप्नं त्रिषु पर चक्ष्णा ॥ अत्रान्नं त्रिषु मात्तव यत् त्रिषु  
 यदि प्रमत्तुत्तु ममीणा मित्रा सुक् ना त्रमत्ता प्रकाशनं मत्तं मात्ता ज्ञाना।  
 भाषानं यह बुद्धान् भाषना भाषतः त्रिषु च मित्रा त्रिषु च त्रिषु च त्रिषु  
 प्राथना मात्तव मै यत् पुष्पं पात्तवै मात्तव त्रिषु च ॥\*

\* मूल पुत्रगाता पुष्पवती प्रमापना ।



प्रकाशकका निवेदन	३
प्रस्तावना	५
१ अुपोन्घात	५
२ राजा राममोहनरायका युग (भारतीय स्वातन्त्र्य-यात्राकी पहली पीढी)	९
३ १८५७ का युग	१३
४ १८५७ से १८८५ (पुनरुत्थानका जप का)	१९
५ स्वातन्त्र्य-यात्राकी तीसरी पीढी (सन १८८५ से १९२०)	२५
६ स्वातन्त्र्य-यात्राकी चौथी पीढी	२८
७ गाधी-युगकी स्थापना (स्वराज्य-यात्राका १९१५ मे १९३० तककी मजिल)	३२
८ आखिरी फमला (स्वराज्य-यात्राकी १९३० से १९३९ तककी मजिल)	४३
९ दूसरा विश्वयुद्ध और प्रान्तीय स्वराज्यका अंत	५३
१० युद्ध निपटका सत्याग्रह	६०
११ त्रिप्स मिशन	६५
१२ भारत छोडो की लडाई	६९
१३ लडाईका अंत और नयी ब्रिटिश सरकार	७३
१४ अंतरिम सरकार	७७
१५ संविधान-सभा सम्बन्धी गतिरोध	८०
१६ आजादीकी नाव किनारे लगी ।	८४
१७ भूतकात्तक गभस अपसहार	९०
	९३

### पूति

१ १८५७ की गतानी	१ १
२ पूरी हुआ पीढी (१९१५-१९४८)	१ ४

५	सौ वष पहल		११४
४	राष्ट्रकी शिक्षाक पिछले सौ वष		११८
५	धार्मिक शिक्षाका प्रश्न		१२८
६	राष्ट्रका वनियानी शिक्षा		१३३
७	गांधाजीका काय पद्धति		१३८
८	आखिरा प्याग		१४
९	म घम कि न सयन ?	गोपाबदाम पटल	१४२
१०	सरदार जीर नवाहराग		१५१
११	कायदे आजम जिता		१५६
१२	कुगठ व्यहवार माअष्टवदन		१६२
१३	घमवार दग जीर भाषावार प्रान		१६३
१४	गकनत्र या नौकरगाहा		१६९
१५	राष्ट्रीय सविधानकी दो गावार्जे		१७१
१६	भारतके राष्ट्र-सविधानका जम		१७३

1  
राजा राममोहनरायसे गाधीजी



# अपोद्घात

१

गजा रामभास्कररायका समय था मन १७७२ म १८३३ तकका।  
अम काभमें अमरा राय बगाभमें जम गया था। और मजबत नींव पर  
अमका स्थापना करनका बात अमरा नामक विचार रह था। अम प्रकार  
वह का अमराके रायका स्थापना-युग था।

गजाका समय मन १८६० म १९४८ तकका था। अम कालमें  
अमरा राय पूरा जम कर फिर अमराने ग्या। अम पर गिगाजीका पपडा  
अपरनाके हाता है क्या कुछ बात गुजा। अम प्रकार मह काल अमरेजी  
रायका स्थापना-युग था।

स्थापना-युगव भारतक परप्रगमका काम रामभास्कररायन किया।  
मह म क्रिया तरह अम महापुत्रका निन्दा या अपस्तुतिक रूपमें नहीं  
कहना। परन्तु अममें म अमका पूरा स्तुति कर रत्ता ह।

अम मगमें भारतन कुछ नया हा अनुभव किया हथियारके हाते  
हथ गतिक हात अ तथा व परांपन कृपाता आर वदिक हात हुने  
मा अजारा कामन आय हथ मुटगाभर गारके मगने पराम्न हाकर भारत  
अनक नाम और व्यापारका गिवा बन गया जोर अम प्रकार अम  
गुगम बननम काआ भागनीय राजा-महाराजा रात न सक। मने जसा  
दि अमरा जिनिहासका गिवात कहा है, हमार हा गया हमारे हा अपसे  
गया हमारा हा मनाम अमरात मने हगया और अपना काम बनाया।  
बन्कि जमा हाता ता और भा विचित्र माना जायगा। अम विचित्रतास  
हमार जनता स्तप हा गजा फिर भा नय भारतमें अमन अक नाम  
गानि और मग-पुरा व्यवस्था भा ग्या।

अम प्रकारक विचित्र परिवर्तनका नरका पहचानकर दगाह लिज माग  
सूचित करनका वद जिम्मेदारा गजा रामभास्कररायन अम का यह अति  
हाम नगर कहता है। बकिबर टागाका वाक्य अदुन कर ता



Through the dynamic power of his personality and his uncompromising spirit he visualised our national being with the urgency of creative endeavour. He is the great path maker of this century who has removed ponderous obstacles that impeded our progress at every step and initiated us into the present era of world wide co-operation of humanity

[अपनी प्रबल प्रतिभा और जलज्ज् जात्मबलसे जहान तुरत पहचान लिया कि हमारी राष्ट्रमाका अपन विकासक त्रिज मजनात्मक पुरपाथ तुरत हाथमें लना चाहिये। इस गताब्दीसे वे महान पथनिर्माता हू पग-पग पर जा भारा विघ्न हमारी विकास-यात्रामें जात थ अन विघ्नाका अज्ञान दूर किया और आजक जगद्-व्यापी मानव सन्योगक नव यगकी हमें दीया दी।]

राजा राममोहनरायन भारतन आधुनिक यगकी नीव डाला और उस समय तक जमा राष्ट्रगति आरभ की जिसके जोरसे भारत अन समयकी अवतन दगामें स अति मानक माग पर अग्रसर हुआ।

जिस यगकायका समझनके त्रिज राजा राममोहनरायने जीवन और कायका बाडा परिचय प्राप्त कर ता जानल आय। परंतु यह गभ छो देना चाहिये।

## २

अपरोक्ष दृष्टिम हा लें तो भारतमें दूसरा नया विपम-यग आया वामबा सगामें पचन पर—सगभग अग्रजी रायकी स्थापनाका १ वष हा जान पर। जिस अवधिमें प्रजात लका जो हा होत दखा जममें स वह यग पग हुआ। राजा राममोहनरायन त्रिज हुआ पाग अनसार चले हुए भारतका ता दूसरा जनभव ला वह था पररायकी गगामीना जगव द्वारा हानवा जमानका राष्ट्रका जाभाक हामका स्वमान हानिका और प्रजाक स्ववका अवतनि हानक नयका।

यह नया परिणाम भा जमा ता बनि और जदुभन था। जम समय ना लका नय परप्रजाककी जलत था कपाकि पुरान युगका पा पर्याप्त नया था—अमका गति कम पना था। अस समय जमा ही प्रबल प्रतिभावासे महाभारता पुग गांधीजी हमें मि गय। गगार द्वारा राजा

रामभाटनरायण विषयमें कहे गये अपराक्त गान्धों हा हम अपन नय युगद्रष्टाव रूपमें गांधाजीको बना सकते हैं।

जिम दृष्टिमें देखें ता भारतवर्ष जिम ता महापुरुषाकी प्रतिभामें जिम तरहका माम्म था। दाना धर्मपुरुष थ द्वाभक्त थ मानवता प्रमा थ, ममान सिन्धु थ और महान भागताय थ।

सास विपत्ता यह थी कि दाना अग्रज प्रजाक मित्र थ और भागताय तथा अग्रज दानान् मम्मिन्ति कथाणम विचाम खनवाडी समन्वयनातिका मानन थ। परन्तु द्विहितामकी गनिका म्म जमा था कि अवन भारतमें अग्रजा राय स्थापित करनेमें हाथ बटाया और दूसरेन अुन अथात्ममें। ताना प्रक्रियामें ताना प्रजाअति सिमें हानक कारण हा अूरस्त विचित्र और विगधा लगन पर भा म्म और दूरदृष्टिम खन पर अब ही प्रवात्का काम जिम ता महापुरुषात किया।

तानाके समकालीन गवनर जनरलाका यां करनेम अक मजदार अुत्साहरण मिन्ता है। दाना महापुरुष अुतन मित्र थ और अक-दूसरेका मनायता करनेका अुमुक्त थ। बर्तिका और रामभाटनराय तथा माजुन्दन और गांधा मित्राके रूपमें रहे। तानान परम्पर महामता ता और दा और अपने-अपन लाका काम किया।

जिम प्रचारक यम प्रवतनका अत भा अुमक अनूप हा हुआ — स्वतंत्र भागनका प्रथम गवनर जनरल भारतकी हा पमन्त्याम अक अग्रज बना। जिम दा महापुरुषाका दृष्टिमें जा जगत्कय भाव और त्रिविक्रित् प्रमभाव था अुयन जिम बड़ मी दा मी बर्षोंक भारताम जितिशामका रचनामें मुख्य भाग लिया है। ये भाव जिम लम्ब युगमें प्रधान स्वरक रूपमें रहे ह और जिनाशिने अुट आग रम्बक विव-भागतको जम तनका काम आज जिति शामका नियतिकी अनिवाद्यताम भागन पर आ पडा है।

३

अग्रजा रायकाका जिम गताका द्विहिताम प्रवात् आज कुछ स्वच्छ हो रहा है। नम समय अमका अब और मवम चहा लक्षण भा दम्न लायक है क्याकि वह जिम ता महापुरुषाके नव विधानका गचात् निष्ठाक थी है।

अस लक्षणको सान्नी भाषामें हमन ऊपर देखा — राजा राममोहनरायन अग्रजी रायकी स्थापनाका मंत्र दिया गांधीजीन जसकी अुत्थापनाका मंत्र दिया ।

अस चीजको जरा गहरे जाऊर जाचनका जरूरत है । अिन दोनो अवसरो पर भारत और अंगरेजक नता सम्मतिपूवक चणे यह अल्लेखनाय वस्तु हमन ऊपर देखा । क्या ऊपर अपरम देवन पर यत् विचित्र नही ऋगता ? अग्रज वीसवी मनीमें राज्यत्यागके लिजे तयार हा और भारतीय असस पट्टेका मनीमें परराय स्वीकार करनके लिअ तयार हा यह घटना समझन जमी है । दूसरे गणामें कह ता राजा राममोहनराय जसे अन्तरमतवाणी पुरुष भारतकी गुणामीमें हाथ बढाय यह आजकी दृष्टिसे विचित्र ऋगता है । जिसी प्रकार गांधी जसे वसुधव कुटुम्बकम् का आदान रखनवाठ पुरुष अग्रजोके लिअ चण जाओ का तारा ऋगायें यह भी अतना ही विचित्र कण जायगा ।

अक दृष्टिस दखें ना यह विचित्रता दूर हा जाती है और अस युगवा सारा अितानस अक प्रवाह बनकर अक हा सूत्रके रूपमें हमारे सामन आता है । यह दृष्टि हमारा जनताक विकासका है अस काठमें रायसस्थाक सम्बन्धमें हमार विचारामें जा नओ पृति और नया दान इआ अुसका दृष्टि है । यहा सशपमें हम अिस दखेंग वस अमठमें यह घटना अितनी गभीर है कि अुसका पूरा विवेचन करनक लिअ अक बडा ग्रथ लिखा जा सकता है ।

४

राजा राममोहनरायक और अनेक पट्टेक काठमें रायसस्थाक विषयमें हमार जा विचार थ वे यूरोपक अम समयक विचारस भिन्न थ । हमारी दृष्टि नीतिधम अथवा ससृति-परामण समाज-न्यवस्थाकी थी जिममें राजा और राय अमक अक प्रमुख अणक तीर पर रहत थ । अग्रजीमें जिम कल्चरक स्तर कहा जाता है अम तरहक हमारे विचार थ । जिस पारिस्थिकल स्तर कण जाता है या नगन स्तर कहा जाता है असे राष्ट्रभाव-मन्क भिन्न काटिक रायकी कल्याण हमारी नहा था । डच अग्रज फेंच अियाति प्रजायें जिम दूरर विचारवाणी था । यूरोपमें जिस कल्पनाका जन्म हुआ था और अम कल्पनाका अपन साथ चर वहाक ऋग दुनियामें निवृत्त पण थ ।

भारतमें उस समय राज्यम्या मन्वधी यह भावना नही चाज था । जिसमें अग्रजाके सम्पत्तमें आन पर राजा राममोहनरायन युसका साम्प्रतिक मूल्य जाका । जहान दता कि जिस नही प्रजाक पास नजा विद्या है वह विद्या अमकी भापा द्वारा भारतकी प्राप्त करना चाहिय । अरबी फारसी और सम्प्रतिके जिम महान्तिन अक नही भापा द्वारा मित्र सक्नवाल नय खजानका देखा और भारतकी साम्प्रतिक सम्पत्तिक तथा ठाक विकासक हिनमें जुस जनानकी पुकार की । जिसमें जहें अिम्ल जौर भारत दानाका समान हिन दियाआ दिया ।

ब्रिलियम बटिक और मकौके पोिटिक स्टेट की अपनी भावनाके कारण जिसमें अपन राज्य-मगठनका लाभ मालूम हुआ राजा राममोहनरायका जिसमें अपन लागका ससृति विकास अथवा विद्या विकास मालूम हुआ । जिस प्रकार दानोका मठ बठ गया । नतीजा यह हुआ कि भारतमें अग्रजी राज्यका स्थापनाके काम अठाय गय । राजा राममोहनरायका अममें गलामा नय मालूम थी । व अग्रजी राज्यका नजा तासारका न पहचान सक अम समय वह समयमें आ भी नहा सकती था । भारताय देशराय भा नगन म् — राष्ट्रीय राज्यकी भावनाका माक तौर पर समय नही पाय थ अिमालिअ आपममें लडन थ और अग्रजाक राज्यको भी गमग देका अक नया देशराय मान कर चलने थ ।

अग्रजी राज्य-व्यवस्था दूसरा तरहमे भा अम समयकी देशीराय व्यवस्थाकी तुलनामें हमारे कुछ लागका अच्छी लगी और पराजा हान पर भी जरूरी नही । यह भा अग्रजी राज्यकी स्थापनाका अक कारण जम्प था । परन्तु उस हमन गुलामी नही समजा कयाकि हमारा मुख्य विचार साम्प्रतिक मुसयक आम्पाका था ।

५

परन्तु धीरे धीरे अनभव हान पर यह विचार बम्पना गया । ज्याया अग्रजा राज्य आग वडा त्या-त्या हम जुस समयन गय । नयी प्रजाक राज्य सम्बन्धा और अुसका राष्ट्र-लिक विचार हम देवन जानन और पढन ग्य । और जम डगत हम अपन गेक प्रति और अुसके हिनके प्रति देवन ग्य तन्नुमार अुस आग बडानक मिअ तम्पर हाने गय और असा करते-करन लगभग तान-चार पाडिपके भीतर — १९ वीं सदीक अन्त तक हमारे लागका

लगा कि दंगमें मुराया होना ही काफी नहीं है मुरायाके अति स्वराय होना चाहिये और परराय मिटना चाहिये क्योंकि हम भी अन्तराष्ट्र ह। अिस प्रकारकी विज्ञाप राष्ट्रीय अस्मिताका अुदय पिछड़ी सन्तीका अक बडा नया अक्षण है।

और अिस अन्भवम यह माअम हुआ कि भारतका स्वराय प्राप्त करना चाहिये — राष्ट्रके रूपमें स्वतत्र राय बनना चाहिये नग तो अमका विकास नहा हा सकता। यह युग-परिवर्तन राजा राममोहनरायके यगम अिन्न प्रकारका था।

अिन विचाराने कारण धीरे धीरे असा समय आया जत्र अयज भा मनसे या वमनम ममन गय कि भारत अोअनमें ही अमका हित समाया हुआ है बना भारत ता जायगा ही अमकी मत्री भी खो बठेंग। अिसके परिणाम स्वरूप दाना दंग मित्रतापूर्वक अक-दूसरेसे अग्य हुआ और अिस प्रकार अक बडी श्रान्ति हुआ। भारतका अक राष्ट्रक रूपमें और पार्लिमेण्टल स्टेट क रूपम जम अया। भारतक मासृतिक विकासम यूरोपकी यह नया दान अतर गया और हमारी मासृति अस हू तक अधिक विकास करव पुन अपनी प्राचान विकास यात्राका अर्वाचीन यगमें आग जारी रख सकी है।

अिस नवयात्राके समय हमारी अोकात्माका आग बडनका मत्र गांधीजीन श्रिया अगारक कथनानसार असा ही मत्र १९ वी सन्तीमें राजा राममोहनरायन अग ममयक अिन्न श्रिया था यह हम अपर देख अके ह।

अिस यात्राका अिनिगम हमारी स्वतत्रताका अिनिगम है। वठ अक मासृतिक वस्तु है — कवअ राजानिक नहा। अिस अितिहासको अम अुमक मुख्य मरूप सूत्रधाराक द्वारा रख सकते ह। अमकी काअी पाच पाश्रिया हा अका ह। अिन पाश्रियाका अक हम अमग अवेग।

## राजा राममोहनरायका युग

[ भारतीय स्वातन्त्र्य-यात्राकी पहली पापी ]

१

राजा राममोहनरायका पापाका अर्थ है १० वा मराठा प्राग्भक्तान् ।  
वर्षाओं में जब समय नहीं जगजा राय-व्यवस्था जगजा तरङ्ग नम गया थी ।  
अम प्रान्तकी राय-व्यवस्था १७५७ वं वर्षक १० वर्षोंमें पूरा हो चुका था ।  
वर्षों में अम राय-व्यवस्थाका जमानक लिज हम्मियम और कानवालिम जम  
चनुर अग्रजान वाम किया था ।

पिछा नवाजा राय और टून नम मराठा रायक जमानमें जमी  
अवाववा था अमुका तुलनामें यह नया जमाना कुछ ठाक और स्थिर  
रगता था । जनताक वता घना वग अग्रजाक माथ मिन्ना अनक जातियाके  
स्थमें व्यापार धधम गम अठा सकत थ । और जमानाक मिन्मिन्में  
स्थाथा जमानाक वग भी कानवालिमन कायम कर लिया था ।

मराठामें जीमजवन भू करक हमारा प्रजाकी मशुति जीर धममें हम्म-  
क्षेप किया । अम मारामें हम अत्यन्त जायत प्रजा हू किमीक अम हम्मभपका  
हम जग भा मन्त नहा कर सकत । जिमलिअ अम रायका हमन अहा-तहा  
तात् गग । नया राय सहा करनका अर्थ यन् किमाका किया जा सक ता वह  
मराठा रायका किया जा सकता है । लकिन वन् अम जिम्पारामें पूरा  
नहा अतरा । सन् १८०० तक अम रायका अमनका कियाजा दन लगा था ।  
गजनातिक इन्दिम नास्त जिम मिज हा गया था । १९ वी मराक प्रारभिक  
चनुथाग तद ना रजसदा भारत लगभग परास्त हा गया और मारा  
भारत अग्रजाके हाथमें चग गया था । १८० तक जिम भागमें आजकल  
पश्चिमा पाकिस्तान है अम छाडकर बाकाका लगभग सारा हिन्दुस्तान  
अग्रजाके हाथमें चग गया था ।

यन् नया राय मारामें हमें अतरा नया था । वन्ति वाचक ममपकी  
अधायुधा और पिन्गराणाका लूमारक वात् नय रायमें प्रजाका निश्चिन्ता-

सी भाङूम हुआ। जिसलिअ अग्रजा रायको जमानमें हमारे लोग गरीब हुआ। और किमाका जसा नही लगा कि हम अपनी गुन्गामीकी जडें मजबूत करनेमें भाग ल रह ह।

२

परतु नया युग अपन साथ नय प्रश्न और नय परिवर्तन ला गया ही था। सचमच देगमें जब बडी सामाजिक और राजनीतिक क्रान्ति हुआ था जा जतम सांस्कृतिक बना और समग्र लोक जावन पर असर डालन लगी। जमक मस्य पन्ठ दखन चाण्यि।

अग्रज गामक भारतमें बमकर राय नहा करते थ। हिमालय और नेपालमें तथा जसे जय पहाडी भागोंमें रान और बस्तिया कायम करनका गुरुमें जुनका जिराग था परतु वह टिका नही। अग्रज पाच-पाच वषमें भारतके रुपयस घर जाते रह और भारत पर राय करने रहे। जसे मुसलमान भारतमें हा बम कर यहाजे निवासा बन गय बम अग्रज नहा बन। अससे यह कहना चाहिय कि जिस सचमुच परराय कहा जा सक अमा राय पन्ठ-पन्ठ अग्रजाका हा भारतमें स्थापित था।

गामक रूपमें अग्रज अपनको भारतके लोगोमे अूचा मानत थ मह स्पष्ट है। भारतक जूच-नीच भावस भरे सामाजिक वातावरणमें तो खास तौर पर जसा ही हा सकता था। जिस प्रकार रायमें भ्रभाव और देगियाके प्रति हीनभावने बीज बा ण्यि गय।

जकाकामें जसे अपनिबग कायम हुआ और अग्रज घर बनाकर रहे वसा भारतमें नग हुआ। जिसलिअ आज जम दक्षिण अफ्रीका बनिया आण्णिमें बगक गारे ह वस भारतमें भारताय गारागी जावाग नही है। हा अंग्रेजाजिण्यिन जानि जरूर पन्ठ हुआ परतु जसका कारण भिन्न है।

अग्रजाक रायका जरूरत य थी कि भारतीय गग जनकी नौकरीमें व्यापारमें और सनामें मन्ठ नैं। जिसक ण्णि जब नया मयमवग सडा होना गया। जिस चाजम भारताय समाज पर तन् तरटका असर हुआ। दा प्रजायें आपममें मिन्त ग्या परन्तु समानभावम नहा। यह स्पष्ट है कि भारताय कुछ नाचपनका भाव खबर चन् थ।

अग्रज लाग यरायकी नया सभ्यता ण्कर आय। जमका स्वरूप विज्ञान

बुमवा धन मिलकर उसे नया रूप दे रहा था। परंतु यह चीज अस समय किसीको खास तौर पर महसूस नहीं होती थी। वह एक नया आरंभ हानवाला प्रवृत्त प्रभाव था असा आज हम कह सकते हैं।

अंग्रेज भी भारतक लागाको बीमाजी वतानमें लिखिस्या ग्ते थ। यह सब है कि पुनगागी गगारे बराबर नयी फिर भी खुन्हान आमाआ मिगन प्रवृत्ति भारतमें गुरु की। बगामें डच गेगाकी यह प्रवृत्ति बहुत पन्नाम जारी थी। यद्यपि अंग्रेज अपन व्यापारकी ही मुख्य वस्तु मानत थ फिर भा घम-गरिवतनको छोड़ नहीं सकते थे। गाराका नयी दुनियामें जा प्रयाण गुरु हुआ वह अस्लामका मुकाबला करन और अमे दवानक लिख था। असा करत हुआ जह व्यापार नजर आया असलिअ व्यापारम अस्लामी प्रजात प्रतिस्पर्धी बनकर गाराने कुछ अस क्षेत्रस हटाया। धारे बीरे असमें व मफ्त हुआ। फिर भा घम-ान्तरका मूल जावेग थाडा मात्रामें ता जारी ही रहा।

भारतके हिंदुआमें मिगनरियान बीसाजी घम फलानक प्रयत्न गुरु निव। अिमका अमर गक-जीवन पर तुरन्त लिखाजी निया क्याकि जसा पिछड प्रवरणमें कहा गया है हम घम और सस्कृतिक माम्में जाग्रत प्रजा हैं।

यह असर क्व धार्मिक ही नहीं परन्तु सामाजिक भी था। हमारे सामाजिक रानि रिवाज धार्मिक आचार बगरा परधर्मियाका आगेचनाक विषय बन। हमारा कृतिया बगरा पर नयी जागेचना हान ग्या। एक जमानमें अस्लामक आतम जा हुआ था बुसम मिल्ना जुलता नय युरापियन आमाजी घम और असकी मस्कृतिक सघपन भा गुरु हुआ।

मान-मान विवाह आदि सबमें नयी हा वानें दखनका मिनी। अस लोगत ग्या कि गाराके कारण गराब एक प्रतिष्ठित पेय हो सकता है। जिनम स्पष्ट हा दागबगारा बनी। अिसा तरह पागाक आत्मिें भा हुआ।

जिन प्रकार अंग्रेजके जानम जा नया युग आरंभ हुआ बुसक मन्व-घमें और भा कुछ वानें गिनाया जा सकता है। बुस समयकी सारा अितिहास सामग्राना जाच करक ये वानें अधिक स्पष्ट निश्चित और पूण बनान जमी है। १७७७ म लगभग १८०० तकके अिम कात्वा म्यतिकी गाध करक बुसका प्रामाणिक और व्यवस्थित अितिहास अब समाजर सामन पर किया जाना चाहिय।



राजा राममोहनरायन जिस नये युगमें पुनरुत्थानका काम किया। भारतका किस प्रकार व्यवहार करना चाहिये इसमें जक-दा वर मह निश्चित करके जुन्होने लोड जीवनका एक खास भाग पर रगाया। जिसलिज व भारतकी नखी यानाने पह्ने मागण्ड्या मान जायग। जन्हान जो मख्य मह बताय जहे सक्षपम नीच द दू

१ अग्रजोक पाम जा नखी विद्या है वह हम लेनी चाहिये।

२ जिसलिज हम जनकी भाषा सीखना चाहिये।

(जिन रानामे नौकरी जियातिका आर्थिक लाभ भी था जा जममें प्ररक और आकषक बना।)

२ नयी वस्तु नमें धमदूलि और मतिपूजा वगराकी तरफ जहान ध्यान लिया। ब्रह्मसमाजकी स्थापना की।

रकिन व मानन व कि प्रजाका स्वतंत्र नाग हान दिय बिना यर मव किया जाना चाहिये। व जीमाजा रहा बन। हा जीमात्री धमका अहान जिनना सागापाग अध्ययन किया कि जासाजा पारियाको भा अनका रान मानना पता था।

६ वह फास और जमराकाकी नातियाका यग था। अनका जहान क की थी। परतु भारतक वारेमें जनका यह विचार था कि जग्रजी राय आया ता भर आया अगर हम जनम लाभ अठायेंग ता वह सुराय बन सकगा।

जग्रजान अपना राज्य किम ढगस और कम जमाया जिसका चित्र ऐयनक लिज पाठकाको स अपना (गजराता) पुस्तक भारतका जग्रज व्यापारगाहा पनका अंगारा करव अिस विषयमें मनोप करगा।

और भारतक व्यापारधद पर जिसका क्या अमर हान रगा यह भी अिस पुस्तकमें मिग सकगा।

यह सब पह्ण वगाणमें स्पष्ट हुआ यह ममजमें आ सन्ता है। वग अग्रजाका नया राय पण जमा और जमा रग पर आय चकर दगभरमें पग।

## १८५७ का युग

१

राजा राममोहनराय १८३५ में अंग्लोंमें गजर गय। भारतके लोक जावना प्रगतिक सम्बन्धमें अन्हान दा मस्य माग स्थापित किय

१ मसृत फारमा और अरबी द्वारा प्राप्त विद्याधनक अगवा अग्रता भापा मावकर अमरु द्वारा अंग्लडका नयी विद्यामें हस्तगत की जाय

२ जन जीवनमें जागति और नवचतनका मचार करनर लिअ प्राचीन अकवस्वादकी बुनियात पर नया धम विचार पुन स्थापित किया जाय और अमरु आधार पर भारतीय समाज जीवनमें पुनरुत्थान और मुनारका काम जारी किया जाय। मनीप्रयाका विराध विधवा विवाह क्यागिआ आदि वाने जिमाका परिणाम था।

परन्तु भारतका धम-समृतिके मामलमें व स्वस्य और स्वधमनिष्ठ रह। जिमलिअ आमाजा धम-परिवतनका प्रवतिके अन्हान पमन्द नहा विद्या और भारतके लाकाचारमें अमरु तगक मुनारका अवहृत्ना का।

जिम प्रवार राजा राममोहनरायने भारतमें नवयुगका आरम्भ किया।

अग्रज नामक जयान् मकॉलि वटिक आदि तग अपगत वस्तुजाकी पसत करत थे। परन्तु उनका भूमिका और त्रि दूसरा था। राममोहनराय राजा मत्त्वनिष्ठ प्रगतिकी दृष्टिम माचन थ अग्रज अपन रायका प्रतिष्ठा और निरस्ताकी दृष्टिम और अपना समृतिकी अुत्तमताका दृष्टिम विचार करन व। व धम-परिवतनकी प्रवतिके अिअ मानन थ और भारतमें पश्चिमा तगमे समाज-परिवतन नी हाना रह तथा जमा मकॉलि अपन अक त्गाय पान अगानमें क्या था भारताय तग अग्रता और अुनरा समृतिक पूजक और अनुसरण करनका बने जिम व वाठनाय वस्तु मानन थ।

राजा कास्य कारणम् व अनमार अग्रजाका जिम प्रकारका अमर हान ना लगा था। और जिममें काजा जाचय नहा। परन्तु राजा राम मोहनरायकी दृष्टि जिम प्रकारके परिवतनके विरुद्ध था कयाकि भारत

सांस्कारिक या सांस्कृतिक जीवनमें वे जो पुनरुत्थान चाहत थे जुममें अिसे कोअी स्थान नहा था। भारत जपना राष्ट्रधम भूउनका तयार नहा था।

जिम जक मूठ दष्टिभूके कारण ही १८५७ की प्रचड आग भडक जुग। भारतीय और विगयनी संसृतिपाके दो स्वतंत्र रसायनाके मिश्रणका यह पहा परिचय था। जुतन नाना पक्षाके आख-बान खार दिय और जुमक साथ राममाहनरायका पापी पूरी हुआ असक वाग अनकी जुतराधिकारी पापाका आरभ हुआ।

२

जिम ममयरी वाग-गणना माग रूपमें देना हा ता वह १८३५ से १८८५ का मानी जायगी। असक दो निश्चित भाग हो जाते ह — १८५७ क पन्का भाग और असक वागका भाग। १८५७ क पहलेक भागक वाग ही थ जा भूपर बताय गय ह (१) राजा राममोहनराय द्वारा प्रवर्तित पुनरुत्थानका वाग और (२) अग्रजाकी लयी हुआ पांचास्य सयताकी जार दगाका माडनवाग रायबड।

अग्रजाक रायवास अलग मान जा सकनवाग नय दा बगमें स अक मिगनरा वागका जुलुग्व हम कर चरे ह। दूसरा बल था हमारी विद्याआका अध्ययन आरभ करनवागे यूरापाय पन्ताका वाग। अनमें विगियम जान्म विल्किंस कालबूक टाग प्रिभप मकममठर फग्यमन कनिषम जित्माति मान जायग। जिम बगके आगाकी दृष्टि मकोंके जमी छिछरी नहा परंतु गरी जीर अगार था। व हमारा विद्याआ और प्रयाका अपनी अध्ययन प्रणागका नया और तटस्थ दष्टिस दखन गग असम हमें भा नवान प्रनात हानवाग दष्टिविग्ट दष्टिया और वस्तुअें पना हान गगा। जाग वागकर जिम गगम अध्ययन करनका पद्धति भा दगा विगान अपनान गग जीर विगाना विगाना जस हा सम्मानक पात्र बन। तलग भानारकर आति जस हा महाराथा मान जायग।

यहा वाग जग्यनाय है कि यह तामरा विद्याग १८५८ में जा तान विवविद्याग्य — वागकता वाग्वआ और मगाम — स्थापित हुआ जुनक माय भा जड जाना है। जिन विवविद्याग्यके तारा हमारा प्राचान विद्याआका विगाना पद्धतिम पानका काम १८५७ क वागक वागमें व्यवस्थित रूपम

आरम्भ हुआ। य त्रिचक्रियाय अग्रजा भाषाक द्वारा काम करने का अन्तर्लिखे स्पष्ट है कि अपन आप — अय किमी कारणम नहा ना अम भाषाक माध्यमके हा कारण — पुराना श्राव नजा वातगमें भरा जान लगी।

!

३

अग्रजा राजनाति अक और वातमें भा भाग वर रहा था वह थी अपन रायका धार धार मजबूत जाँर जकछत्र धनातका वात। वस्तुतःने फौजा मरुत नर बहान दगा राजाजाका अपन काजमें कर लिया था। फिर भा अनुक गय अग्र-अग्र य अग्रजाका गय मार गामें अकचक्र नहा था। जिनम सचालन और व्यवस्थामें कुछ कामा जन्म रन्ता थी। असे दूर करनेका काम भा जन्ममें दृष्टीमाक कायकागमें अग्रजात हाथमें लिया। जिनम अपन-आप दगा राजाआ आर नवाबामें अमताप और विगय पदा दगा। विधर्मों गग हमार गामें अपनी जग जमाकर हमार दगागयाको नष्ट कर रहे ह जिनमें हमारी मत्त्वहानि और मानभग है जना अमर गक मानम पर हुआ।

नआ गामत-नातिक अक-अ दूसर अमर भा विचारन तस माने जायग। ज्या-ज्या दगा रायके साथ युद्धक अवसर कम ज्ञान गय और नया राय स्थिर होना गया त्या-त्या मनाकी आवश्यकता घन्ता गयी। अग्रज अपना सडा मना रसत य अमक अगवा गारायाकी सामत गहो पद्धतिम मनारमें भरता की जाना था। य दाना प्रकारका सनायें कम हा मना। जिनस अक प्रकारका वकारा भाजा जिनम गामें राजनातिक रूपार और पिढारागाडाका जमाना आ गया। अग्रजात अह सफन्तापूवक दबाया और उडाक गग जमात पर आबात हाकर मनारमें गग। यापार प्रथमें भा कपना मरकारका गायण गु हा हा गया था। जिन प्रकार अग्रेजी रायका स्थिरताक आर्थिक परिणाम भा धीर धार लियाजा दन गय थ।

अग्रज कमचागिमाका वृत्ति भारताय प्रजाक प्रति जिन वागमें अछा था। वागमें प्रजाक प्रति सन्ट रसकर काम करनेका युग आया बना जिस कागमें नहा था। असा नहा बहा जा सकता कि अग्रेज गागकामें य मान पना गयी हुआ था कि भारताय प्रजामें जा गाम्प्रणयिक भेनाद ह और हिन्दुआमें जातपानका जा जचनाच भाव है वर राजनातिक धर्ममें विश्वी रायका भ्रानतिक शरा मजबूत रखनमें अपयायी हा सकता है परंतु वह

सांस्कारिक या गणतंत्रिय जीवनमें व जो पुनरुत्थान चाहते व जगमें प्रिये कोभी स्थान नहीं था। भारत अपना राष्ट्रधर्म भूतनरा तयार नग था।

जिम जग मूठ दृष्टिभक्त कारण ही १८५७ की प्रचंड जाग भइत अठी। भारतीय और विगयना गणतंत्रियाना न स्वतंत्र रगायना मिगयना यह पहला परिचय था। अमन गना गभात आग-वान गान्त्रिय जोर अमन साथ राममोहनरायना पीडा पूरी हुआ अमन वा अनरा भुतराधिरारा पीनीका आरभ हुआ।

## २

जिम समयका काग-गणना माग रूपमें देना हा ता व १८५१ व १८८५ की मानी जायगी। जसके दो निश्चित भाग हो जात ह — १८५७ के पहला भाग और असके बादका भाग। १८५७ के पहला भागक उर वे ही थ जो अपर बताय गय ह (१) राजा राममोहनराय गारा प्रवर्तित पुनरुत्थानका बग और (२) अग्रजाकी गयी हुआ पांचात्य मयनाकी जोर देगवा मोडनवाग रायबग।

अग्रजोके रायबगस अलग मान जा सकनवाले नय दा बगामें स एक मिगनरा बलका अलख हम कर चुके ह। दूसरा बग था हमारी विद्याओका अध्ययन आरभ करनवाके यूरोपीय पडिनाका बग। अनमें विन्ध्यम जान्स विल्किम कोलरूक टाड प्रिन्सेप मकममऊर फग्यूसन कनिंघम अत्यादि मान जायग। जिस वगके योगाकी दष्टि मकाले जसी छिडली नहा परंतु गहरी और अदार थी। व हमारी विद्याआ और प्रयाका अपनी अध्ययन प्रणागीकी नयी जोर तटस्थ दृष्टिस देखन ग्य अुसस हमें भी नवीन प्रतीत होनवाग दष्टिबिग्ट दष्टिया और वस्तुअ पग हान लगी। जाग चकरर जिस गगस अध्ययन करनकी पद्धति भी दंगी विद्वान अपनात ग्य और विन्सेरी विगानो जस ही सम्मानके पात्र बन। तलग भागरकर आगि अमे हा महारथी मान जायग।

यहा यग जल्लेखनीय है कि यह तीसरा विद्याबल १८५८ में जो तान विवविद्याग्य — कक्ता बम्बडी जोर मगस — स्थापित हुआ अुनक साथ भा जड जाता है। अन विश्वविद्याग्यके द्वारा हमारी प्राचान विद्याओका विगयना पद्धतिस पढानका काम १८५७ के बादक कालमें यवस्थित रूपसे

आरम्भ हुआ। ये विन्वविद्याय अग्नेजा भाषाक द्वारा काम करने लग जिमलिअे स्पष्ट है कि अपन-आप — अय जिमी कागणम नहा ना अम भाषाक माध्यमके हा कागण — पुगना गगत्र नआ वातगामें भरा जान लगा।

३

अग्रजा गजनीति अेक और वातमें भी आग वर रहीं था वह थी अगन रायका धार धार मजबूत और जकछन बनानका वात। वरस्लीने फौजा मर दनर वहां गी राजाआका जपन कजमें कर लिया था। फिर भा अनक राय अलग-अलग थ अग्रजाका राय मार दगम जकचन नहा था। जिमम मचालन और व्यवस्थामें कुछ कमा जरूर रन्ती थी। असे दूर करनरा काम भा अन्तमें डलहीमाक वायकागमें अग्रजान हाथम लिया। जिमम अपन-आप दगा गजाजा आर नवावामें अमनाप और विराध पदा हुआ। विधमी गग गमारे दगमें अपना जड जमाकर हमार गगगयाका नष्ट कर रट ह जिममें हमारी सत्त्वहानि और मानभग है जमा असर गक मानम पर हुआ।

नजा गामन-नातिक अक-ग दूमरे अमर भी विचारन जस माने जायग। ज्या या दगा रायके भाय मद्धक अवमर कम होने गय और नया राय स्थिर हाता गया त्या-न्या मनाकी आवश्यकता घटनी गभी। अग्रज अपना मडा सना रखत थ अमक अगवा गीरायका सामन्त गह्रा पद्धतिम मनाय भरनी की जानी था। य दोना प्रकारकी मनारें कम हा गजा। जिमम जक प्रकारकी बकारा आत्रा जिसम गुम्में राजनातिक रूपान और पिणरागाहाका जमाना आ गया। अग्रजान जह मफ-तापूर्वक दवाया और ग्यकू गम जमान पर जायल हाकर स्वतीमें लग। यापार धधमें भी कपना मरकारवा गायण गम हा हा गया था। जिम प्रकार अग्रजी रायका स्थिरताक आर्थिक परिणाम भा धीर धार जिमाआ नन लग थ।

अग्रज कमचारिमाका वति भारताय प्रजाक प्रति जिम बालमें अच्छी था। बालमें प्रजाक प्रति मरह रसकर काम करनका युग आया वमा जिस रागमें नही था। असा नहा कहा जा सकता कि अग्रज गामकामें दग मान पदा गी हुआ था कि भारताय प्रजामें जा माम्प्रत्ययिक मन्भाव न और हिन्दुआमैं जानपावरा जा जचनाच नाव है वह राजनीतिक क्षयमें विदसी गायका मन्नातिक द्वारा मजबूत रखनमें अुपयागी हा सकता है परन्तु वह

अतना भुव नती था— जुगन जुष हानरा जग्ग भा जग गमय अ \*  
महगुन नहा हुनी हागी।

फिर भा तय यगन नय राजनातिन प्रजाति कारण पत्तिमी  
दुगन विचारान जममें अननन कारण तथा ग्या रागारा ग्याग  
करक जनती अप्रती राय बनानर त्रिभ जगय मय कम्मात कारण गाग  
सौर पर उत्तर भारतमें घानावरण गग्म हुआ और ग्या गनात अप्रती  
रायक गिगक विगन करनका कम्म जगया। जग्गना य रात अग्गनाय  
है कि वगाक वग्गभी दणिण भारत वगग भागाम त्रिभ कम्मत माय  
बन्त सन्ध्याग दयनमें नहा जाया। मिसय जगन विग्गु र्ग। गाग काय  
सकन नती हजा और अप्रज भारतमें त्रिभ गय। त्रिभ अनका नातिमें दा-नान  
बड परिवनन जग्ग हुआ जा ठाक जावनमें अग्गनाय मान जायग।  
जनका मस्य दाते मक्षपमें य था

१ ग्याग उमके मामग्म अक विगप प्रकाररा नग्ग्य-नाति रखी  
जाय यह अप्रती ग्रासन-नातिका मुख्य गूत्र बना। समाज-मुधारक वारमें  
भा यहा नीति पसट का गती।

२ कपनी सरकार न रहकर अग्गना रानीका राय भारतमें  
स्थापित हुआ।

३ पहल गस्थास्त्रका दष्टिन राजा जीर प्रजा ममान थ। विनातकी  
खाजाम दाग्में अममें जा जसमानता आधी वह अत समय नहा था।  
प्रजा तुवारा विगिट न कर द अिस खयात्स मुरक्षाक त्रिभ हवियार  
बन्नाका कानून बनाया गया।

४ यह वचन लिया गया कि नौकरिया आत्मि सबक प्रति ममान भाव  
रखा जायगा।

५ विग्गविद्याग्ग स्थापित किय गय।

६ हिद्द ममग्मानात प्रति भग्नीतिका खग्ग गग्ग हुआ। सतिर विग्गमें  
दोना जानियाके लोग गामिग्ग होकर र्गड थ। यह सतरा फिरन नहा खडा  
हाना चाहिय यह राजनातिना जाग्रत भाग बना।

साष्ट ह कि य मय वात ठाक जावनका भी नती ग्याग्गमें र्ग जानवाणी  
सावित हुआ।

अनका दूसरा पहल भा है जा हमारी स्वराय यात्रामें अक प्ररक  
भावनाके रूपमें काम करता रहा है। वह भावना यह थी कि मिपाहियोका

विनाहू कम्पनवाग घटना राष्ट्रका मुक्तिक लित्र का गरा हिन्दू कान्ति अथवा खुश विद्रोह या और नुसक माय शान्तिका फिर् जायत करनका मनारन जुग दुआ था। विद्रोह हिन्दू-स्वरायका ग्याजामें अक अलग गान्वा निमाण का है। अमुका अन्तर्क मणपमें महा करना ठाक हागा।

४

गम्भा द्वारा राष्ट्रसत्ताका विगम करना और अुम जल्लट र्ना यह शान्तिका अतिहास-प्रसिद्ध पद्धति है। दगा राजाजान अिस दगम कम्पनी मुख्याम्क विद्वद्ध अन्त-अन्त समयमें निम्न निम्न कारणासि और एक विभिन्न भागोंमें घयागक्ति मणठन बनाकर काम किया था। मार कासिम हैर जोर टागू नाना पन्ववाम बगराक प्रयन्नामें अिस प्रकारका चलक मिग्ना है। १८५७ का घटना अिसा प्रकारका अतिम प्रयाग माना जा सकता है। अिसलिजे अुमका भारतक अन्क दामकताका भावना-मलिमें महत्वपूण स्थान रहा है।

जिसा अतिहास प्रसिद्ध पद्धतिका दूमरा अा यह है कि एककी राय सत्ताका पल्लवक लित्र अुसक गनुआका महायता ला जाय। १८५७ में अिस तरका कात्री मन् खाल तौर पर ली गरा हा अमा नहा लगता। परन्तु अिसम पहलक समयमें फ्रेंच डच आदि गगाका मन् लकर दगी राजा और नकाव लोग अपेजकि विद्वद्ध लड थ अिसक अन्तरण मिलत ह। १८५७ क खालक कालमें अिस पद्धतिका जायत अणयोग हुआ है। यद्यपि अिसका समय १९ वा सताक अन्में आता है फिर भी जमी मूल भावनाको १८५७ की घटनात प्ररित किया था यह साफ तौर पर बताया जा सकता है। (अिय विद्रोह सम्बधी वार सावरकर आदि क ग्रथ)

अिसी परम्पराका अन्तिम अुगहरण देना हा ता बहु था मुभापवावका जापानकी सहायताम जाजा हिन्दू फौज खडो करक भारत पर आक्रमण करनका प्रयत्न था।

भारतकी आजागीकी लडाआकी अिस पद्धतिका तनु समय-समय पर देग काल और युगके अनुसार निम्न निम्न रूपमें अन्न तक जारी रहा है। अक अण विमाण करके कहना हा ता अुम जगतकी पुराना राजनीतिमें प्रमाणभूत हिंसाकी पद्धति कहा जा सकता है। १८५७ का घटना अिस



पद्धतिसे पुरस्कर्ताभारा प्ररत भावना-यत्न बनी है। अंग घटनामें हमारे लोकाका अग गमयकी हमारी गस्टृतिरी रगा हान जमी याग रगा था। अग्रज अपना गन्धृति भारतमें फगन रग थ। हमारा प्रजा जगा मोरग हाथ रगा अुगार अनुमार जगसा विराध करने रगी। और अग रग गर वह प्रयत्न सफर माना जायगा। क्यारि यगार लगार धारिग और सामाजिक जावनमें अर्यान् अुनवे र्द्विगत रानि रियात्रामें दगन न दना और गामजारा तस्थ भावम काम करना अंग घटनासे बा रप्रजा रायका नातिमूत्र-सा बन गया। गगाका भी यह पमर आया। नौरग्या वगरामें समानता रवेंग धममें हस्त रप नहा करग अित्यारि बातें रानी विक्रारियाकी घोषणामें बही गआ वह अंग घटनाका तात्कारिक फल कहा जा सकता है।

परन्तु अिमसे हमारी जनता अपन वारेमें अपन रीति रिवाजमें सुधार करनक विषयमें सुस्त या वपरवाह बन गभी और सोता रहा सा बात नही। कारण १८५७ के जमानका कार्तिमें विन्नेह ता अक अग था। असक साथ साथ अक निशाआमें लोक जीवन विकसित हो रहा था। राजा राममोहनरायत जो गगवीज अकेरे हावा बोया था वह फल कर अुगा था और असका पीया तेजीस पनप कर शाया प्रशासार्थे निकारता जा रहा था। ब्रह्मसमाज और अग्रजी गिया — अिन दो जबरत्स्त नभी बाताका हमारे जीवन प्रवाहमें समावग हा जानसे प्रजा जीवनमें नय-नय रग विलन लग थे। मोर तीर पर यह हिसाब लगाया जा सकता है कि वह काल १८५७ के विन्नेहसे लकर १८८५ तकका काल था।

१८५७ से १८८५

[ पुनरुत्थानका अग्रकाल ]

अब दृष्टि रखें ता यह युग स्वानव्य विचारक अत्यन्त आधारभूत यग माना जायगा। अिसमें हुआ मनामयनके नवनीतक रूपमें १८८५ में राष्ट्रीय काग्रमका जम हुआ। य मनामयन हमारे राष्ट्र जीवनक ममा मुख्य अगामों पन्ना हन थ और अुसके मयनकाराकी नामावली हमार अर्वाचान युगन महान राष्ट्रपुरुषाने रूपमें अितिहाममें अकित हुजी है।

अग्रज गामकान अब तरफ हथियारवन्ताका बानून\* बनापर और दूसरी आर अग्रजी विन्वविद्यालय बानुकर अिस यगका प्रारम किया। नये रायकरो और नया राय-मद्धतिकी भा अन्हान स्थापना का। असके साथ साथ अग्रज गामकाने मनमें यह डर भा बठ गया कि भारतीय जनता कब क्या कर बठ यह नहा कहा जा सकता। अिसलिअ असा कहा जा सकता है कि अविन्वाम और भावधानीका मानम नया रायनातिकी भूमिका बन गया।

रचनात्मक सुधारवादका जम

तत्कालीन विद्रोहका अुष मानम र्वा किया गया। अकिन यह सब रासक नीच दना हुआ आगकी तरह हुआ हागा। अुस फिरम भडक अुठनमें ममय लगा। हिमक ज्ञानिका यह मानस १८८५ क युगमें प्रत्यग काम करन लगा था असा नहा मालूम होता।

परन्तु अिस रचनात्मक सुधारवाद कहा जा सकता है असा नव विधान र्वाक विविध क्षत्रामें अुत्पन्न हुआ। अिसक पराक्रमता पुरम्बता अिस

\* अुम ममय हथियार विज्ञानका मदरम आधुनिक नहा बन थ। दाना पगोमें अिस वारमें ममानता थी असा कहा जा सकता है। हथियारवन्ताक बानून द्वारा अग्रजा रायन भारतमें अपना पत्रा जमा किया और लगाके गस्त्रबलको स्थापा रूपमें दबा दिया।

पद्धतिने पुस्तकधारा प्रकाशना-का कर्ता है। अंग घटनामें हमारे लोगोंने अंग मस्यकी हमारी मस्यतिनी रखा जान जैसी बात लगा था। अंग्रेज अपना मस्यति भारतमें फलान लग था। हमारी प्रजा जमा मोरा हाथ लगा जुमान अनुमार जुगता विराध करने लगा। और अंग मस्य वह प्रयत्न सफल माना जायगा। क्याकि यंगर लंगार पामिन और सामाजिक जावनमें अर्थात् अनेके इतिहास राति गियाजामें दंगर न रना और गामकासा तस्य भावग काम करना अंग घटनाने बा अंग्रेजी रायका नीतिमूढ-मा बन गया। लंगारका भी यह पंगर आया। नौरगिया वगरामें समानता रखेग घममें हस्त उप न्ना करग अत्याजि बाते रानी विकारायिकाकी धायणामें कही गआ यह अिस घटनाका ताकाजिक फल कहा जा सकता है।

परन्तु अिससे हमारी जनता अपन बारेमें अपन रीति रिवाजमें सुधार करनेके विषयमें सुस्त या बपरवाह बन गयी और सोता रहा सा बात नहा। कारण १८५७ के जमानकी क्रान्तिमें विन्नेह ता अक अंग था। अुसके साथ साथ जनक दिगाजामें शैव-जीवन विकसित हा रहा था। राजा राममोहनरायण जो यगबीज अकेले हाथा बाया था वह फट कर भुगा था और असका पीथा तजीसे पनप कर शाला प्रशाखार्थे निकालता जा रहा था। ब्रह्मसमाज और अंग्रेजी शिक्षा—अिन दो जबरदस्त नयी बातोंका हमारे जीवन प्रवाहमें समावेश हो जानसे प्रजा जीवनमें नय-नय रंग बिठन लग था। मोर तौर पर यह हिसाब लगाया जा सकता है कि वह काल १८५७ के विन्नेहसे ठकर १८८५ तकका काठ था।

१८५७ से १८८५

[ पुनरुत्थानका अग्र काल ]

अब दृष्टिसे देखें तो यह युग स्वान्ध्र विचारके अन्धका आधारभूत युग माना जायगा। इसमें हुआ मनोमथनके नवनीतके रूपमें १८८५ में राष्ट्रीय कांग्रेसका जन्म हुआ। य मनोमथन हमारे राष्ट्र जीवनके सभी मुख्य अंगोंमें पदा हुआ ये और अन्धके मथनकारोकी नामावली हमारे अर्वाचीन युगके महान राष्ट्रपुरुषोंके रूपमें इतिहासमें जकित हुआ है।

अग्रज गान्धिकाने अब तरफ हथियारबन्दीका कानून\* बनाकर और दूसरी ओर अग्रजी विश्वविद्यालय खोलकर अिम युगका प्रारम्भ किया। नये राज्यकरो और नयी राज्य-पद्धतिकी भी अन्हान स्थापना की। अन्धके साथ साथ अग्रज गान्धिकोके मनमें यह डर भी बढ गया कि भारतीय जनता कब क्या कर बढ यह नहीं कहा जा सकता। इसलिये असा कहा जा सकता है कि अक्विवास और मावधानीका मानस नयी राज्यनीतिकी भूमिका बन गया।

रचनात्मक सुधारवादका जन्म

तत्काल ता विद्रोहका अग्र मानस दबा लिया गया। लकिन यह सब राखके नीचे दबी हुआ आगकी तरह हुआ हागा। असे फिरसे भडक अठनमें समय लगा। हिंसक क्रान्तिका यह मानस १८८५ के युगमें प्रत्यक्ष काम करन लगा था असा नहीं मालूम होता।

परन्तु जिसे रचनात्मक सुधारवाद कहा जा सकता है असा नव विधान गैर विविध क्षत्रोंमें अल्पत्र हुआ। अिमके पराक्रमा पुरस्कर्ता अिण

\* अम समय हथियार विज्ञानकी मददसे आधुनिक नहा बन थ। दाना पशामें अिम वारेमें समानता थी असा कहा जा सकता है। हथियारबन्दीके कानून द्वारा अग्रजी राज्यन भारतमें अपना पजा जमा लिया और लोगके शास्त्रबलका स्थायी रूपमें दबा दिया।

युगके प्रसिद्ध भातिधर ह जिनकी ममप्र विचार-शुद्धिने अिम रणात्मक सुधारवादको जन्म दिया ।

### धमके क्षत्रमें नवनिर्माण

धमक्षत्रमें दंगे ता (१) ब्रह्मसमाजका विराग और प्रायना-समाजका अुत्प (१८६७) (२) आवगमाजका अुत्प (१८७१) तथा विराग (३) धियासाफी और हिंदू धमके प्रति नवदृष्टिका विचार तथा (४) श्री रामकृष्ण परमहंसका जावन-दृष्टि—य सब अिम कालन मन्त्रप्रमाण है ।

अिन सब आन्दोलनमें नया तत्त्व यह था कि व जीवनकी धमदृष्टिका पुनरुद्धार करके अुमके तारा समग्र लोका जावनमें नय बल्का मधार करके क्रान्ति जगानकी राह दल रहे थ । और अुसका लक्षण धयक्त्तिक नही परन्तु सामूहिक और सामाजिक था । वक्त्र स्वग और मागकी परम्परागत दृष्टि गौण बन गयी थी और सामाजिक जीवन भी अक्त्तिकी जिम्मेदारी और सेवाका पात्र है यह भाव मुख्य बन गया था ।

और दूसरी बात यह है कि य आन्दोलन अमुक भागामें पन्ना हानके कारण वहा अनका जोर बढा फिर भी वे स्थानीय नही थ उनके पीछ समस्त भारतीय जनतामें फलनका सकल था ।

अन्वत्ता अुन आन्दोलनमें खास रग या विगप छायावाल भाव थ । जैसे य सब आन्दोलन मुख्यत हिंदू धमस सम्बन्ध रखनवाले हानके कारण हिंदू जातिको — जो बनी सख्यामें थी — स्पश करते थे । परन्तु अुनके पीछ वादके युगामें पदा होनवाला जा धमगत राष्ट्रवात् देला गया वह पानपूवक पदा नही हुआ था । हा आयसमाजको अिसका अपवात् मानना चाहिये । अुसमें अुप्र हिंदूवात् जोर बह भी वेत्वाद था । वनमान हिंदू समाजमें धार्मिक और सामाजिक सुधार करनेके अिजे अुसका जन्म हुआ परन्तु अुसके साथ ही वह जीसाभी और मुसलमान धमके विरुद्ध अक खास कट्टर भाव रखकर पदा हुआ । अुप्र धार्मिक राष्ट्रवात्के अक्षण अुसमें थ जो बात्के युगामें और आज भी राजनीतिक हिंदूवादके पोषक बन हुआ ह ।

प्रायना-समाज ब्रह्मसमाज धियासाफी वगरा आन्दोलनमें जो अक खास बात थी वह नय अपजो युगकी छाया थी । अनका माध्यम अपजी

मराठाको और गुजरातमें श्री महीपतरामन गजराताको अपनाया था। जिस कारण य आन्दोलन नश्री अग्नेजी गिद्धा पाये हुअे लगा तब सीमित रहे, अनुके बाहर अधिक नहा फले।

अिम क्षेत्रके ज्यातिघर जिस प्रकार थ

कगवचन्द्र मेन (१८३८-१८८४)

श्वद्रनाथ टागोर (१८१८-१९०५)

दयानंद सरस्वती (१८२६-१८८०)

रामकृष्ण परमहंस (१८३६-१८८६)

म० गा० रानडे (१८४२-१९०१)

रा० गा० भाडारकर (१८७-१९०५)

श्वम्की (१८३१-१८९१)

कन आल्को (१८३२-१९०७)

अनी वसेट (१८४७-१९३३)

अिम महामपनका असर भारतीय जीवनके मव अगा पर पडा। जनताके अूपरा स्तरके लोगोमें यह भाव जाग्रत हुआ कि अब हमें किमी नय माग पर चलना है। व अपनी अपनी दृष्टि याग्यता और गत्तिक अनुसार नये विचार करने लगे।

आर्थिक क्षत्रमें नया विचार

आर्थिक क्षेत्रमें देखिय। श्री रमेगचन्द्र दत्त दाणभाभा नौरोजी तथा वायमूर्ति रानडे अिम बारेमें तत्सर्गी विचार करने लग। इन श्वाद— हमारे श्गी सम्पत्ति अग्रजा गसननीति द्वारा चूनी जाकर विगयत जा रही है और अमकी अलगा गगा बह रहा है—का विचार अिम युगमें हमारे नताअन सामने रता।

रत्व आभा। परन्तु सती और अका सम्बधी दुख दमनका मिला।

दगके धवे मृतश्राव हो गय है और मवभरा तथा दाद्विध पर करने लग है।

य विचार तान और गभार अध्ममनके फलस्वरूप पन किय गय। और वे आज प्रपके रूपमें पाय जान है। विगय बात ता यह था कि नये जमानके नय अुद्यागका नाव दातवा पराअमी नवनिर्माता भा दगमें पन हुआ। देगका मि-अुद्याग अिमी कालमें दग हुआ। था जमगजा ताता तथा था रणछोडभाभी चरमा वा अिस वाक नामाकित नता है।

अिन विचाराने ही िगि युगणे अन्तमें १८८१ वा अ० भा० अद्योग-परिपद् तथा अथ-गग्गिद् जमी गम्याआरा जम हुआ ।

### समाज-मुधारका क्षत्र

दूसरा अुगनाय क्षत्र गामाजिन है । नय धम विचारन हिंदू गमात्रमें कुछ अन्तर भाव पग किय । जगे जान-मानकी गरीणताकी बराबरी असुयताकी अधामिकता स्त्रा-गम्मानरा भाव विवा अाहिमें मुधारकी दष्टि बगरा । विवेग-गमन विधवा विवाह स्त्री गिगा छआएनरा नाग जात-यातका त्याग — अित्याहि समाज-मुधार िम वाअमें जारा हअ । आयसमाजन अिस क्षत्रमें बहुत बडा काम किया ।

देगणे हिनके बारेमें गाचनवाणे प्रत्यक महापुरुषको अिग युगमें जगा लगा कि हमारी जनतामें नय विचार प्ररित करनकी जरूरत है । य विचार मुख्यत नही अग्रजी विद्याओमे पदा हुआ । परंतु यह अग्वनीय है कि आयसमाजन आहि हिंदू धनक यगस प्ररणा प्राप्त की था । यहा वान रामकृष्ण परमहसकी थी । खास वान यह थी कि दयानद सरस्वतीकी तुअनामें रामकृष्ण परमहस जरा भी गिक्षित नहा थ । अन्के द्वारा हमारे देगकी जनतामें जो परम अदार धमदृष्टि और जीवन भावना थी वह प्रग हुआ । सबधम-नमभाव सना द्वारा साधना स्त्री सम्मान जात-यातके भन्भावाका त्याग अित्यादि अन्क वस्तुअें अिन महापुरुषके जीवनमें सहज गगाकी तरह प्रग हुआ और अन्की प्रवअ गक्ति तथा तेजस्विता अिनना अधिक थी कि नयी गिक्षा पाय हुआ विवेवानद जस पुरुषका अन्हान अपनी ओर खीच लिया । बगाअमें वेगवच सेन देवेद्रनाथ टागोर आहि ब्रह्मसमाजियोने जमानमें भी अिस महागगान अपना प्रवाह बरावर जारी रखा और देगमें सबध जसने जलवा सिचन हान लगा । अिन दोना तलस्पाी प्रवाहाका समाज पर बहुत बडा असर हुआ ।

अद्योग-क्षत्र और अथक्षत्रकी तरह अिस समाज-क्षत्रमें भी १८८५ के बादके युगमें अ भा सामाजिक परिपद जसी सस्याका जम हुआ ।

### विद्याक्षत्र

विद्याके क्षत्रमें भी अल्लेखनीय वातें हो रही थी । विवविद्यालयोंमें अग्रजी तो पढ़ाओ ही जानी थी असके साथ प्राचीन भाषाओका अध्ययन

भी गुरु हुआ। मन्वृत्त फारसा अर्था भाषाओं नर लगन पशुआ जान ग्या। गालियाका पुराना पद्धति और पाठ्यागार्जे पिछला गथा। जिनका असर दक्की भाषाआ पर भा हान ल्या। भाग्य दक्की भाषाआमें अिन प्राचान भाषाआका गलावग और गन्प्रवाग काफी मात्रामें आन ल्य। हुमरी आर अरजा भा बुन पर अमर डाग्न ग्या।

अग्रजा गिन्याम नौकरिया प्राप्त करनका ग्ये जाण पकडन ग्या। लाग विलायन जाकर भी गिन्या प्राप्त करन ल्य।

नया विद्याआजे पडिन भा हान ग्ये। बुनकी नामाबला भी खनी चाहिध। मुख्यत तान जिगकामें—बम्बया मद्राम बगालमें जहा सबप्रथम विन्विद्यालय स्थापित हुआ वहा यं चाज नाम तौर पर खेनका मिन्दा है।

### अतीगढ़ मुस्लिम आबोलन

जिम कालमें मर मयण अहमदखान अक नया प्रकाण गुरु किया। वह था अंगगढ़ केंद्रमें मुस्लिम गिन्याका। १८७ के विन्दाहमें अग्रजाका ममलमाना पर गक हा गया था कि यह जाति गारना है। अग्रजाका जिम नाराजाका दूर बनक लिजे मर मयण अमन खाम तौर पर महनत का। दूसरा आर अहान ममलमानामें पया हुआ प्राचान प्रया-जलाका दूर करक नया अग्रजी गिन्या दामिण करनका प्रयन आरभ किया। आज अमका पण अंगगढ़ विन्विद्यालय रूपमें हम देख रहे ह।

जिम विचार-केंद्रक आमगाम अण भाषा भा विकसित हाता गयी। हाणी अिबवाण गिबगी जाति ग्येक अिम मन्वृत्तमें पाण आन ह। जिम प्रकाणवा अध्यापन और अुमका खोज हाता चाहिये।

यह गही है कि जिम कालमें साम्प्रदायिकताका जहराण खान नहा था परन्तु जरासा जुगभाका खर चलनम अक मूल्य जा द्ये गान्तामें निष्ठा व अन्तमें बगी गतरनाक साबित हुआ, जिम दृष्टिम भा अितियासका यह घटना समझन लायक है। अूम समय ता सर मयणक मनमें बका अपना घमनातिका पिछडा दगावा दूर करनेकी मवाभावा दृष्टि थी। परन्तु बाणक अितियास-कालमें नयी पानीर नय भाव अुसमें आय नय कारण मिण नया नातिया पया हुआ और अनक माय मारा चित्र बण गया। यह बन्तु आज स्वराय निर्माणरे युगमें बका प्रचारम बडा बाधक है। परन्तु य नय बातें १८५७क बाणक युगक प्रन्तुन प्रकरणमें नहा आनी।



परन्तु यह अल्पेत्सीय है कि स्वराय निर्माण-युगकी जन्मबहली अिगी गमय तयार हुअी ।

### राज्यभ्रम

जन्तमें रायभ्रम भी नय अगरेमें आया । मुगलकी दरबारी प्रणालीके बदल नयी अग्रजा ढगकी राजनानि िग्याभी दन लगी । पार्लियामेंट राजनत्र लोकमत जसी कल्पनाअें अुत्पन्न हुअी ।

यह खयाल पदा हुआ कि सरकारी नौकरियामें देगा लाग बगदरीके दर्जे पर जाय ता बडा फायदा हा और अपनी जनताका राजवाज हम अछी तरहसे तथा अधिक समय और प्रमत्त कर सकते ह । नौकरियाने स्वामी करण — जिडियनाजिजान — की माग अक जाग्रत राजनीतिक माग गमझी जान लगी और वह ग्रासकाक समक्ष रखन जसी लगी । अम समय आभी० सी अस हाना अक देगाकाय जसा भा लगता हो ता असमें आश्चय नही ।

देगाभिमानन अक नयी धमभावनाका रूप लिया । लागाका दगाके प्रणालीके वारेमें िग्या देनी चाहिय अग्रजोको असक लिअ गमझाकर गामनमें मुधार करान चाहिय — य विचार नय अग्रजी पल लिख देगाप्रमी यवकामें पदा हअ । ग्रासन पर निगाह रखनके कामको वे देगासवा समझकर अपन आप करन गग । यह सारा चिंतन प्रस्तुत करनके लिअ अलग-अलग मस्याअें अखबार अित्यादि भी स्थापित हान लग । सार यह कि नय अग्रजी राज नीतिक यगका समझनके प्रयत्न अपन-आप गुरु हुअ ।

१८५७ से १८८५क युगकी अिन सब प्रवृत्तियोको समग्र रूपमें रखने हुअ अक चीज सावित होती है । वह यह कि देशमें नवयगका आरभ होनके साथ देगाक ठागान अमका सामना करनक लिअ नयी दृष्टि और नयी गक्तिके बीज भी डाले और वे नव पल्लवित हाकर तेजीसे वृक्षोका रूप लेन गग । १७५७ स १८५७ के यगकी अवाधघी दूर हुअी अकनीतिका अभाव मिट गया और अुसके स्थान पर नयी नीतिकी स्थापना हुअी ।

अिन युगकी खोज और असका अध्ययन अब हमारे देगमें खब होना चाहिय । यल दगाके पुनस्त्यानका अुप काल माना जायगा । अुसक विधायक बड और अमक पुरस्कर्ता लाग हमारा बडी भारी सासकृतिक पूजी ह । नयी पीलाक लिअ असका अध्ययन गक्तिन स्रोतके समान है । बगक अिस अध्ययन और खोजकी दृष्टि शद्ध और सात्त्विक होनी चाहिय ।

## स्वातन्त्र्य-यात्राकी तीसरी पीढ़ी

[ सन् १८८५ स १९२० ]

१८८५ का वष अखिर भारतिय राष्ट्रिय कायमका स्थापनाका वष था । असा माना जा सकना है कि यहा तक पहुचनमें भारतका स्वातन्त्र्य-यात्राकी दो पीढ़िया पूरी हुआ और नयी तामरा पीढ़ी शुरू हुआ ।

दूसरा पाण्डे बुजुर्गान मिलकर यह मस्या स्थापित का । तब अुहें अिम बातका कल्पना भी नहा हागा कि यह मस्या आग चक्कर भारतकी स्वतन्त्रता प्राप्त करनमें सकत हागी । कौम जाति धम भाषा अित्यादिक किमी भा भन्भावके बिना भारतीय और भारत हितचिन्तक विन्शा — खास तोर पर अंग्रेज — अुममें गरीब हा सकत थे । कहा जा सकना है कि नवान भारत क्या हागा अिमका घषण कल्पना कायमक मस्यापक नताजा हाग की गयी था । अिस नया मस्याका यह विचार अुमका अक स्थायी अग रहा है ।

गुप्त २० वर्षोंमें — १८८५ स १९०५ क बाच — अिम मस्याका जो काम हुआ अुनक मुहा तथा पुरस्कर्ताजाका अध्ययन किया जाय ता बढो अिन्वस्य सामशा मि सकना है । अमके अिलसिन्में अक अुल्लगनाय बात य है कि कामकाजका राति-नाति और अुद्देश्योके मन्ब्रमें अिन बीस वर्षोंमें काया काम अलग दृष्टि अयवा स्पष्ट पय पय नहा हुआ य । जा सामाय नाति तथा अुद्देश्य दूसरी पाणाने अितमित किये य ज्यागतार अुन्हाको स्वाकार करके काम किया गया । याहा स्पष्ट भे १९०५ क बाद अिन्मात्री देने लगा । और वह या देगके भावी अन्त्यक मन्ब्रधमें तथा अुम प्राप्त करनेक भागक विषयमें । स्वराज्य-यात्राका तीसरा पाड़ी अिम भे पर खडा हुआ गवनो है ।

अिस भन्का अय था नरम और गरम अयवा अुध तथा अुगर पनी और दृष्टियोंका जम । नरम दन्की अुनियान य अरदा था कि भारत और अिन्गण्डक अिलनमें गानके कयाणका आन्वराय सकत है । गरम दन्का आचार यह अिन्वाम और गपय था कि भारत अक स्वतन्त्र प्राचान राष्ट्र है और अुम अिमा रूपमें अपनी प्रतिष्ठा प्राप्त करना चाहिय । नरम दन्का

यह मायता था कि हमें पार्लियामेंटरा ढंग पर काम करना चाहिये। गरम दलकी यह मायता थी कि अलग ढंग का काम नहीं करना और मन्त्री अित्यादिने स्वतंत्र तरीकासे काममें काम करना राष्ट्रवा जमाना चाहिये। अग्रजी भाषासे काम लेना की रीति गरम दलकी थी। योग्यारी भाषासे काम लेना की रीति गरम दलकी थी।

अब प्रकारके स्पष्ट माग तासरी पीठीमें दे जा सकते हैं। भारत सेवक माननीय श्री गोखले और राष्ट्रवादी पिता ममान आत्ममाय तिलककी अिस पीठीमें जैसे अनक नाम जाड जा सकते हैं।

अिस पीठीका अब विशय जुल्लनाय सद-मामाय अण यह मायता है कि राष्ट्रकी सेवाने लिये जीवनकी दी जा केना चाहिये। मन् भाव अिस युगमें स्पष्ट रूपमें प्रगट हुआ। राजनाति एक सेवाधम है असमें राष्ट्र सेवा है अिस मन्त्र पर यह पीठी खडी हुआ थी। राजनीतिमें भी धम दृष्टिसे काम करना चाहिये अिस प्रकारकी अत्यात्ता राजनीतिक कायमें आजी। त्याग बलिदान स्वायण अित्यादि अदात्त गुण राष्ट्रमन्त्रकोका पायय बनन गये। भारत सेवक समाजकी स्थापना १९०५ में हुआ। साथ साथ राष्ट्रवाका भी अदय हुआ। अग्रजी विन्नी राय जाना चाहिये और असकी जगह स्वरायकी स्थापना हानी चाहिये यह भाव लागामें पदा हान लगा।

असे राजनीतिक रगक अगवा धार्मिक और आत्मात्मिक रग भी अिस पर चरता रहा। बल्कि यह रग असा बुनियाती था जो सारे जाल्नेयकी मूल भूमिकामें रहकर प्ररणा देनवाला था। सामूहिक पुरुषायका आधार धम और आत्मात्मस प्राप्त किया गया। गीता हिंदू जीवन-दृष्टि अियादि गरा अपरोक्त अग्र समाज- और राष्ट्र-धमका समयन करनकी बात सोची जान लगी। अग्रजी शिक्षामें सीखी जानवाली नजी विद्याओके कारण अक प्रकारके शकावाद नूयवाद और नास्तिकवाका जा जोर शिक्षित वर्गमें बन रहा था अुस पर अिस चीजन बहुत अच्छा असर डाला। अिसमें स्वामी विवेकानदका अनावा हिस्सा था। स्वामी अद्वानद लागे लाजपतराय अरविण घाप हर दयाल नाग अनी बसेंट अित्यादि अनक महा विचारकोके नाम भी अुल्लेखनीय हैं। राष्ट्रके अिस नवधमके लिये तथा नय पराक्रमके लिये नया शिक्षण हाना चाहिये अिस विचारसे राष्ट्रीय शिक्षाका मन्त्र भी प्रगट हुआ और अुसके विविध प्रयोग शरु हुए।

किन माधनान काम किया जाय अिस बारेमें हमन ऊपर धाडा विचार किया। गरम दानक साथ जातकबा और विप्लव विचार भा जिस काममें प्रगट हुआ। जिसके दृष्टान्तोके इतिहास पर भी अक विगप प्रकरणके रूपम विचार किया जाना चाहिये।

१९०५ से १९१५-२० तक अिस पीढीका मयन यह तक पहुचा कि कापसस अलग नरम दलकी अक राजनीतिक सस्या नी पदा हुआ और अिस प्रकार दा दठ अतमें व्यवस्थित रूपमें अक-दूसरेस अलग हो गय।

साम्प्रदायिक भान भी अिसी यगमें स्पष्ट रूप पकडा। पृथक साम्प्रदायिक मताधिकार अिस कालकी खोज था। आगाला आदि नताजान अपनी मुस्लिम सस्या स्थापित की। अिससे भारतके सावजनिक विकास जीर स्वराज्य-यानामें अक स्वतंत्र प्रकरण गुरु हुआ। हिन्दी अदू भाषा और लिपि वगराक क्षमडका और हिंदूवादका जम भा अिस युगमें स्पष्ट रूपमें बतया जा सकता है।

अिसस यह स्पष्ट मालूम हान ग्या कि कौमा अकता जेक राष्ट्रीय महाकाय है। और काग्रमका बहु अक बुनियादी काम हो ग्या।

जिस राष्ट्रधमक तत्त्वज्ञानकी अिस काममें चचा हुआ और फनी अुमकी भावना बाक मथ्यत हिंदू धमकी भाषा और भावामें निहित थी। परन्तु यह नहा कहा जा सकता कि अमा जान-बूझकर किया ग्या था असा हाना स्वाभाविक था। फिर भी यह अक अल्लेखनीय बात तो है। हा काग्रमके मच पर सभा जातिया मचधर्मो अर्यान् सञ्ची स्वराज्य धर्मो दृष्टिस अिकन्ठी हानी था और अकताक लिज खूब कोगिश करता था।

असे मन्नापराक्रमी युगका अमर अग्रज गामका पर हाना स्वाभाविक था। राजनीतिक सुधार दायिल हान लग। जिस गाराका गुहभाक का जाता है वमा सूत्र अनुभवमें आन लगा। राष्ट्राय स्वाभिमानका टेम पहुचान काग व्यवहार भी अिस पीढीक अग्रज गामकाको तरफम हाना ग्यनमें आता है। अब अग्रजा राय जीर भारताय जनता आमन-मामन विरादीक रूपमें लड ह यह भाव धीरे धीरे सरकारमें पठना ग्या। गितित लोपाका यह तत्व पान कमजोर पठता ग्या कि दा प्रजाओंका मिगन जीवरोप मकन है। अिसमें गामक भी जान-अनजान कारण बतने ग्य। पर यह सूत्र स्पष्ट हुआ कि भारत अब स्वराज्य मागता है। दगाभिमान गामकित अमके लिअ कल-महन, आदि गुण हवामें दायिल हो गय।

अस काठमें अक बिन-मोरे भेगिमाभी देग जागानरा भुन्य गगनमें आया । भुनन अक वही प्रेरणाका रूप ल लिया । गारे राष्ट्र गाय गार्पा की जा सकती है यह वस्तु स्वाभिमानकी प्रेरणा देनवाला मिद्ध हूभी ।

और १९१४ की लडाआवा असर अग पीड़ीकी आसिरी बडा पटना मानी जायगी । असके पूरा होनक माय ही नभी पीड़ी और नय युगका भी भुन्य होता है । वह चौथी पीड़ी है गांधीजीकी पाड़ी अथवा गांधी युग । अस पीटीन स्वतंत्र हानके त्रिभे स्वराज्य-यात्राकी अन्तिम मजिठ पूरी की और आगकी पीड़ीका स्वतंत्र देग मुपुट किया ।

## ६

## स्वातंत्र्य-यात्राकी चौथी पीड़ी

## १

गांधीजा १९१५ में दक्षिण अफ्रीका छोडकर भारत आय । अम समय यूरोपीय विन्वयुद्ध आरभ हो गया था । भारतमें आकर भुन्होन जो काम हाथमें लिये भुनमें युद्धके लिअ रगहटाकी भरती अल्लेखनीय है । भुमीक साय दूसरे काम भा १९१७ में शरू हुआ । वे थ दो तान अलग अलग सत्याग्रहाके प्रयोग — चपारन खडा अहमदाबादकी मजदूर हडताल वीरमगामकी नाकागनी वगरा । और असके साय स्वातंत्र्य-यात्राकी नभी — हमारे हिसाबस चौथी पीटी गरू हुआ ।

१९१५ या १९२ से गिनें तो यह चौथी पीड़ी तवसे ठेकर १९४८ तककी मानी जायगी । अर्थात् वह पूरी ३ वषकी पीड़ी है जिसक बीच नभा पीटी भी पदा हुनी है । लेकिन जुस नभी पीटीन अस पिता-पीटीके भीतर ही रहकर काम किया है वह असी बलवान अथवा अपनी विन्वय निष्ठा रखनवात्री नहा था कि कोभी नया रास्ता बना सके । अत यह अक सपूण यग हानके कारण अस गांधी-युग कहा जा सकता है ।

अस युगका अतिहास हमारे देगवा अक भव्य और अत्यन्त गौरवपूण प्रकरण है । अमका पूरा मूल्याकन आग आनवाते अतिहासकार कर सर्वेग । भुसका अमर सारे ससारके अतिहास प्रवाह पर हो रहा है । असलिअ यह वस्तु ससारके अतिहासमें भी अक नया पृष्ठ गुरु बनवाली बन गभी है ।

जिसमें विशेषी रायकी गुलामी मिटकर भारतका स्वतंत्र अस्तित्व ही फिरसे जारी नहीं हुआ है बल्कि ममारक अतिहासमें १९ वा सन्निमें जो साम्राज्य-युग और यत्राद्यागवात् आये, उनमें भा उसके फलस्वरूप बड़े परिवर्तन— महान शान्तिक बीज पदा हुआ ह।

जिस शान्तिस अब नय प्रश्न और नया पष्ठ ममारक अतिहासमें गुरु हात ह। उसका पहली घटना भारतकी स्वतंत्रता है। जिनका बड़ी घटना गांधी-यमका पीढ़ीने ज्यो उसमें भाग लिया और उस जम दनमें मुख्य कारण यह पीढ़ी बनी। अब हम स्वराज्य-यात्राक विचारके वाक्यको स तमें याद करके उसकी जिस चौथी पीढ़ीकी मुख्य वाताका विचार करना गुरु करें।

हमन विभिन्न पीढ़ीकाकी जिस प्रकार चर्चा का है

पहली पीढ़ी — राजा राममोहनराय।

दूसरी पीढ़ी — सिपाही विद्रोह और उसके बादका पुनरुत्थान-काल।

तीसरी पीढ़ी — शिक्षित राष्ट्रमवाका युग। उसकी दो शाखाएँ नरम और गरम दल।

आग आनवाली चौथी पीढ़ी — राष्ट्रकी समग्र शक्तिका समन्वय-युग।

२

जिस असेमें दाकी शक्ति प्राप्त करनेके लिये जो प्रयत्न गुरु हुआ, उनके प्रकार मोट तौर पर दखें तो दो थ। उन्हें जिस तरह गिनाया जा सकता है

१ जनताके पान समझ और सुधार तथा विकास बगराका शक्तिके आधार पर आग बदनका प्रयत्न जिस राजा राममोहनराय द्वारा गुरु हुआ कहा जा सकता है।

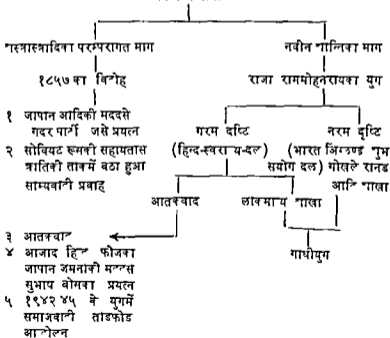
यह प्रकार आग चलकर बधानिक पद्धति बगरा नामासे प्रसिद्ध हुआ जो आग गांधी-युगमें शान्त सयाग्रहकी ह तब विकसित हुआ।

२ शास्त्र और बाहरकी राजनीतिक सहायतास रुठकर स्वतंत्रता प्राप्त करनेका प्रयत्न। जिस प्रयत्नका अतिहास १७५७ स १८५७ तककी अब दाता-नीका अतिहास है। १८५७ के बाद हयियारवन्नी हाने पर भी यह किसी न विमा रूपमें जारी रहा है और उसका प्रवाह ठठ १९४७ तक चला पाया जाता है।

पहला प्रकार नया है दूगग प्रकार मानव-ममात्रक अतिनाग जिना पुराना है। पहल प्रकारका रीति-नीति अर्वाचीन है। य हमन अग्रेज प्रजाक अतिहास और असने मान्दियग तथा अुत्तान भारतमें जा गगन-नत्र चलाया असक अनुभवस गीगा गीगकर हम अुग अुपयोगमें एत एग और अपनात भी गय। जिग रीति-नीतिना कधानित्र रीति-नीति कर्ष्य या ता अक-गाहा कहिय अुसका अलग स्वरूप या भिन्न प्रकार माना जाता है अगगा कारण यह है कि अममें जनताकी गक्ति विगेह गस्त्रास्त्र अयवा राजनानिक दावपेचके माग पर नही परन्तु अमका वडिगक्ति मस्त्रारिता अकता वगरा गुणा द्वारा काम करती है। अिममें गांधीजान सत्याग्रहका नया हथियार अुसक कलगाक रूपमें जाड दिया।

स्वातन्त्र्य-यात्राके प्रकार और विकास-मदधी अिस विचारको न अपमें अिस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है

### स्वातन्त्र्य-यात्रा



३

पाठक दखेंगे कि वगवृक्षमें गरम और नरम दाना दाना गांधी-युगमें सम्मिलित बताया गया है। अर्थात् गांधीजी काकमाय और राम-गांधीजी दाना पीड़ितोंके अन्तर्गतकारा थे। गांधीजी अपना राजनीतिक परिचय जिस तरह दिया है कि गांधी भरे राजनीतिक गुरु हैं। और यदि अिन दा दानाके बाव बाबा मन् भद्र हा ता वह यह है कि गांधी गांधी यह मानता था कि भारत और अिन्का मयाग बाभरत्त गम वस्तु है तिन्का-बाबा यह मानती था कि भारत स्वतंत्र राष्ट्र है और अमका स्वराज्य स्वतंत्र हा हो सकता है। गांधीजी भारतमें १९१५ में आय तब व पहला मायनावाये थे फिर भी व गांधी गांधीकी राजनीतिक राति-नातिक अलावा मत्याग्रहके तरावमें विन्वाम रवत थ और दक्षिण अफाकामें अुम गस्त्रका मफन् प्रयाग करक भारतमें आय थ। गांधीजीके व्यक्तित्व और प्रतिभाका यह अग गांधी-राजनीतिमें मिलकर अुनक भारत सबक समाजक द्वारा काम करनेमें बाधक हुआ। दूसरी आर जिस चीजमें तिन्का राजनीतिकी गांधीका अपना गरम राजनीतिक कारण नवानता जम्र लगा फिर भा अिमकी अुग्रताक कारण अुन्हें अिसमें सहघर्षीपन और भमानता मागूम हुआ। अिम प्रकार गांधी-युगके प्रारम्भमें गांधीजीमें गरम और नरम दाना दानाके समन्वय दिवाशा गेता है।

अिनना हा नहा, दाना दानाकी पद्धतिया अकक्ष्य हाकर अक अकड काय पद्धतिक रूपमें अुनक युगमें जम लता ह। अिस पद्धतिक लिज जिम प्रकारका ननुव जम्री था वह भी गांधीजीका जीवन प्रतिभामें मौजूद था।

अिसम दानाकी राष्ट्रीय राजनीतिमें नय ही गम अकदृष्टि विविध प्रयत्नोंका अकवाचयता और अकनाति-नतृत्व वगग अपन-आप पना हान गये। अब स्वराज्य प्राप्ति समस्त जनताका पुन्पाय बन जाती है जनताक अग-अपागामें गहरे पठ कर व अपना अमर करन लगता है। या कहिये कि दाम्प्राप्तिका परम्परागत हिमक माग छाडकर प्रजा नवान गान्ति-अहिमाके भागका प्रयोग पूरा तरह आजमानका तमार हा जाता है। अिसाति-अे गांधीजीका अमर जगनकी व्यापक राजनीति पर जा हुआ वह हा सका है। श्री गांधीकेन गांधीजीका वणन करन हुआ कहा था कि अिम पुन्पमें भारतकी मस्तुति अपनी पूषकताका पड़चा हुआ है। गांधीजी अपन गरम मन् १९१५ स पहले किय हुआ अिम वणनका पूरा तरह सच्चा साबित करके बजा दन है। कबल



राजनातिमें हा नहा। राष्ट्रका जनताक समस्त ज्ञानमें नया प्रकाश नया दृष्टि नया सापेक्षता और नया गहन अति यत्नमें प्रकाश हुआ है। नागरिक स्वातन्त्र्य प्राप्ति जनताक अमर मंत्र सिद्धांतमें हुआ बल-मपहक कारण मन्त्र हा मंत्र है और असा हानन भारतक अतिशयान अक नया पन्ना मंत्र है।

दूरक आलेखमें पाठकान त्या मंत्र कि परम्परागत हिमानागत प्रवाह भा समस्त अनुमान नय नय रूप लकर १८९७ में ठ १ ४५ तक जारी रहा है। अति प्रवाहका भा अपना पाठिया और दृष्टिया रहा है। स्वातन्त्र्य-यात्राक अतिहासमें जनता ना अक अलग प्रकार ह। ना प्रकाश है कि अम प्रणालिका अन्तमें अय नहा मिला यद्यपि अममें लाग और बलिदान पूर्वक त्याका नवामें स्वागत करतवाले और स्वातन्त्र्य-यात्रिका उत्था रत्न वाले दानक य।

जातकवा और नाडनाका अतिता नी अममें सिद्धांत गया है क्योंकि अतका प्रकार सिद्धांतकी परम्परागत विचार-मंडलिका या।

गांधी-युगका मुख्य लक्षण और नारा यात्रामें अमका स्वातन्त्र्य दानक वा अम अमका मुख्य मुख्य बातें हम अगले प्रकरणमें लेंगे।

## ७

## गांधी-युगकी स्थापना

[स्वराज-यात्राकी १९१५ से १९३० तककी मजिल]

## १

गांधी-युगका आरंभ पहले विषयद्वारे दरमियान और अमक व्यापक प्रभाव तथा पृष्ठभूमिमें हुआ। गांधीजी जब १९१५ में भारत आय तब युद्ध छिड़ चुका था। अममें भारतका विलायतके पक्षमें जाड़ दिया गया था।

गांधीजी अम समय ब्रिटिश राज्यक गढ़ हनुआमें आस्था रखतवाले य। अम यद्धमें गरीब हाकर भारतका अपनी बफालरी बनाना चाहिये अति विचारन अन्तान फौजा भरताका काम हापमें लिया था। माय ही सरकारन लाकमाय अम लाकप्रिय ननाकी अवहेलना करके अतका अपमान किया और अन्हे यद्ध-परिपक्षमें नहा बलाया मंत्र अममें विरुद्ध भी वे सरकारन लड य। अक तरफ फौजा भरतीका काम हापमें रखवाले गांधीजी

दूसरी तरफ राष्ट्रके सबभाय नेताके अपमानको राष्ट्रीय अपमान समझकर असका विराध करते ह यह जुनकी काय-पद्धति और प्रतिभाकी विस्मयताका जीता जागता नमना माना जायगा।

यत् युद्ध यूरोपक राष्ट्राके बीच जीपनिवर्गिक झगडाकी लगभग सौ वर्षकी शान्तिक वात् छिडा था। १८-१९वा सदामें यूरोपक राष्ट्रान पिछड हुआ दगाका दुनियाका आपसमें बटवारा कर लिया था। असमें जमना और एस जैसे दंग हिस्सतार नहीं थ। पहल विश्वयुद्धमें जमना जुम बटवारेमें हिस्सा चाहता हुआ आगे जाया और असन अिष्णका चुनौती था।

विष्णी गामकाक विरुद्ध खड होनवाल जमनाक प्रति अक हत् नक महा नुभृतिकी भावना भारतके लोगामें थी। नपोलियनक जमानम जमे टीपू सुत्तानन जमतीके साथ साठ-भाठ करके अग्रजोका छकानका विचार किया था, वसा कुछ अस बीसवी सतीमें सभव नहीं था। फिर भी कुछ गुप्त प्रवृत्तिया १८५७ की छायामें होती ही रहती थी और अुन पर सरकारकी नजर बराबर रहती थी। भारतके गरम दलकी राजनीति पर भी असकी निगाह थी क्नाकि व अग्रजोका भारतसे निकालकर स्वतंत्र स्वराज्य चाहनवाल थ।

२

१९१५ के अस असमें भारतमें जो प्रमख राजनातिक आन्दोलन हुआ वह 'हामरूल का था। आयरलण्डमें मकिनके िजे चल रहा आन्दोलन असका प्ररक था। श्रीमती बेनी बसेंट असकी प्रमुख नेता थी। तिल्क महाराजने दूसरा स्वतंत्र 'होमरूल आग' स्थापित का थी। अना बसेंटन अक कानूनका समीक्षा तयार करके पार्लियामेंटमें पस करानवा ब्यवस्था तक अपन आन्दोलनको पहुंचा दिया था। सरकारन अन्हें नजरबन् भी कर दिया था जिमक विरुद्ध गांधीजान अयन्त अुध जाबाज जुठाओ थी। ताकभायका भी सरकार सता रहा थी।

अिमी अमेंमें अग्रज सरकारन राजनीतिक मुधारका नया संस्करण प्रकाशित करना आरभ कर लिया था। १९०९ क मारच मिष्ठा मुधारके दम बप वात् अठाया जानवाला नया क्म तयार हा गया था। माटग्यु चेम्नफोडन असे सोच निवाला था। नरम विचाराका राजनीतिक दल अिससे कुछ मतुष् हो गया था। वह अिससे अपनाका तयार था जब कि गरम ात् अुम नापसन् करता था।

असि स्थितिमें गन् १९१९ में अमृतगर कांप्रग हुअी। अुगमें पत्नी वार गांधीजीका वायकुगलना दंगरी गवग बडा राजनातिव शम्प्याग गगनमें आसी। दंगका गरम और नरम दाना दुष्टियाका अकीकरण करव गमचित वाय-वद्वति निर्माण करनकी गांधीजीकी प्रतिभा न दंगन हुअ। ग दउ आगगमें लडकर क्षीण हाने रहते थ यह अक दु गन् यस्तु गकी राजनातिमें कुछ असैसे पन्ा हो गअी थी। वह असि युगमें गांधीजीन ननृतस दूर ही नही हा गअी बल्कि दोना दन् मित्रकर अक गमचित गकित्वा ग्प ग्न लग। परन्तु अितिहासका प्रवाह दंगकी नावका दूसरी तरफ उ जा रहा था।

## ३

१९१८ में विन्वयुद्ध बन् हुआ। अुगरे बान् दा घटनायें असी हुअी जिनके कारण भारतका राष्ट्रीय राजनीति अक नअी ही भूमिका पर गुरू हुअी १ यरोपमें ग्विलाफनका अत २ भारत-सरकार द्वारा नियुक्त रौलट कमेटा।

खिलाफतके सम्बन्धमें अग्रज सरकारन भारतक मसत्मानाको जो वचन दिया था अुसका भग होनसे अनकी भावनाओका भारी आघात पडूचा। असिलिअ वे अग्रज सरकारस बहुत चिन् गय।

रौलट कमेटा यह जाच करनके लिअ नियुक्त की गअी था कि भारतमें युद्धकालमें राजद्रोही हल्चरें हो रही थी या नही। असि कमेटीन यह रिपाट दी कि १८५७ की तरह तो नही फिर भी अक तरहमे सगठित विगाह करनक पडयत्र भारतमें हो रह थ और यह सिफारिश की कि असि सबको दवानक लिअ अक बडा कानून बनाना चाहिय। असि सिफारिशक आधार पर अक कानून भी बडी धारासभामें पन् हुआ।

१८५७ की स्थितिके बान् हदियारबन्दीका जसा ब्यवस्थित कन्म अठाया गया जसीसे मिन्ता जुन्ता यह बदम कहा जायगा। परन्तु १८५७ क बाद राष्ट्रको दबा देनके लिअ जसा प्रयत्न हो सका वसा असि समय नहा हो सका। असिका कारण गांधीजीका ननृत्व था यह स्पष्ट देखा जा सकता है।

## ४

विन्वयुद्ध उडने समय भारतके लोगोको दिय गय वचनोका अनादर आ असा गंगाका महसूस हुआ। यह भारतक स्वाभिमान पर गहरा प्रहार

था। खिलाफत सम्बन्धमें भारतीय जनताको भारतीय मुसलमानोंका साथ दाना चाहिये यह सब जातिवादी बीच भाजीचारेका ऋण है यह कहकर गांधीजीने अहिंसक तथा हथियार दानक सामन पन किया।

रोल्डक का कानूनका विराध करनक जिने धारामनाक वधानिक प्रयत्न विफल रहे। गांधीजीने अमक विराधमें अमग अपाय गुन किय तथा हठताल और कानूनका सविनय भंग करनका धामना का।

अिन सब चात्रामें दंगका समस्त जनताका पमनका विराध गत्य मिल गया और सहज हा सार दंगन यह नया माधन हापमें ल गिया। सरकारका यह नती ही चीज न्यनका मिया। वह अमृतमगमें जलियावांग बागक न्याकाड जम कर काम कर वडा। जिम अयमानका जाच करनक लिज काग्रन जाच-बमेग नियक्त का सरकारका बनाती हुओ हनर कमटाका बहिष्कार किया गया। जाच-बमेगमें गांधीजीने वडा महत्वका भाग अंग किया। सार यह कि भारतका राजनीति जवदम नती हा भूमिका पर चनी गयी।

#### ५

भारतकी राजनीति अिस कालमें जमा रूप गिया अुमन नया भारत — नआ सकिन हा पन हो गजा। गांधीजी अग्रज सरकारक प्रति अब थदालु नहीं रहे और अिन प्रकार नरम दलका पून थदालु भारतक राजनीतिक गक-मानसमें अन हा गया। अब अमहत्याग और सविनय कानून भंग अथवा सत्याग्रहका माधन दशन अपनाया। १९२० में नागपुर काग्रसन अिन वह परिवर्तन पर अपना मुहर गगाओ। १९२१ में अहमदाबादमें काग्रसका अधिवगन हुआ जिसमें पक्का बुनियात पर नय यगका निमाण आरभ हुआ। कौमी अंकता मजतून हाती जान पडी। हा अम वपन था जिन्ना काग्रमम हमाक लिज अलग हा गये।

१९१६ में माननाथ माधु और १९२० में नेकपाय तिलक स्वगवासी हुआ। नरम दल अिन कालमें काग्रमम अलग हा गया और १९१८ में अमन अपना स्वतंत्र लिबरल फेडरेगन' स्थापित कर लिया। अ० भा० समाज परिषद् तथा अद्याग परिषद् अपन कती वपोंके अतिहासक बाद अिस काग्रमें मनाक लिजे बल हा गर्नी। १९०८का मूल काग्रममें वडा सगडा कर बनवाल का अलग ल अिन प्रकार दम वामें अक-भूमरम जुग हुआ।

नरम विचारक जिमायता अग्न हारर सरकारने तने सुधारक अगुमार विधान-सभामें प्रविष्ट हुअ जीर मत्रा बा पांचवेग त्रिममें गराव नहीं हुआ। जसा गला लाजपतरायन अरु जगत कहा था सरकारने माय जगत्पाग और स्वराय प्राप्तिकर त्रि लडाओ भारतमाय राजनातिका गती चारहणठो बन गयी। अिम प्रकार रीउट कमेटीकी रिपाठक आधार पर सरकारने राष्ट्रको दबा देनका प्रयत्न किया त्रिन जगता अुत्ता हा परिणाम आया। कारण स्पष्ट है जनताके पाम जा नया गस्त्र आया जमन अममें नया बल-संचार किया। भारतका राजनीतिक गेव-मानम नय हा माग पर अग्रसर हुआ।

सरकार और जनताने लिअ यह नओ ही घटना थी। गेनाने त्रिओ अिस बारेमें अपन अपन खय और वृत्तिके सम्वधमें सोचकर अुह पक्का करनेका सवाउ पदा होता था। यह काम अगले दशकमें हुआ।

## ६

अग्रज सरकारके पास डूमरा क्या रास्ता होता? अक आर असन राजनीतिक सुधारका अमठमें जाकर प्रान्तोंमें द्वय शासनवाओ धारामभाअें शुरू की। भारतीयोंको ओहूने दनकी नीति यहां तक पहुंचाओ गओ कि ओ सत्यद्वप्रसन्न मिहाका लाड बनाया गया सहायक भारत-मत्री बनाया गया और गवनर भी बनाया गया। डूमरी ओर सरकारन दमन गुरू किया। १९२१-२२ में आम जउ भरतीका प्रयोग गुरू हुआ। लागान अिसके द्वारा नवीन साहस प्राप्त कूर लिया। जउ जाना तीध-यात्राक समान पवित्र माना जाने उगा और वह राष्ट्रप्रमका चिह्न बन गया। अिससे जागोकी त्रिमत् टटी नहा बल्कि बढ़ी। सरकारन मोना देवकर अतमें गांधीजीको पकड किया और राजद्रीहक अभियोगमें जउ भज किया। १९२४में वे बीमारीके कारण छूट।

काग्रसमें स्वराय-दलका अुदय हुआ। कुछ वर्गोंको लगा कि विधान सभाओंमें जाकर भी काम करना चाहिये। अिस प्रान पर काग्रसमें दो भाग होनकी नौबत आओ। गांधीजीन अिस मुसीबतको टाल दिया और देगकी स्वराय-यात्रामें पडनवाली फटसे देगकी बचा लिया। परंतु अुन्होन अपनी काय-पद्धतिके अनुसार काम चालू रखा देशके लिजे नया माग बनाना शुरू कर दिया और असका विकास किया।

विधान-सभाका काम ता कूठ हा गग कर सकत थे। परन्तु सारी जनता क्या करे? सरकारक साथ अमन्याय कर यह ठाक है परन्तु अमन्यायमें ता अनन हा जागम मत्याग माधना चाण्यि नहा ता अमका अमन्याय व्यथ हागा। अिम मत्यागक माग क्या हान चाण्यि? गांधीजान अनुभूता रचनात्मक कार्यक्रमको श्राज करक अिन प्रस्ताका अुत्तर दिया।

ये चार रचनात्मक काय अिस प्रकार थ

- १ अमन्यायता निवारण
- २ शान्ति
- ३ कौमी अेकता और
- ४ राष्ट्रीय गिया।

य चार दावार्ने चुन कर अुन्हान जनताक मत्यागका अिभारत महा की। समाज-मुधार और स्वदगी अघान घघाका अद्विक नाम पर जो फुक्कर और अलग अलग विचार हुआ करत थ अन्हें गांधीजान अिम प्रकार अक राष्ट्रीय आह्वान और स्वरायका पुकारका अगत रूप गिया। जा जनता गान्धिक साधनमें गठना चाहे, अम अगता मुधार या आत्मगुद्धि अपन हा कल्प करनी चाहिय अिमम वह अम बरका मगठन कर सकगा अिमक अाचार पर अपन-आप स्वराज प्राप्त करन गगता। मह सिद्धान्त दगा मिला। और अमका अनुसरण करक दगाकी मारा जनता—अमक समी अग—स्वराय-यात्रामें अपन गगन गराक हा मक और अपना हिम्या दे मक अमी प्रबल सभावनावागी श्राजना भारताय जनताका मिला।

रचनात्मक कार्यक्रम और पालियामण्टरी कार्यक्रम—अम जो ग भाग श्राज पाय जाने ह अुनका प्रारम जिमी कालमें हुआ। अमिल भागनाय चरखा सघका स्थापना हुआ। राष्ट्रीय विद्यापाठ स्थापित हुआ। अमन्यायता निवारणक अिन्न मस्यात्रें बनन गगा। दूसरा अाग विधान-सभाशामें स्वराय दग भा काम कर रहा था। अिन दाना गांधीजान अेक सूत्रमें बाधकर बाधेन अुनका अधिपत्य अपन हाथमें गने और गगा जा काल अमी मक गति कायलके मक परम अपनाआ गभा। अता करक कायल अन्त गविनागी ही नहा बना अिक भागतीकी ममस्त जनताका प्रतिनिधित्व भा करन लगी, और लगा पर यह छाप पडनी गभा कि राष्ट्रीय भागनका अथ ह अुनकी कायेत।

लगभग दस ही वर्षों में जय श्री घटनाओं का यह भी चरम न होकर बहुत पारी हो गयी बल्कि जगतको भी गाठम हा गयी।

७

य दो घटनाओं था १ बारडागीरा सत्याग्रह २ गांधीजन कर्मगतना बहिष्कार और १९१९ से आगे नय राजनीतिक सुधारों पर विचार।

१९२४ से १९२६ तकमें गांधीजीन जो काम हायमें स्थि जुनग कुछ राजनीतिक वर्गोंमें और बाहरके दंगामें अक जगा सपाल पना हुआ कि गांधीजी निरे ससार-सुधारक जमे बन गय ह अनुकी आग माना बज गजा है। अिम भ्रमको मिटानवाली घटना थी बारडागीका भक्तिर-वृद्धि के विरुद्ध किया गया सत्याग्रह। सच पूछा जाय ता अिससे दंगको अिस घानना परिचय मिग कि लोकमतका महत्व स्थापित करनके अिस सत्याग्रहना यावहारिक अपाय जनताके पास है। सत्याग्रह क्या चीज है यह १९२१-२२ में लागवा येपनको नहा मिला था क्याकि चौराचौरा अित्यादिकी घटनाओं देगकर गांधीजीन अम चीजका राक दिया था। वह जब बारडाली सत्याग्रहमें देखनका मिग। विधान-सभाकी गतिन दिखाकर काम करनके लिअ अत्मुक स्वराय-दलन भी अिस काममें गय बटाया था। परंतु अिसमें वह सफल नही हुआ और गांधीजीका तरीका सफल हुआ। अिम चीजन बधानिक पद्धतिकी मर्यादा और सत्याग्रही पद्धतिकी यापकता सिद्ध करने अिसा दी जसी १९१९-२० में रीयत कानूनके विरोधके समय साबित हुजी थी। असा समविय कि अक दंगके बाद नय रूपमें फिर क्रांतिकारी परिस्थिति पना हुआ और गांधीजीन अस परिस्थितिके द्वारा अजी तरह सभाकर राष्ट्रकी समग्र गतिनको जकीरुन किया और राष्ट्रक मध्य मोरच पर अटठ खडा कर दिया।

विधान-सभामें काम करनवाके स्वराय-दलन अिस समय जो अल्लख नीय कम्म जगाया वह था अक निवेदन तयार करना जिम असके नता स्व० मोनागल नरू परम नरू रिपाट कहते ह। भारतको स्वराय दनके अिस १९१९ के वाट दस वर्षमें सुधारोकी जो नयी विस्त आनवाणी है अुम समय सब दठ मिशर काभी अक विचार पेश करे ता अच्छा हागा अिस विचारसे अक भवदत् सम्मेलन बुलाया गया और अुसकी तरफसे यह निवेदन तयार हुआ। राजनीतिक विचारके विकासमें यह निवेदन अक महत्वका मागस्तम्भ माना गया। साम्प्रगायिक अवताकी दिशामें अिस पद्धतिस १९१९

में जा लखनऊ समझौता हुआ था असम मित्रों ने लखनऊ में बहू का ब्यापार भी । परन्तु अमा लखनऊ है कि जिस वार भी बुन्देलखण और हा विचय कर लिया था । मुस्लिम नेताओं को अपने सम्बन्धों में नरक-रिपाट पर विचार करके असम बनकर मन नही प्रकृत किया । दूसरा आर सखारन जिनमें भा कठिन स्थिति पत्र कर दी जिसमें म नय हा लखनऊ प्रान्ति अल्पम हुआ ।

८

असमभरक जलियावाला बागस मित्रों-जल्ना असमानजनक घटना जा हुआ वह था माझिमन कमाणामें कवर गाराका निरकित और भारतमाय जनताका अवहेलना । जिस कमाणामें बहिष्कार किया गया । मुस्लिम लख नरम ल मय कात्री जिनमें वेकमन म । गान बग लखनऊ में बहिष्कार चलाया । जनताक प्रथम काटिक नता लख गजपतरायका जिसमें बहिष्कार हुआ जिसको चिनगारी जागे चकर था भारतमिह और अन्तर् मित्रों प्रकरणमें प्रग हुआ ।

जोपनिवर्तिक स्वराय — डामिनियन स्टेटम — का जाण लकर नय मुधारा पर जा विचार किया जा रहा था अस पर विचार करनेकी कायसन तयारा बताया । अश्रेज भारत-मया गण वकनहून जवाब दिया कि जिस आण पर ता भारतमें कमाका असम ना रहा है । अश्रेजके गमच्छापूण हुनुक मवधमें गांधीका अनिम भ्रम जिनमें दूर हा गया और १९००-२० में लाहौरमें कायसन अपना कर्तव्य-अधिवाणका ध्यय बरकर पूरा स्वराय का ध्यय सत्रमम्मतिम निदिचन किया । जिन प्रकार भारतका नौजवान वग और सत्रुप वग दाना नक दुअ । ५० मात्राण नहून कायमका ननुब दूमर गान थी जवाहर्लाल नेहरूका मीठा । १९२० में आरम्भ का गज मात्रा दूमर लखमें अना मन्त्र मजिद तय करके पूरा स्वरायका आमिरी पाण पार करनेका आर अग्रसर हुआ । गहोका स्वातन्त्र्य प्रस्ताव स्वराय मात्राका पहान माणण बना । जसन भारतमाय जनताका १६ जनवरी १९३० क दिन गण्य लखिमी जिनके आधार पर गान अनिम निाय की अना लडात्री छेग । यह प्रस्ताव आज ना पा करन उमा है

हम मानते हैं कि बिना भा अय प्रजाका भाति भारतीय जनताका अपना धामन आप कर्नका, अपना महनकरा पर भागनका और सामाय मुन-शान्तिमें रहनक साधन प्राप्त करनका तथा असा



करना अपना सम्पूर्ण विनाश करना जमगिद्ध अधिपति है। हम यह मानते हैं कि काका भाग्य विगी प्रजापति अथवा जमगिद्ध अधिपति का छानकर अम पर जल्म करे तो अम प्रजापति या राय बन्धनता जयवा अमता नाग तत्र करना जमगिद्ध अधिपति है। भारतमें ब्रिटिश सरकार भारतीय जनता से स्वातंत्र्यवादी अपहरण नहीं कर लिया है परन्तु देश बराना गरीबाका उमकर अपना राय बन्धनता और देशका आर्थिक राजनीतिक सांस्कृतिक और जाध्यात्मिक मयाताप कर डाला है। अतएव हम यह मानते हैं कि अब भारतीय जनताका अिस रायके साथ सम्बन्ध विच्छेद करके पूण स्वराय अथवा मपूण स्वातंत्र्य रना हा हागा।

अब यह देखें कि देशकी जाधिक बरवादी कितनी दृजी है। हमसे जितना कर बमूल लिया जाता है उसका तुलना हमारा जायम करन पर वह बूनैस बहुत बाहर मागूम हाता है। हमारा सरकारी जाय सात पस रोज है और हम जो भारी कर चुकाते ह अमग २० प्रतिगत भूमिकरके रूपमें देते ह जो गरीब किसानका चकाना पडता है। और तीन प्रतिगत नमक-करके रूपमें देते ह यह कर भी गरीबाका हा पेटमें से निकलता है।

कनाडी जस गह-अद्योग देहातमें नष्ट हो गय ह जिनके फलस्वरूप कृषक-वगको वषमें कमसे कम चार महीन बकार रहना पडता है। कारीगरीके नागके कारण अुनकी बुद्धि जड हा गभी है और जो जद्योग नष्ट हो गय ह अनक स्थान पर अय काका अद्योग दूसरे देशका तरह यहा जारी नहीं रिय गय ह।

जकात और पसेके सम्बन्धमें असा प्रपच रचा गया है कि किसानाना वोग बन्ता ही गया है। विनायतमें बना हुआ माग ही मक्ष्यत हमारे देशमें आयात हाता है। जकातका प्रबन्ध देख ता पता चलागा कि ब्रिटिश माग पर कमसे कम जकान है। अिसके जगवा जकातसे मिन्नवाग कर गरीबाका भार घटानके काममें नहीं आता परन्तु जत्यत सर्विला शामन-तत्र चकानके लिए अुसका अुपयाग होता है। विदेशी विनिमयकी दर अिससे भी ज्यादा मनमानी है। असम असी युक्तिसे काम लिया जाता है कि परिणाम-स्वरूप कराडा रूपय देशमें लिचकर बाहर चले जाते ह।

राजनैतिक दृष्टि से भारतका स्थिति आज ब्रिटिश मतांक अज्ञान जसा हो गया है वता पट्ट बना नहीं था। मुधारके नामसे जा भाहूर है अतः जनताका मच्चा रायमत्ता विलकुल नहा मिला। विन्गी हुकमनक आण हमारे बडम बड आत्माका भी मिर चुकाना पत्ता है। स्वतन्त्रतापूर्वक विचार प्रगण करन और समाजे करनक अधिकार हमसे छान लिय गय है हमार आवायवामे से बहनाका निर्वामन भ्रमणना पड रहा है और अह मेण आनका आजाग नहा है। सामन चलानकी गतिनका हमसे पूरा तरह ह्रास हा गया है और आम गणके लिज बारकुन पल्ल-मटवारा या मुनाम-भामानक मिवा और काजी नोकरा नहा रही।

मस्त्रनिकी दृष्टि से ब्रिटिश राज्यक अमर पर विचार कर। हमार दगाका मस्त्रनिकी कमा था जिसका यान मुलाकर नजी गिद्वान हमें पश्चिमका आर मेवतवाग बना दिया है। और हमें तागाम ही जिन प्रकारका मिगी है कि अपनी बडिया अमरनक बजाय हमें अठा लगन ग्या ह।

आध्यात्मिक दृष्टि से देखें तो जिन राज्यन जवरने हमसे हथियार छान गिय है। जिनसे हम नाम बन गय है और हमार दगमें विन्गी मना अड्डा जमाकर पडा है। अमने अयाय और अत्याचारका विराध करनका हमारा गतिनका नाग कर दिया है और हमसे अमा भागता भर ना है जिनसे हम यह मानने ग्य ह कि विन्गीयकि विना हम अपना आपना व्यवहार नहा कर सकन और विन्गी आगके हमसे अपना बचाव नहा कर सकन अिनता हा नहा चार ठाकू और हुष्ट मनुष्यामि अपन घर और परिवारकी रना भी हम नहीं कर सकन।

जिस राज्यन हमार दगाका जमा चनुमुवा मयानाग कर डाग है उस राज्यन मानहन और ज्वाग ग्त्वमें हम मनुष्य और जीविका अपराध करग अमा हमारा स्पष्ट मत है। परन्तु हम यह भी मानन ह कि स्वतन्त्र प्राप्तिका हमारा अरन कारणर तराका हिंसाका नहा परन्तु अहिंसाका है। जिसलिज हम यथागति अपना जिल्लात हानवाग ब्रिटिश सरकारक मायका महयाम छाडकर जिन राज्यसे मुक्त हानका हमारा करण और मविनय बानून भग (जिनमें कर न

देनका समावेग हाता है) क जिन्हे भी प्यारा करेंग। में विन्यास है कि अंग रायका हम स्वच्छामे जा मन्ने ह यह यि वागमे ले तें और सरसारी आरग अत्तजनना अरिक्मे अधिक कारण मिलन पर भी हिगा किय बिना अम कर दना बन् कर दें तो अंग अमानु पिक रायका हम अन्त्य अत्त कर गरेंग।

अिमन्त्रि हम जाज मन्चे ह्दयस प्रनिता करते ९ कि पूग स्वराय स्यापित करनने लिअ काप्रग ममय गमय पर जा भा सूचनायें देगी अन पर हम अमल करेंग।

१८८५ में काप्रस स्यापित हभी तबग त्तर १९२० तक देगना जा अनुभव हुअ अनका पूरा निचाह माना अिम प्रस्ताममें आ गया। राष्ट्रन अक स्वरमे अुसका स्वागत किया। यह सहा है कि गिदिन यगोंमें कुछ अग अिमके विरुद्ध बाग्ने थ परन्तु जुनकी जावाज नकरारपानमें सूचीका आवाज भी नही कही जा सकती।

१९१५ में गांधीजी भारतमें आय १९३ में अन्हान भारतीय स्वानश्य यात्राका माग साफ करके अुसरी स्पष्ट याहना देग और दुनियाको दी। भारतमें अग्रजी रायका स्वरूप अक महान प्रजाकी सब तरहस बरवानी करनवाग है और मानव जगत पर अक महा विपत्ति है अुसे गान्ति और चायके जुपाया द्वारा दूर करनमें समारकी और अग्रजाकी भी अप्रत्यभ सेवा है — जमी व्यापक बनिया पर गांधीजीन भारतीय स्वरायकी लताभीको रख लिया और अुसे अपनाका सारी जनता अक्राप्र बन गयी। १९३० से भारतीय अितिहासकी नाव स्वानश्य-सप्रासकी मझधारमें पहुच गयी।

## आखिरी फसला

[ स्वराज्य-यात्राको १९३० से १९३९ तककी मजिल ]

१

### गोलमेज परिषद और नमक सत्याग्रह

साजिमन कमीशनकी यकिन जसफल रही । जिसलिअ नय सुधारोंके बारेमें विचार करनेके लिअ पार्लियामेण्टकी तरफसे दूसरा माग धापित किया गया । वह था गाल्मज परिषद बुलानका । लाड अविनन भारतके बाजिसरायके नात अक्तूबर १९२९ के अन्तमें घोषणा की कि अिग्लैंड और भारतके प्रति निवियाकी एक परिषद बुलाओ जायगी और अुसमें राजनीतिक सुधारोंके बारेमें विचार किया जायगा । अुसके ध्ययके रूपमें डामिनियन स्टेटस का माय किया गया । परन्तु यह काम भी कामयाब साबित नहीं हुआ ।

अिम घोषणाके बाद जेक मोके पर बोल्ने हुआ ब्रिटिश पार्लियामण्टके भारत मन्त्री गैड बकनहॉर्न यह कहा था कि अिस स्टेटस के आधार पर भारतका शासनकाय ता कभीका चयन लग गया है । अिससे भारतको कुरता तीर पर आश्चय हुआ । अिसीलिअ जसा हमन अूपर दवा १९३० की पहला जनवरीके दिन काग्रसन लाहौरमें साफ कट दिया कि हमें पूण स्वराज्य चाहिये ।

अिस प्रकार काग्रस गाल्मज परिषदके विचारमें गरीब नहा हुआ । दूसरा जोर नरम दानके नताअान अिस नय डगका पसन्द किया और अुन्होंने अिममें शामिल हानमें प्रमन्नता प्रगट की । काग्रसके सिवा और नव दान अुसमें सम्मिलित हुए ।

ब्रिटिश सरकारन यह यकिन खानके लिअ दूसरी तरहसे दाव लगाया । अुसन भारतके प्रतिनिधि नियक्त करनेमें बड़ी हागियारी दिवाओ । भारत विभिन्न धर्मों जातिया और भाषाआ आदिस छित भिन्न एक अनममूह है अिम मायताना अुसन अच्छा तरह पाषण किया था । भारतके प्रतिनिधि चुननमें अुग्ने अिसका आधार लिया और अुग्ने द्वारा अिम मायताको

गोन्देज परिषद् की रानामें मूर्तिमान बनन अत्र बाकी हांगियागी जोर सावधानी रग।

बाग्रगत गहौरा स्वानय प्रस्तावके अनुगार म्यरायरी लडाभी लडनी जार अपनी शक्ति गगाभी। दाडो-बच और गमन-गरयाग्रह भुगत व वन। देगभरमें जारास सत्याग्रहकी लडाभी शुरू हुआ।

यह लडाआ माचकी १२ तारीकका दाडा-बचम गग हुआ तय तो सरकारन जम हसीमें भुडा दिया था। परन्तु घाड हा मनीनामें वह मावधान हा गभी। गाधीजी पकड गय जोर देगभरमें दमनका दौरा जघाप्रथ गरू हो गया। पहरी गोन्देज परिषद् नवम्बर १९२० में विगपनमें हुआ तब देगकी प्रजा पूण स्वराय उनकी लडाआमें गगा हुआ थी। परिषद्का स्थान लदन हान कारण ही वह गतिंस बहा हा सका। परन्तु प्रतिनिधियाके रूपमें गय हुआ लोगाकी देगा जवम विचित्र हा रही थी।

अिस लडाभीका गगान आकिरी फम को लडाभी क्हा। असक जारभमें गाधीजान हिमावाणी गुप्त दलाम अगोल का थी कि आप गान रहकर भरे तरीकको अपना काम करनका मौका दाजिय। अन गान अस अपीकका आन्तर किया जोर कुछ ता अिम लगाभीमें गरीक भा हुआ।

गाठमज परिषदकी मव मिलाकर तीन बठकें हुआ। अनमें स पहली बठकमें काफ़ी विचार विमग हुआ। परन्तु बाग्रसका प्रतिनिधित्व न हानक कारण वह दूहे विना बरात जसी मालम होती थी। अिसलिअ दूसरी बठकमें बाग्रसको साचनके लिअ सपू और जयकरन प्रयत्न किय। अिसक परिणाम स्वरूप गाधी अिदिन समझौता हुआ और १९३१ में कराचीमें बाग्रसका अधिवेशन हुआ। भारतके प्रतिनिधियाके रूपमें ब्रिटिश राजनीतिज्ञान यक्ति प्वक जो पचरगी गतरज जमाभी थी जमके गभित अुतरके रूपमें बाग्रसन दूसरी बठकमें अवेले गाधीजीका अपन प्रतिनिधिकी हैसियतस भजनका निचय किया।

अिम समय भी देगक गामकाका मानस कमा था यह बनानवाली अक घटना यग देन जसी है। भगतसिं गोर असक साधियाको जो मत्यन्ध दिया गया था जसे माफ करनकी बात गाधीजीन सारे देगकी जावाजके ब पर कही। फिर भी बाभिमरायन असे नहा माना और कराची-बाग्रसके समय ही अन लोगाको कामीने तल्ले पर चढा लिया। गाधीजीक जन्भुत

ननवक कारण हा दगल मह कडवा घूट पा लिया और दगक अकमात्र प्रतिनिधिय रूपमें व विगयन गये।

त्रिनिहास प्रवाह महा नक पटुचा त्रिम वाच त्रिबिनक स्थान पर विरिगहन वात्रियगाय बनकर भारत आ गय २। यह त्रिमत्रिज जल्लयनाय है कि गात्राता और त्रिगा दाना जुनम परिचित थ — व बम्बत्रामें गवनरक पट पर थ तबम। श्री त्रिगा त्रिम अमेंमें विगयन वट गय और गात्रात्राका त्रमरा गात्रमत्र परिपटमें विरिगहन भजा ता महा त्रिज वात्रमें १० ० म फिर दयन-गुग जारामे गट कटक अमें जटमें गट लिया। तानरा गात्रमत्र परिपट हुजी तव पट्टग परिपटका तरहु गात्रात्राका फिर जलमें पट्टचा लिया गया था।

त्रमरी गात्रमत्र परिपटमें काप्रमक गटक हानन वह पट्टाका अपना अपन प्राय बड महत्वका बन गया। परन्तु परिणामका दृष्टिसे वह अनफल रहा। त्रक अपमानका कडवा आधिग प्याला पाना पडगा यह समन कर हा गाथात्रा ललन गय थ। काप्रमक लित्र भा यह अनमाचा अयवा कपनाक बाहर नहा था। काप्रमक कुड नता ता यट समनकर हा चट रह थ। व सरकारक साथ अपन व्यवहारमें पट्टका तरहु हा माक वान करत थ। त्रिमलित्र गाथात्रा विगयनमें थ अमु ममय भा सरकारन त्रिनक दमनका सामाय नियम जारा हा रखा था। त्रिम प्रकार गात्रात्री १ २ व प्रारभमें भारत लौट तव वातावरण लय था। संभारन जवाहरलाल जोर जल्लु गनकाग्वा तानाका त्रमें टाट लिया था।

गात्रमत्र परिपटमें गाथात्राने काप्रमक नाम पर अह टावा किया कि व मार दगक — मुसलमाना और अछूत जातिया तक्क — प्रतिनिधि हैं। अन्होंने यह भा बहा कि भारतक वात्र गाथन यट दावा अचित न लय परन्तु भारतमें जाकर त्रिमका मकान किया ज मकना है। त्रिमन विरुद्ध डा० जाम्बेडकरन अछूत जातियाके नाम पर और आगावा वगरान मुसलमानाके नाम पर त्रिम दावका चुनीता ग। फिर भा गाथात्रा अपन त्रिम दाव पर डट रहे और अन्हाने मार गलामें कहा कि काप्रमक राष्ट्रवाणी मुसलमानाको बुगया नहीं गया है। वान ता सब था। अन्हें बुगया जा सकना था परन्तु सरकारक बुगय हुअे मुसलमान प्रतिनिधियान त्रिमका बट्टन विरोध किया। त्रिगि राजनीतिज गट — मास तीर पर अन्हार

मुधाराका नया अगर हाता है। अंगरे मारें यः अब प्रयोगी बात थी अमिन्त्रिअ वः अपना नया वःम पूरा नहीं परन्तु यः इर कर अंग रःा था।

नय मुधाराक दा भाग थे (१) प्राणीय स्वराज्यता भाग जिममें पिलाउ मुधाराकी इध गस्ताकी प्रणाश रः करः प्राणीय मत्रिपारा गायनःा सब काम गौनकी याजना थी। (२) वःनीय मरःाराः त्रिअ मय गामत — फःरःगन — जिममें देगः राजा भा रः। दूगरः भाग तुरत अमःमें न आयः पःहः पःहःा भाग आयः और अमः वः दूगरः भागःा जारःम अःति ममय दःवःकर हा — अमी व्यवस्था वःानूनमें थी। दूगरः भाग अन्तमें वायाचित नहा हुआ और भारतवाः प्रगति दूगरे ही माग पर हुआ जिममें १९४७ में देगः ये भाग हान पर भी पूरा स्वतन्त्रता प्राप्त हा गःी।

प्रान्तामें १९३५ वः नय मुधाराक अनुसार चनाव हुआ। नया वःानून बनानवाः ब्रिटिःा भारत-मःत्री मरः मःम्युअल हारवाः अपना याजनाक वःारेमें यह विःवास था कि काग्रमका चुनावमें गायः ही अच्छी विजय मिःगी। परन्तु चनावका परिणाम यह आया कि देगः ११ प्रान्तामें सः गःभग ९ प्रान्तामें वह अच्छी तरह सफः हुआ। ९ प्रान्तामें सः ५ में वः निश्चित बहुमतमें आभा ४ मः असकी सबसे बडी दल-सख्या रही और सिध तथा पजावमें वः अल्पमतमें रही। ब्रिटिःा बूटनीतिकी गाडीकी चाल अिस प्रकार गुरूमें ही गडबडा गःी। जाहिर है कि काग्रसको १९३ -३५ वः बीच दवा देनकी अम्मीद रखनवाःे ब्रिटिःा राजनीतिनाको देगःकी जनताके अिस जवाबन मुश्किलमें डाः त्रिया। परन्तु अब अिस मामलेमें वे कुछ कर नहीं सकते थ। काग्रसन अपन कायको जाग बनाना गःरु किया।

१९३४ क वाद गाधीजी काग्रसक चार जाना सदस्य भी नहा रहे। फिर भा अनकी सःाह तो काग्रसका मिःती ही थी। अितना ही नहीं बिहाःमें भूकम्पकी महाविपत्तिस देगःको धीरजस पार अतारनक वः पटनामें काग्रम महासमितिकी जा बठक हुआ अिसमें गाधाजीन देगःी भावी नीतिकः सम्बन्धमें अक बडा मूत्र धापित किया कि अब हमें यह समझना चाहिय कि देगःमें पार्लियामेंटरी कायक्रम धर कर रहा है। १९२४-२५ में अिस कायक्रमका अस्वाकार किया गया था। अुसका तुःनामें यः मूत्र माफ वताना है कि देगःका काय अक देगःकमें किस प्रकार आग वः रहा था। त्रिसाक परिणाम-स्वरूप १९२५ वः वःानूनक अनुसार हानवाल चुनाव काग्रसन

अच्छी तरह जात गिय और दगाक साम्प्रदायिक दल तथा बुनकी पीठ ठाकता रहनवाली ब्रिटिश सरकारकी राजनीतिन मडली भी अिस घटनास चन गभा ।

४

### समाजवादी और सर्वोदयी दृष्टि

जिन वर्षोंमें काग्रसका नतृत्व जवाहरलालजीके हाथोंमें चला गया । अन्हान समाजवादी रवया मावजनिक् रूपमें जाहिर करके काम किया । १९२४ में काग्रसन अ० भा० चरखा मघ बनाया था अुसकं बाल १९३२-३३ में काग्रसक जलमें होन पर भी देगन हरिजन-मेवक-मघकी\* रचना की और १९३४ में जा नया कदम अुठाया गया वह था ग्रामायोग सघकी स्थापनाका । अिसके बाल गाधीजी काग्रसकी नियमित सन्स्यतासे अलग हा गय । अिस दिनामें और अाग जा कदम अुठाया गया वह था गाधी सवा-मघका रचना (१९३४ ३५) । अुसके दो वर्ष बाल हिन्दुस्तानी ताठीमी सघकी स्थापना हुथी ।

जिन सब कार्योके द्वारा गाधीजी अपनी कल्पनाक स्वरायका रचना करनेकी गिनामें कदम अुठा रह थ । जवाहरलालजी जिनमें साथ दे रह थे परन्तु अुनकी श्रद्धा अिध्न थी — वे समाजवााल और अुमक तरीकामें श्रद्धा रखन थे । जब वे लखनअू काग्रसक अध्पत्य बन तब यह चीज साफ तौर पर सामन आ गयी । अितना ही नही अिम पद्धतिन दगाकी पुनरचनाका काम करनक लिअ काग्रसन १९३६ में प्लानिंग कमेटी बनाथी । वह काम जवाहरलालजीकी अध्पत्यतामें हुआ अिसके परिणाम-स्वरूप स्व० क टी० गान्धन कुछ पुस्तके तयार करके प्रकाशित की ।

यह भाल १०५५ की अवाडा-वाग्रसक बाल अब अुल तौर पर असर कारक साबित हा रहा है । अुस देखन हूअ अुपरासन १९२५४० के कालकी घटनासे बिगप अल्लेखनाय हा जाता ह । और अब काग्रसका अध्पत्यन दान्नीन वर्ष तत्र प्रधानमत्रीके पत्क गाय सयुक्त रहनके बाल था जवाहरलालजी अग गांधाजाकी रीति-नीतिमें बिवास रखनवााल थी डबरका सौपन है

\* अिस कामका जन्में रहकर भा गाधीजीन जाग और वग गिया और १९३ में गभरमें अुसक गिअ दौरा किया । अिम दोरेमें पूनामें बम फटा जा अब चिह्नक रूपमें अुग्यनीय है ।



यह भी अब अध-गभीर पटना — १० ५ ६ में प्रिंशिंगमरी दृष्टि में भेजा हुआ — माना जायगा। १०५५ में प्रयागमंत्रालय जवाहरराज्यीन पार्लियामेंटमें समाजवादी पद्धतिका प्रमाणित ही नहीं कराया है। वाद्यगत भागमव अनुसार प्रस्ताव पाग किया है। जिसमें नानािषाट ममरित हट्टरी आवश्यकता अधिन नीत्र ही जाना है। आज वाद्यगत गताम्क है और जवाहरराज्यी जुगवे प्रधानमंत्रा ह। अस समय माना ग्रामाद्योग जादिकी सर्वोत्थ-नीति और प्पानिग वम्पुनिग प्राज्ज् जीर यत्रोचागाकी समाजवादी नाति — अिन न दृष्टियामें निश्चि मू म तत्त स्पष्ट हा रहे ह और अिनम रह म् भ्नाका निराकरण चान्त ह।

गांधीजी १९३५ से वाद्यसकी राजनीतिमे जग्ग हाकर मन्चा स्वराय निर्माण करनेके कायामें ग्ग गय थ। वे काय लागामें जाकर गगाक द्वारा और लोकपबितक बल पर करनेके थ। जवाहरराज्यीन जिग पद्धतिका थोडा-बहुत जारम किया वह थी 'प्पानिग वमनी बनानकी। अिसमें वाद्यसी प्रान्तोके मन्त्रि-मडगोन सह्याग लिया और रपयकी म्प्ट दी। यह काम सरकारा और अनक रूपयस करनेकी बात सोची जानी थी। समाज वादी पद्धतिका यही ग्गण है जिस हम अिस समय स्पष्ट ग्ग रह ह। दोना पद्धतियामें तथ्य है दोनाको अब राजनीतिक स्वतन्त्रता आ जानस खूब वेग मिल सकता है और मिलना चाहिय। अिसका भाग क्या है यहा हम खोजना है। अस समय गांधीजीका वही हुजी यह बात बुल्खनीय है कि यन्ति सरकारे ग्रामाद्योग सघक मेरे नय काममें सहयोग दें ता म अक चमत्कार करवे दिख्ता दू। वह सहयोग अब मित्र सकता है क्योकि अस समय सरकार परात्री थी और आज हमारी है; परन्तु असा हानस पहल जपरोक्त दो पद्धतियामें निहित सूक्ष्म भद दूर हाना चाहिय और दानाके बीच समवय स्थापित होना चान्तिय। अस समय देग आज्जाके त्रिभ उड रहा था अिसलिअ जवाहरराज्यीन कहा था कि म कभी वाद्यमस जग्ग नहीं हाअूगा क्योकि दानो पद्धतियाक भदवा प्रदन अिम समय अप्रस्तुत है। जिस प्रकार अन वर्षोंमें वाद्यसन अब बनकर स्वानय-यात्राका वम्म अपन प्रान्तीय मन्त्रि मन्ल बनाकर आग बढ़ाया। और अस समय जसन यह घोषणा भी की कि सुधारोका वसरा भाग वह बिठकुठ नापमन् करनी है और जुसे रह करानकी कोणिग करेगी।

जोर भारतमें साम्प्रदायिक दलाके और अय विरोधाके जिनका अुपयोग अग्रज-भांगनायाका आपसमें गानमें करत थ मौलिक अुपायक-रूपमें यह भी चाहिर किमा गया कि भारतके प्रदनका हल अुसकी जनता कयस्क मताधिकारक जाधार पर अपन प्रतिनिधियाकी सविधान-सभा बनाकर ही कर सकनी हे। यह विचार हमन यूरोपके इतिहाससे लिया और असा करक सुधाराका विचार करनके लिअ ब्रिटिश कमीगता और कमेटियाकी पद्धतिका आखिरी जवाब द दिया।

काग्रमकी अिम प्रगतिका असर हमरे राजनीतिक दला पर पड बिना कस रहता? परन्तु यह केव अग्य प्रश्न हे।

## ९

### दूसरा-विश्वयुद्ध और प्रान्तीय स्वराज्यका अन्त

ब्रिटिश पार्लियामेंटन बहुत ही सावधानाम साध विचार कर १९३५ क प्रान्तीय स्वराज्यक सुधाराका क्म अुठाया था फिर भी अुसमें काग्रमन पुन ११ में से ७ प्रान्तोंमें अपन मन्त्रिमंडल बनाकर शासनका काम हायमें लिया यह हम दख केक ह।

जुली १९३७ से यह काम शुरू हुआ और अक्टूबर १९३९ में बह बिल्कुल अकल्पित रूपमें रतम हा गया। अिमका कारण १९३९ का दूसरा विश्वयुद्ध बना। अिमलिअ १९३० स शुरू हुअे आखिरी फमने का पूवरग १९३० में पूरा हुआ और अुसका अंतिम रग अुस युद्धके दौरानमें और अमीकी भूमिकामें शुरू हुआ और युद्ध समाप्त हानने वाद दा वपमें अमकी पूणाहति हा गयी।

अपन दा वपके कायकालमें काग्रसन कसा काम निमा अिमका अग्य लगान बढनका जरूरत नहा। फिर भी मन्कारक साथ हमगाम लडना हा आजी-मस्थान १९३७ में सरकारी सत्ता पर आतर शासनका काम कस मनाअ यह अुल्लखनीय ता हे ही।

कायमें अब बल बगा था जा यत् मायाता चाग्ना था कि त्म प्रान्तीय सरकार। पर बग्जा बरक अना द्वारा १०३५ के राजनीति गुणारों धानूनवा अनुचित गिद करवे अुस ताग द्वायनकी पान्ति बग्नकी घण्टा करें। १९२४ व स्वराय-युगकी विचारगरीव अनुगाग जेगा दग्ग बग्नवाडे काग अस समय भी मौजूद थ। स्व० श्री विदुग्भाभा पनेल अिगा जुग्ग नीय नता थ। वे वद्रीय विधान-नभाव अघ्यग थ। अग हैगिषाग जन्हाने काग्रन तथा भारतीय जनताकी गविनका अग्रजाको अग्छा परिचय कराया था। भारतीय प्रजा अपना काम स्वय गभाउ गवती है यह साविन बरनमें जसी बातान स्वतत्रतावे अितिहासमें बडा भाग लिया है। राजनीतिग शत्रुमें ही नहा साहित्य ज्ञान विज्ञान पाडित्य अित्यागि अनक क्षत्रामें आनर राष्ट्रीय प्रतिष्ठा प्राप्त करानवाली गविन रखनवाग् नर-नारी भारतमें अत्पन्न होते ही रहे ह जिनके कारण भारतके बारेमें दुनियाका मत अूचा अठता गया है। अस्तु।

परतु काग्रसमें गांधीजीके नतृत्वमें अब और हा दृष्टि रही थी। वह यह कि भारतके लोक-जीवनक अनक क्षत्रामें सुधार करनमें विनेगी राय बाधक हाता है असिलिअ हमें स्वतत्रता चाहिय। अत यह महसूस होन पर कि राज्यसत्ता प्राप्त करनका यह प्रयोजन प्रान्तीय स्वरायके द्वारा कुछ हद तक पूरा हो सकता है दगमें दो-तीन काम गुरु हुआ। वे थ (१) गराबन्दीका कानून (२) गिक्षामें बुनियाग पद्धतिका सुधार। वे दो चीजें अखिल भारतीय पमान पर गांधीजीके नतृत्वमें गरु की गयी। परन्तु यह विचार रखनवाला दल भी यह जानता था कि अन्तिम त्रान्ति तो अभी करनी बाकी है।

फिर भी काग्रसका शासन केवल गासनके रूपमें देखा जाय तो सफर सिद्ध हुआ और अग्रज गवनरोन भी अुसकी काफी तारीफ की। दगके अय राजनीतिक दग् विरोधी दलाक नाने काभी असी बात न कर सके जिसस जुह बडी कीर्ति मिग्। विराधी दलाके रूपमें हिद् महासभा और मस्लिम लीग गणनापात्र थ। तीसरा लिबरल (नरम) दल लगभग छिन्न भिन्न स्थितिमें था असन कुछ नामाविन व्यक्ति थ जो व्यक्तियाकी हैसियतस दगमें मान-सम्मान प्राप्त करते थ। असिलिअ अस कालमें अक सुसगठित दग्के रूपमें जुमकी गिनती शायद ही की जा सकती है। और अस

दुकी सबसे बड़ा मुक्ति यह रहा है कि १९०९ और १९१९ के दो अनुभवों के बाद अब अन्त तक अमुक नतीजा गन्म राजनातिका शान्तिकारा दृष्टिका ममका हा न मक और न अपन अत्रि माना हुआ प्रीयता मयानपन और ममझरारी तथा मन्वी प्रगतिका नीतिक विषयमें रहा करण अतिथदाक बारेमें अह कभी का पदा हुआ। व यह ममका कर चर माना दगमें कवल सुराय स्थापित करनका ही सवाल हा। अन्तान शान्तिका यह अत्रि गायक ही ममका कि स्वरायक बिना सुराय सभव नहा है अिमलिअ पहर स्वराय प्राप्त करना चाहिय तब फिर अस अपनानका बात ता दूर रहा। १९४७ में जब शान्ति हा गया तब यह दल अतिम म्पमें विगन हा गया।

२

परन्तु अकर प्रान्तीय स्वरायका यह प्रयाग म्ब समय तक चल सकनवाला नहा था। कद्राय सरकारक मुधारम म्बध रख बाग १ ५ क कानूनना महत्वपूण भाग अभी तक कटाजीमें पडा हुआ था। वह अममें न आये तब तक प्रान्तीय स्वरायकी मीठी बाग ल जानवाग नमनाका मीडा नही बन सकती थी ककर अिनना हा हा मन्ता था कि चाहें तो अम मीठी पर बठ रहें। पर काप्रमन यह किना अिम धारणाम नर किया था कि अुम पर चकर आग बडा जा सकगा—कन्तीय सरकारका रचनामें काहितकी दृष्टिम बाछनीय परिवतन करनक अत्रि जनवल प्राप्त कर सकेंग।

ब्रिटिश पार्लियामण्ट अिम विचारम एक मत्री थी कि चूकि भारतका अपन माक इअ तराक पर सुधार मनमें हमन पहनी ही मजि पर भार काआ अिमलिअ अब आगे बदनमें जला करना ठीक नहा हागा। अिमका दूसरा और अधिक बडा कारण शायक यह हो कि यूरोपमें जमनीक कारण अभी परिम्यति पना हाती जा रही थी अिमस तुरत अात्री छिड जाय। जमा म्पनिमें भारतका गगन काप्रम जमी स्वतत्र मस्थाको सौप दें और अात्री छिडन पर भारतम वाछिन महायता न प्राप्त की जा सक तब क्या ग? काप्रमका प्रान्तीय स्वरायका प्रगमनीय कारवार देखकर ता यह हर और भी अधिक मही माना जायगा—अप्रजाका नजरमें। अिमलिअ अधिक माहनका काम अुगनमें गन नहा अमा पार्लियामण्टन मनमें सोच रखा था। गड

त्रिनिशिया वाजिसराय थ । थ जररी मामगम थथथ । वाने वनातमें कुण थ ।

३

यरापमें उडाआका डर सत्वा तिरग । भुगका आगाहा उगभग अब सालस हाता ही रहता था । श्री मुभापच उोग जमनामें थ । यगम स्वग आनक वा उन्हाण उगभग यह चतारना दे दी था कि १९ ९ में युद्ध हागा । अम परिस्थितिमें भारतमें किम ढगमे काम करना चाशिय भिम वारम माउम हाता है उगान अपन मनमें कोआ याजना बना रती थी ।

१९३९ की काग्रसक अध्यापकके प्रानन वती गाच-नान पना कर ता । या पट्टाभि सीतारामया और मुभापबाबू असक त्रिअ मड हुआ । तगमें या विचारधाराआमें रस्माकगी गरू हुआ । मुभापबाब कुछ मतम जात । गांधीजान घोपणा की कि पट्टाभिकी हार मेरी हार है । काग्रसक प्रतिनिधि भिमस चौक गोर धह तान हुआ कि सारा मामग बितना गभार है । मुभापबाबूका वा ही समयमें माउम हा गया कि वे अध्या ता बन गये ह परतु काग्रसक बड और महत्वपूण भागका उह गाय नहा है । अन्हाण जिस्तीफा थ निया और राजबाबूका अध्यापक सीपा गया ।

मुभापबाबूकी नीति क्या है भिमरा धाड हा समयमें पता च गया । धगा काग्रसका अब जिला परिषद हुनी जिसन काग्रसस यह सिफारिश का कि त्रिटिण सरकारका छह मयानवा नाटिम निया जाद कि भारतका स्वराज्य ना नहा तो हम सामूहिक मत्याग्रह गुरु करग । भिम प्रकार बगाल काग्रस गरमागरम वातावरण पदा कर रहा थी । अथ कुछ प्रान्तों ना अमका असर था । मुभापबाब अपनी भिस नीतिका ताकत दगमें आजमा रह थ । वान यहा तक पहुची कि बगाल काग्रसके अध्याकके नात मुभापबाबन अपना साचा हुआ नातिका आग दगाना गरू कर दिया । काग्रस काग्रकारिणान जिसक विरुद्ध जनगामनका कारवाभी करक अह सस्यास अलग कर दिया ।

यह घटना छातीसा नहा था । यूरापमें लडाओ आ रहा है उस समय भारत किम ढगम काम करेगा यह प्रान त्रिरामें तिहित था ।

मुभापबाब काग्रस मस्यास निकड जानके वा समय वा भारतस गप्त रूपमें भागकर जमनी गय और अग्रजाके गनुआके साथ मिलकर भारतका स्वतंत्र करनकी सशस्त्र याजना वनातमें ल्य गय । काग्रसन अपनी अहिंसक

और मत्प्राप्तही नीतिस ही आग बन्दक अपन सिद्धान्तका बड़ भारा आंतरिक सक्दम बचा लिया और फिरस गांधीजाक मन्माय नतरवमें काम करना शुरू किया।

४

१ सितम्बर १९२० के दिन यूरोपमें युद्ध छिड़ गया और दो ही दिन बाद ३ सितम्बरको अग्र सरकारने बन्नी विज्ञानमभासे या लोक-नताओम पूछनाछ या बातचीत किये बिना घोषित कर दिया कि भारत अग्रजाक युद्धमें बुनन साथ गरीक होता है।

भारतमें राजनीतिक सुधार करनेक बारेमें असस क्या पूछा जाय जमा माचकर साखिमन कमीशन नियुक्ताकरणमें जा गन्ती की गया था अमम भी गभीर यह गल्ती हुआ। परन्तु वह गन्ता अनजान गही हुआ था। नागतम पूछा जाय और वह हा ना या आनाकानी कर ता क्या हा। और लडाया जस तज मामलमें शुरून ही अमा हो ता काम कस कर? भारत युद्ध-भामप्रा और ननिक बलका अन्त खजाना ठहरा। वह किस पक्षमें जायगा जिस बारेमें बूहापाह पना करनेक बताय जुस बवाकर बागनाला काम लना अग्रज सरकारका ज्ञान मनासिर मात्रम हुआ और भारतका तरफमें बुनन असा घोषणा कर दी। जुनस साथ दनकी बात पूछना यात्रक लिअ छड लिया।

गम्भारी वर्गोंम ता नहीं ही पूछा गया परन्तु काप्रस जिस समय गांधी प्रांतामें राय कर रही था। बुन प्रान्तकि मत्रि मडल भारत सरकारक महत्त्वक जग थ अह भा विश्वासमें नहा लिया गया। यह ना काआ छोटा-भाटा अपमान नहा था।

५

२ सितम्बरका युद्धका घोषणा करनेके बाद गड विनिश्चयान गांधीजीका मिलनक लिअ बुलाया। भारतक स्वरायकी आगकी बचा भिग प्रकार फिर शुरू हुआ जा अतमें १९८७ में पूरी हुआ। परन्तु अमम पहले बुनमें अवस्त परिवर्तन और अयुक्त-मुपक हा गभी थी। असका अत्यन रगभरा अतिशय काप्रसकी अन्तिम बगीटा गांधीन हुआ। असमें स वह मफतापूर्वक पार हुआ और गांधीजीका बतानी हुआ जा नीति १०२०-२० क दगाकमें बुनन अनुभवस अपने लिअ निश्चिन की थी अस सफक बनाकर लिया दिया

और भारतकी स्वतंत्रताका मवाल लगभग दा गौ वषमें हूँ किया। जैसा करत हुआ अमकी कमजारीवा और अमकी नानिमें रहा नुनिया भा आगिरा फमलमें आ गया। यह सब अनिवाय था। फिर भा मार रूपमें व नानि सफुन हुआ किम कायसमें फिरसे स्थापित करनक लिअ १९३९ व गुन्में अपन चुन हूअ अध्यक्ष साथ अस झगडना पडा था। अिम तरह झगडन पर भा कायस अपना नातिके प्रति वफानार रही यह अस वषक वन्न बड सकटकी विणय अलेखनीय घटना है। परन्तु मुख्य काम ता यह निश्चित करना था कि अब युद्धका स्थितिमें किम तरह काम करत भारतीय स्वरायका यात्राका आग बनाया जाय। अब हम अिम अितिहासका मुख्य मजिलाको देखेंग।

## ६

गांधीजी वाअिसरायसे अक ब्यक्तिकी हैसियतस मिल सकन थ क्याकि वे १९३६ से कायसमें नही थ न असकी कायसमितिअ अह कोआ मता देकर भुगाकात करनको कहा था। गांधीजीअ वाअिसरायके सामन यह चाज स्पष्ट की और कहा कि व अग्रज सरकारकी बिगानन मदद करग परन्तु अपनी अहिंसाकी नाति पर डट रहकर और असकी मर्यागमें रहकर। अर्यानि जो सेनामें भरती होना चाह व खुगीसे हा यद्धकोयमें रुपया दना चाह व दें परन्तु कायस असा करा देनकी जिम्मदारी नही लगा। कायस देगकी आतरिक गक्ति अच्छी तरह सभालेगा युद्धमें अग्रजाक पथको वफानाराक साथ नतिक सहायता देगा और अिस प्रकार अिस युद्धमें भारताय जनताका अडिग खडा रखकर आग बनायगी।

अग्रज गांधीजी जसे महान नताके नतिक और विलागत समथनका अिम बातस राजी हा जाय यह स्वाभाविक था। गांधीजीकी अिस बातके जवाबमें वाअिसरायकी तरफने यह कहा गया कि युद्धकायमें केद्रीय सरकार अक युद्ध समिति नियवन करे। वह यद्धकायमें देगका कारबार देव प्रत्यक प्रान्तका मध्यमत्री असका सत्स्य रहे और वाअिसराय असका अप्यग हा। अिस प्रकार तात्कालिक प्रबंध कर लिया जाय और युद्ध जातनमें भारत कमर बसकर गराक हो।

परन्तु कायसका कायसमिति गांधीजीकी अमी गुद्ध अहिंसा-नाति माननका तयार नहा थी। यनि अग्रज सरकार पूण स्वराय दनका

बात करना ता कुछ काग्रसी युद्धमें रूपया और आत्मियाकी बात गनका भा  
 अडल रहे थ। सरदार बल्लभभाजीन घाषणा की कि बिलागत तो साथ दिया  
 ही नही जा सकता राजाजा अिममें महमत थ। और जवाहरराज्जा गायन हा  
 काजी नया माग ग्रहण करनवात् थ। अुह १९३० क गाधा अिर्विन-ममयीनक  
 जमानम गाधीजाकी सधिवार्ता और राजनीतिगताके बारेमें बहुत भरोसा  
 गायद नही था — फिर भा अन्तीय नेताके रूपमें गाधीजाक प्रति अनकी थडा  
 अल थी। अिमअिे काग्रसने यह प्रस्ताव पाम किया कि अग्रज सरकारका  
 अपना युद्धनीतिके अुद्ध्य घोषित करतै चाहिय और अनक अनुमार भागतमें  
 स्वराज्य देनके तयार होना चाहिय तथा असका पूवभूमिकाक तौर पर  
 भारतके कन्द्रीय गामनमें भी अनरूप सुधार करन चाहिय।

गाधीजीन अिस प्रस्तावके मदधमें कहा कि म चाहू अुम ह् तक  
 काग्रसकी वायममिति अहिंसा-नीतिका न मान तो अुस असा निणय करना  
 चाहिय और अिममें औचित्य है अिम ममनकर अिगण्डका यह प्रस्ताव  
 स्वीकार करक चटना चाहिय। भारत जस महान राष्का यद्धमें गराक  
 करना हो तो अुस विश्वासमें नना चाहिय और अिस गकनधके सिद्धान्तका  
 रशाक अि अ युद्ध आरभ किया गया माना जाता है अुम मिडानका  
 अिगण्डका भारतमें आन्तर करक चलना चाहिय।

७

अिम प्रकार गाधीजीकी वान अक तरफ रहा और काग्रसन व्यवहारका  
 ममनकर अपना अलग पामा फेंका। ब्रिटिश राजनीतिवाका अब गाधाजाक  
 साथ नहा काग्रसकी वायममितिके माध काम लना था। बिलागत अहिंसक  
 सहकारका नतिक भूमिका परम वान राजनीतिगता पर आ गयी थी। अमक  
 विरुद्ध अिगनन अपनी पुरानी भन्नानिका पामा फेंका। वाजिसरायन अपना  
 सत्ताक आधार पर मान हुआ भारतके बावन ननाआका मिलनके अिग वगया।  
 दूसरे नना भी मिलनका तयार थ। परन्तु अितनी सख्याको काफी मानकर  
 ब्रिटिश कन्दनीतिका अुत्तर तयार हुआ कि काग्रस-ल अकग ही नहा दूसर  
 अनेक प्रभावगाली दल भारतमें ह जा असम भिन्न बात करन ह। अिमअिे  
 गमनमें नही आता कि क्या किया जाय। और अिम समय युद्धवाग्में यह  
 क्षमट कस भोज ला जाय? कायम जमी महाप्रवत् गस्या अन वक्त पर अमा  
 अलङ्गन पना करके यद्धमें बाधा लडा करे यह अम गाभा नही दता।



काग्रसन जो जुष्टान राग की अगवा अता अत्तर आन पर अगवा माग स्पष्ट हा गया — अगरे अत्रि जय दगरा रागना नहीं रहा । अगने प्रस्ताव पास किया कि प्राताक मत्रि मडर नवम्बर ( १ ३० ) क पदर सत्तागमे पदर अक खास प्रस्ताव पास करव अपन पनामे अत्रि हा जाय ।

प्रस्तावमें स्पष्ट किया गया कि अग्रज सरकार भाग्यका महायाग चाहे ता जुम अलससह्यकार अत्रि अचित सरक्षणकी व्यसस्या करवे लातनवना नरव भारतकी राजनातिमें दामिग करना चाहिये अग वरम अगान चाहिये जिनन भारतकी प्रजा सुद अपना मविधान बना ल तथा जिनर अनुगार तलाउ भारतक गसनम भी सुधार करत चाहिये । परतु चूकि अग्रज सरकार जमा नहा मानता अिमत्रि प्रजा असक यद्धमें साप नहा द सरता ।

साना प्रान्तामें यह प्रस्ताव पास करव काग्रमा मत्रि-मन्त्रान त्यागपत्र द त्रिय । सरकारन सुधाराक काननकी ९२ धाराके अनुसार प्राताका गसन गवनराका साप लिया जीर अिम प्रकार दूसर महायद्धर काममें १९वा गनाम भारतम जमा निरकुग अग्रजी राय या गमभग बता ही राय अग्रजान गसनक अतिम काममें अकल्पित रूपम गुरू हुआ ।

जिस नाजक स्थितिमें काग्रसरा अपन आगक कामका विचार करना था । यह दूसर प्रकरणमें हम दोंगे ।

## १०

### युद्ध निषेधका सत्याग्रह

ब्रिटिश गसनकान यह मफाजी नहीं था कि विन्वपद्धके भारत-मधधी अस्थ तथा हतु क्या हैं अिमत्रि काग्रमी मत्रि-मन्त्रान त्यागपत्र द त्रिय । और भारतमें धारा ०२ का निरकुग अग्रजी राय सब जगह स्थापित कर लिया गया । देगना काभा राजनातिक दत्र जसा नहीं था जो जिस स्थितिमें गना हो । जमी स्थितिमें अग्रज सरकारका यह सन्ताप रखकर या मानकर चान्ना ता कम मभव हाता कि सब ठीक घट रहा है ?

दूसरी तरफ यद्धमें अिमत्रि के पक्षकी स्थिति भा बिगडनी जा रही थी । जमनाकी सनाओं तजीसे आग वन्ती जा रही थी चिंताका कारण बन्ता जा रहा था । अिमत्रि भारतक गसनकामकी नान अवना करनेमे भी कस काम चल सता था ?

जिसका अग्रजाने भारतमें राजनातिक नुसार कर्मका बात बारा रखी। जिम्मेदार अग्रजाने भारतक सम्बन्धमें जब ही बात किमें अग्रा — मत्र कौमें अत्र हाकर कोआ निश्चिन बात न कर तब तक कम समनमें आये कि क्या किया जाना चाहिये? यह अग्री बात था क्योंकि कात्मन ता युद्धके अनु रूपमें भागनका स्वतंत्रताक बारेमें पूजा था और कहा था कि जिसक बारेमें निश्चित बात करे ता जसक बात नत्र कौमें जापनमें मित्रक काम करनकी बात माच सकेंगा।

अग्रजाने जिस सवाकका पत्रकर जुगुग बात कहा कि कौमामें मत्र न हा तत्र तक आपका स्वतंत्रता देनका बात कम साचा जा सकना है?

आप काम ता जस करत ह कि कौमवि वाच किना तरह ना मत्र न ही सक और अपुग्मे यह कर्म ह कि कामामें मत्र न हा तत्र तक क्या किया जा सकता है। जिसका अर्थ है आपकी नीयत माफ नहीं है — जमा प्रयत्न देनका वाआ अर्थ नहा था क्योंकि अग्रज यह मुननका मत्र क्या तयार हान लग? १९०५ म कौमा झगडाकी गतरजकी मफल चाल अहोनि गु की थी।

काग्रसन माच १ ४० में रामगामें अधिवान करक प्रस्ताव पास किया कि अमे गान्तिम फिर मयाप्रका नाति पर गीयता पडगा। परन्तु काग्रमका भीतरा स्थिति तुरत लला छात्रनकी नहा था देशमें जिसक मित्र आवश्यक वातावरण भी मनी था।

जिम अमेंमें काग्रम कायममिति मरकारक माच फिर अब बार समझीतका प्रयत्न किया। अुसक नता राजाजा और मरकार थ। कायममिति मरकारका युद्धमें अमक गती पर सहपाग देनका बात वही अुसकी वातुचात चगी मरकार असमें नहा फगी और ममितिवा यह प्रस्ताव अमफल रहा। अग्रज प्रजाका यदनता चर्चित था। वह भारतके प्रति कमी कथा नाति रखनक दृढ विचारवाला था यह किनाम छिया नहा है। -

जिम प्रकार कायममिति गायजाकी नाति अग्य हाकर जा कुछ किया जा सकता था वह कर ग्यनका प्रयत्न किया। अममें वह अमफल रही। अग्रजाने जिममें भूल की या नही यह प्रश्न अप्रमनु है। परन्तु अनुक जिम कर्मने भारतीय स्वराय गतिर लहनन मित्र गायजा और काग्रमका जा जिम नीतिके मिलगिलमें अत्र-दूमग्न अग्य हा मय थे फिर अिरुटा कर लिया। गाधीजीका फिर सत्याग्रका ननत्व गाना गया। कुछ समय पत्र

रा राज-शासन अरु ध्यातमानमें अंग नाजूक स्थिति बरमें जा कुछ कहा या वह देवन याग्य है

स्वानयन-पद्धति लड़नक लिख जहिगाता जरूर स्वाकार किया गया था। अकिन लागत मतमें अंग बरमें छिपी हुआ मर्यादा ता था ही। अिमलिख जब विनयपद्धति गारु अा और य मवात अंग कि अप्रजाता मरु दा जाय या नहा तब गांधीजी और काप्रमन बीच मतभेद पता हा गय। गांधीजीन कहा कि हिंसाय मरि आजाता मिठ ता वह मय मकर नहा। दूसरे लाग अिम विचारन थ कि यदक कारण अप्रज गगाके माय मौका करनका बडा अच्छा मौका मिला है। परन्तु ब्रिटिश लोगान काप्रमकी मरुवाला बात नहा माना। अिस आन अनकी समस्यारी समझिय या और कुछ मानिय। परन्तु हमें वापस गांधीजीके पास जाना पडा।

(अ० आभी मी० मी० रिज १५-४-५५ पृ० १७)

सरकारन पुराना कौमी अकताकी बात कही। अिसलिख मुस्लिम लागका महत्त्व बर गया। असन सरकारने कहा कि आप हमसे पूछ बिना कुछ न करे। काप्रसी मन्त्रिमडल जिन दिन पनास हट अस दिनका असन आग चरकर मुसलमानाका मुक्ति निवम बताया और अमका अत्मव मनाया। प्रानामें कौमी दग भी छिड गय। सरकारन आग चलकर यह बात अगाभी कि प्रानामें भी मिय मन्त्रिमडल बनाकर काम किया जाय। अिनम लीगके नप्रा के भाव और भी अूचे चर गय।

अिन नरम विचारके लागकी कौमल सरकार और काप्रमके दो दशामें बीच-बचाव करनकी हा रह गयी थी व भी अिस स्थितिमें थक गय और यह मानकर पाछ हट गय कि अिम मामलमें अब कुछ नहा किया जा सकता। रा मप्रन गांधीजीस कहा कि आप जिनासाहबके साथ बात कीजिय। गांधीजीन कहा कि जब तक जन्हाका बात न मान ला जाय तब तक जिना साहब किमा वानम नहा बर्धेग और मनका मम नहा खायेग अत अिसस काआ नवाजा निवन्ता नया दीखता।

अिर भा गांधीजी अपन अगम ता अकताका प्रयत्न कर ही रहे थ। अिम अमेंमें अहान हिन्दा हिन्दुस्तानीक प्रचारक लिख अक सम्मेलन किया। रा पुस्तकतमगन टपनन हिन्दा-साहित्य-मम्मन्तनका वर्षों पुरानी नानिमें साम्प्रनायिक अन्तिम फर-बन्त किया अिमलिख गांधीजीन अससे अलग हाकर

नआ सत्या स्यापित वा। अमुक त्रिज जा सम्मन्त्र किया गया अमुमें मौजूबा अस्तु हव आय। परन्तु य मद्र प्रयत्न मूचक चिह्नम अधिक आग नहा व सक्त थ। दाक सामन बहुत बडा सवाल था। अब ता काप्रसका हस्ता और त्पक स्वाभिमानका हा सवाल सामन था। अउस हानि पट्टुचानक त्रिज सरकारन कौमा अकताक नाम पर ता वातावरण पत्त किया अमुस निवत् कर काप्रसक सामन फिर अपना स्वरायका ल्पआका प्रमुम स्थान दनका सवाल था।

अिम अमेंमें अक और अल्ल्पनाय घटना हुआ। वह थी मुभाप वावूका भारतम विमुक्त कर जमनी पट्टुच जाना। अनका नीति ठूमरा था। अमुक त्रिज भारतमें स्थान न त्पकर व अप्रजाके विराया दमें पट्टुच गय। त्रिसम सरकारन मनमें अक नया डर पठ गया कि यदि युद्ध भारत तक था जाय—ओर वह आता त्रिवाया त रहा था—ता अमु समय भारतमें गग विद्रोह तो नहीं कर देंग ?

गगक मन्त्रिमडल तानान प्रान्तामें सत्ता पर अस्त थ। व अपना काम किया भा स्वावत्क बिना चला रह थे।

असा विषम स्थितिमें गांधाजाका रास्ता निकालता था। अम मौक पर व हमारा अपन अतरका गहराजीमें डुवका लगाया करन थे। अिस बार भी अमा ही हुआ। जुहाने काप्रसको व्यक्तिगत सत्याग्र करनना मुयाव त्रिया। काप्रस-तत्रका अमुके अनुकू पुनगन्त किया गया। काप्रस युद्ध सत्याग सभ्याक रूपमें बत्त गया।

गांधाजा भारतन प्रन्तका बवल राजनातिक स्वरायिका नजरन नहीं त्पत थ। व ता मव कुठ विवयुद्धका भूमिकामें हा माचत थ। त्रिम दावानामें भारत किम इन पर काम कर ? अह यह माच था कि अप्रजाका युद्ध चायपूण है। अुमें व विगणत नतिक (गम्त्राम्त्रस नहा) गहया दनका तत्रा थ। परन्तु यह बात ता अब रहा नहा क्पाकि जप्रजान जेगा बात स्वाकार नहा की त्रिमन दग स्वाभिमानपूवक मत्प्राग द तक अत्त कौमा त्प और आपसा मननुवावका आपत त्प पर टाकर अन्तान काप्रसका भूग मिद्ध वत्क विपत्त करनका वात्रा गम्ब था। चत्विन्न त्रिम अमेंमें यत् कहा कि भारत त्पमें यह कौम अितना सभ्यामें है व्ह कौम अतना मभ्यामें है हरिजन त्रिनन है वगरा वगरा। य मव

काग्रससे जाग्य ह । फिर काग्रस है क्या ओर पिता है ? यह जित ता जते पर नमक छिन्कन जैसी थी ।

अस अनेमें गांधीजीने हिन्दुओं और अंग्रेज प्रजाता गान्तिन जिने पत्र लिख । परन्तु व तो अिनता ही जाननके जिअ कीमती न ति गांधी जाका मन किम तरह काम कर रहा था क्याकि अन पत्राता कां माननवाग था ! परन्तु गांधीजीके लिअ यह वास्तविक बात था । भारतका अपना वजन स्वाभिमानपूर्वक गान्तिने पत्रमें गठना चाणिये यह जग दीयकी तरह स्पष्ट दिवाजी दिया । और चारा ओर फरक अ धर्ममें बुन्हान बिनाबाकी पहले और जवाहरलालजीको दूसरे सत्याग्रहके रूपमें निश्चित करके मुद्ध निपधका सत्याग्रह आरम्भ किया । दाना व्यक्तितारा चुनाव गांधीजीकी अस समयका मानसिक दगा और नय सत्याग्रहका ताराका अठी तरह बताता है । यह सत्याग्रह मुद्ध आध्यात्मिक गतिनस कर भारतके जिअ स्वरायका प्रान हल करन तककी गभित गतिन रखता है यह जिसस स्पष्ट होता था ।

रचनात्मक काय करनवालाका अपन काम जारी रखकर दृन्तापूर्वक उट रहनका कहा गया । जो काग्रसके पाठियामेंटरी काममें ही लिखस्या रखनवाल् थ, व लाग जल जान लग । परन्तु व यही मानत थ कि असमें स सामूहिक सत्याग्रह पदा हो तभी यह सामक हागा । गांधीजी जसा करग जिस आगाके सिवा अुहे शायद ही काजी आवासन था । और कोआ रास्ता नही था असलिअे काग्रसन अपन मनापतिका जसा सूज वसा व्युह रचन दनका तयारी बताओ थी । हा अपवात् रूपमें कह ता काग्रसक गरम दठ — समाजवादी साम्यवाग आदि — कहा करते थ कि बडा आन्तान छडना चाहिय । और व इसीका जाग्रह किया करत थ ।

गांधीजीके जिअ असा आग्रह बकार था । व आन्तेलन छानका तयारी या वातावरण देशमें दख ही नही रहे थ । फिर भी कुछ न करत ता स्वराय और स्वाभिमानकी भारतकी लडाओ ही अग्रजान (मुस्लिम आगक साथ मिअकर) जो चाउबाजी चत्री थी उसके कारण खतम हो जाता । यह तो कसे होन दिया जाता ?

यद्ध निपधका सत्याग्रह अस प्रकारकी बधनीसे मक्ति देनके जिअ था । और असमें वह मकल हुआ । दगाके आगोमें फिरस यह भावना पदा हुआ कि हम कुछ न कुछ कर रहे ह और कुछ नही किया जाता जमी लान्तारी

या परेगानाका 'ग' गूँ हानिकारक अमर दवाक लाक-भानन पर पटना जुमस दग बच गया।

अिस प्रकार व्यक्तिगत न्यायप्रहकी लानी मफल हुजी जमन गज मानमका आश्रानन तिया जौर धारज वचाया जौर अप्रजान कामा अेकना नाम पर 'ग' गम्त्र फँका था वह जमफर रहा। दूसरा आर यद्ध ना मुभायस अनक विरुद्ध जा रहा था। जापानने अगियामें बडा अवस्ल लडाआ उगा था जौर जिम वानन भा अग्रनाकी चिना बर रही था कि मुभापवापू अुममें ह। जिम स्थितिमें चर्चित यह हठ पकडकर नही रव मकर थ कि भारतमें अिस समय यद्धक दौरानमें कुछ नहा किया 'ग' सकता। अमराका और चानका गकमन ना अुन पर दवाव डा रहा था कि भारतके बारेमें कुछ न कुछ करना चाहिय। अिमलिअ फिरस जो नया कर्म अुठाया गया वह था क्रिप्स मिशन का। अिस प्रकार भारताय प्रजाक माय समधीतकी वाताका युग आरम्भ हुआ जो १९४७में भारतका विजयस पूरा हुआ।

## ११

### क्रिप्स मिशन

#### १

अब यह क्या भारतकी स्वातन्त्र्य-यात्राकी आगिरी मजिल पर पकच रहा है। अिसके प्रारभमें अिगण्डके प्रधानमन्त्रावे पत्र पर चर्चित जसा बट्टर माम्ना यवाग था। १९४० के मजी मासमें चम्बरलैनर चर जान पर वह जिम पत्र पर आय जौर १९४५में यद्धका सफर बनाकर अलग हुआ — विजयतक गगान चुनावमें हराकर अुन्हें विना किया।

परन्तु विधाताका मरोग जना हुआ कि जिम चर्चितन यर खुली पापणा की थी कि 'म' श्रिटिंग साम्राटक माम्नायका सफाया करनका प्रधानमन्त्री नहा बना अगी चर्चितका भारतका साम्नाय छानस सम्बध रगतवागी समधीतकी वातधीत मनन या बमनमे गुन करनी पडी। अितन पर भी अुममें तिअगर शकनका अुनसा मन तयार नहा था। अलबत्ता युद्धकी सारा परिस्थिति अुन्हें दूसरी तरफ साच रही था। अुसके आगे अुवनकी

ममतागरी जुमान लियाआ। परन्तु जब ता गांधात्रीया गान्धर रगा जा सर तब ता पण्ड खनवा वाणिज अमान जग्न था।

अपन मन्त्रिमन्त्रमें भारत-मन्त्री रूपमें उचितने अपना हा राजागिमें थदा खनवाके अमरी नामक जग्न वदृग्धवाता रगा था। जोर १९६३ में लाड त्रिनिशिया वाणिजराय-अन्त त्रिस्त अत्र त्रि अमान अपन जग्न विभाग पात्र सनानी जग्न वेवन्ता जग्न जग्न पर अन्त त्रिया। त्रिया राजग्न चर्चित अमरी-वेवन्त त्रिपुत्राव वापराममें हा अत्रजाता मन्त्रिगानात्रे आरभ करना पन्त यन्त मही है कि वे राफ्त हुआ त्रिग त्रिपुत्राव मत्तात हन्तो वान्त हा।

२

जग्नमें त्रिनीन क्लिनामें सफ्त हन्ता त्रिम मन्त्रिवाताका आरभ अम मितानस हुआ जिस सतपमें त्रिपुत्रावितान नाम त्रिया गया था। सर स्फुत्र त्रिपुत्र विगयनक मजदूर-अन्ते जब नता थ। अुनर भारत-सम्बन्धा त्रिधार अदार थे। वे प जवाहरगन्तजाके मित्र थ। चर्चितन जग्न था हा समय पट्ट हम्वे साथ मधि वरन जस विपम वावक त्रिअ माग्वा नजा था। यद्धमें यन्त रूसक साथ मित्रता हा जाय तो जमनीका ह्वाता मभव हो सकता है विन्वयद्धका अुन्टा वहनवाग्न प्रवाह साधा होनर मित्रराज्योकी जीत हो सकती है यह दष्टि अिसमें थी। और अिस वायम त्रिपुत्रको सफलता मिते। असवे बाद चर्चितन जग्न अपन मन्त्रिमन्त्रमें बडा पन्त त्रिया और भारतकी वठिन मन्थी मुन्तज्ञानक त्रिअ जग्न भारत भजनरी घापणा का। चर्चितन वन्त कि जापानी आक्रमणक कारण भारतका मामन्त जितना गभीर हो गया है त्रि अिस त्रिगही रक्षान त्रिअ अमका मारा बठ अिम आक्रमणक विरुद्ध लगा देनर त्रिअ त्रिगदु वरना चाहिय।

३

२२ माच १९४२ को त्रिपुत्र दिल्ली पहुच। अिस समय वाअिसराव पन्त पर लाड त्रिनिशियागो थ। त्रिगनी पन्चत हा तुरन्त त्रिपुत्रन अपना काम गुरू कर त्रिया जोर चर्चितन-मन्त्रकारन जो घापणा वरनका ताम जग्न सौषा था वह अहान कर दी। असका सार यह था

१ विन्वयद्ध सतम हानने बाद तुरन्त भारतका त्रिया सविधान त्रिया वरनक त्रिअ जब सविधान-मभा चना जाय। अुसमें देगी गन्थ भा नाम

७ सुकें जसा व्यक्त्या रखा जाय । तिम प्रकार ता मविधान तयार हा जुमका जसा बगनकी जिम्मेदारी त्रिटिंग सरकार हा । जुममें कुठ गर्ने रयेगा । व य हू कि काजा प्रान्त यति तिम मविधानमें सम्मिलित न हाना चाहत जाय वनमान स्थितिमें रहना चाहत ता रत मकता है और वाजमें सामिल हाना चाहत ता न मकता है । अथवा य प्राप्त अपरक डग पर हा अपना जसा मविधान बनाना चाहत ता बना कर सगर्न ह ।

८ विन्वयुद्ध चरु अम वाच और नया मविधान बन जाय तब तर भारतका मन्तव्य-वाय ता त्रिटिंग सरकारकी ही बनना हाता । हा, यह मन्तव्य मकर जगम बरनक त्रिभ जनतामें ता काम करन चाहिये, व भारत-सरकार और जुमका प्रजा जबर कर जुम बनका जिम्मेदारी जुनका हाता । त्रिस्तित्त त्रिटिंग सरकार भारतया जनताक मुख्य समूहवि नताजाका मद्भाग चाहता है । मार यह है कि व कद्राय सरकारकी कामकागिगामें गरान विय जाय ।

४

अपराक्त घोरतामें त्तारे टुकर बनका राज माफ त्रिवाजी तेना है । त्रिदू और मुमन्मान कीमें जेक बनकर न रह ता जसा हाना अनिवाय था । त्रिभा यह स्पष्ट है कि अग्रज गंगाका पूर टाकर राय करनेका भन्तावि भा मकर हा मकता था । अथान् त्तारे प्रजा गरीबकी साम्प्रदायिक नन्भावका समजाराका एत अग्रज गजनातिता द्वाग जडा मकनका ता मौता या जुन त्रिभ द्वाग त्रिचित्त त्तमावतक त्तमें पग किया ।

औ त्तमागत सामन-नत्रका मता मौरनक त्रिस्तित्तमें यह कहा गया कि जुम त्रिटिंग सरकार छा नहा मकता । और मान गजिय कि बना किया जाय ता भा जुमक त्रिभ वधानिक मुगाराका वानून बनाना पयागा । त्रिभ अनी त्तमाका धन्त हुजे ता यह मभव हाता नहा और त्तमाकार वा बनका वानून बनानका व्यवस्था त्रिभमें है हा ।

त्रिभर अथवा त्तमा सामाका मविधान त्तार करनमें भाग त्तनका बगना जायगा । अथान् त्रिभ बनया जायगा ? जुन राजाका हा या प्रजाका भा ? — यह त्तन नी अस्पष्ट था ।



समयगरी अज्ञाने जिगात्री। परंतु जब यह गांधीजी का पत्रक मिला तो सब तब तब पत्रक रखना चाहिए अज्ञान पत्रक का।

अपने मंत्रिमंडलमें भाग्य-मणीत कामें चर्चित्वा अपना हा राजनीतिमें थडा रखनेवाले जमरी नामक एक बट्टीगरीता मिला था। और १९४३ में ठाड जिन्जियगा वाअगराय-पत्रक निरस्त हो रि अज्ञान अज्ञान जा विज्ञान पात्र समानी ठाड वेवन्तो जग जग पर अज्ञानिया। जिगत बावत्र चर्चित्वा अमरी-वेवत्र त्रिपुत्रात कायकायमें हा अज्ञानता गंधीजीनामें आरम्भ करना पना यह गरी है कि यह गफ हुआ अज्ञान त्रिपुत्रात सत्तासे अज्ञाने वा है।

२

अतमें जो-नीन विस्वामें सफ्ट हुआ अज्ञान मंत्रिवाताका आरम्भ अज्ञानमें हुआ जिस सभामें जिप्स मिगान नाम दिया गया था। सर स्फत्र जिप्स विलायतक मजदूर-पत्रके अज्ञानता थ। जनने भारत-सम्बन्धा विचार अज्ञान थ। व प जवाहर-राजीव मित्र थ। चर्चित्वा अज्ञान था ही समय पहले रुमक साथ गंधी करन जस विपम कायके जिप्स मास्का भजा था। यद्धमें यति रुमक साथ मित्रता हो जाय तो जमनाका हराना गभव हा सक्ता है विश्वयद्धका अलटा बहनवाला प्रवात साधा होकर मित्रराष्ट्राकी जीत हो सक्ती है यह दृष्टि अज्ञानमें थी। और अज्ञान कायमें जिप्सको सफत्रता मित्री। अज्ञाने बाद चर्चित्वा अज्ञान अपने मंत्रि-मंडलमें बडा पत्र दिया और भारतकी कठिन गुत्थी मुञ्जानके जिप्स अज्ञान भारत भजनकी घोषणा की। चर्चित्वा कहा कि जापानी आक्रमणक कारण भारतका मामला अज्ञानता गभीर हो गया है कि जिस देशकी रक्षाक जिप्स अज्ञानका सारा बल अज्ञान आक्रमणक विरुद्ध अज्ञान देनक जिप्स अज्ञान करना चाहिये।

३

२२ मार्च १९४२ को जिप्स तिल्ली पहुँचे। अज्ञान समय वाअसराय पत्र पर अज्ञान लिन्जियगा थ। जिप्स पत्रकन हा तुरन्त जिप्स अपने काम गुरु कर दिया और चर्चित्वा सरकारन जा घोषणा करनका अज्ञान अज्ञान सौपा था वह अज्ञान कर दा। अज्ञान सार यह था

१ विज्ञानयद्ध खतम होनेके बाद तुरन्त भारतका नया संविधान तयार करनक जिप्स अज्ञान संविधान-सभा चुनी जाय। अज्ञानमें दली अज्ञान भा अज्ञान

७ सुकें जसा व्यवस्था रची जाय। जिन प्रकार ता सविधान तयार हा खुसुवा समर दगनका विम्मगरी त्रिटिंग मरकार ल। अममें कुष्ठ गर्ने रचेंगा। व य हू कि काजा प्रान्त यति त्रिम सविधानमें सुम्मिगिन न हाना चाः औ वनमान स्थितिमें रहना चाह ता रह सकना है और बाःमें गामिल हाना चाः ता हा सकता है। अथवा य प्रान्त अपरक टग पर ही बनना जः सविधान बनाना चाहें ता वसा कर सकत हू।

२ विन्दपुद्ध चः खुसु वाध और नया सविधान बन जाय तब तक भागनका मरक्षण-जाय ता त्रिटिंग मरकारको हा करना हागा। हा यह मरक्षण मरः टगम करनक त्रिः जनतामें ता काम करन चाहिये व भागन-मरकार और खुसुवा प्रता जः कर अहें करनका विम्मगरी खुनका हागा। त्रिसत्रिः त्रिटिंग मरकार भागनाय जनताक मुख्य मनूहारे नतायाता मर्याग चाहता है। मार यः है कि व कः मरकारका वायकागिामें गराक त्रिः जाय।

४

जपराकत प्रापगामें गः टुकः करनका वाज माः त्रिः आः तः है। हिन्दू जीः मुसलमान बोमें अक बनकर न रहें ता जसा होना अनिवाय था। जिनम यह स्पष्ट ह कि जपज गःका पूः गःकर राय करनका नःनानि भा मरः हा सकना थी। अथान हमारे प्रता गराःकी माःप्रःविः भःभावका वमदाराका गःन अप्रन राजनाःत्रिःका द्वारा खुग सकनता जा मौका था जन त्रिःन द्वारा अचिःन दःनावजःक ममें पः किया।

औ तःका गःन गःगःन-नःत्रका मःता मौपनक त्रिःमिःनमें यः कः यः कि खुम त्रिटिंग मरकार छाः नःहा सकना। और मान त्रिःविः कि वसा विचा जाय ता ना खुमक त्रिः वःयानिक मुःगाका कानून बनाना पःगा। त्रिःन अनी त्रिःआ चःत हूज ता यः मनव हागा नहा और त्रिःआक वाः वना कानून बनानका व्यवस्था त्रिःमें है हा।

त्रिमक अगःवा गःगा रायका सविधान तयार कःनमें नाः नःनका चःगाः जायगा। अथानु किम बुगया जायगा? जनः गःराःकेः हा या प्रःका ना? — यः प्रःन ना अःपः था।

अंग प्रवार जसरी मन्तार मूण हायमें गवक जसरी गिण्ट जसा चाज पनका यथ बात अंग प्रन्तारमें गवक था। अिसरी गिवा जाग चरर जव मविधान बन तर र्णी रागात्रा तथा मरिमम गग जिवाति गग जमकी रचनामें विविध विज्ञान और गगल पना करतका पूरा मामग्रा भा जमम मौजू था। अिसरिअ गांधाजान ता क्रिप्ता अिग प्रन्तारका भविष्यमें भननवाग गरमियाती चर थाया।

काग्रस और वाग्में मरिमम गग रोनान अिग प्रन्तारका अस्वारार कर गिया और अिस प्रकार यह मरिवार्ता महा अ्क मगा।

यह गाफ हो गया कि अिस असफरताका मूण कारण था चर्चिग सरकारकी भारतका सत्ता सौपनकी तयारी न हाना। माना गाचमें ही बात चीतका रावकर अचानक मर क्रिप्ता ता० १२-४-४२ क र्नि मधिवार्ता सफल न हो सकनकी घोषणा करक विगमत् चर दिय।

परन्तु अिस समयस अक बात जरूर चल पना कि गा प्रात टगपन करके अग्य रहना चाह वह असा कर सकना है। और राशाआका अिजन ता अग्रजाके हायमें थी ही। अिस प्रकार यह कहा जा सकता है कि पाकिस्तानकी भागका बीज और देणी राजाआका सवाठ दाता गाय पट्टी ही वार अक राजनीतिक दस्तावेजमें दज हुआ। अग्रज राजनीतिपाक पाम भारतक नताआक साथ अपना बाजा खरनक र्नि जा तुरपका अिकका था वह अिस प्रकार नाच अतारा गया जिसमे बाहक बाहर गिवाआ द। अिसम जब बात ता तुरत हुजी चर्चिगका युद्धवाग्में कुछ न करक केवल बागें वतानका साधन मिल गया। परन्तु भारतक र्नि गा क सचमुकका खल था। अुसका तो जाग बन सिवा काम] चर ही नहा सकता था।

## ‘भारत छोड़ो’ की लड़ायी

१

किन्तु मिशनर अमकृत हानका अमर पण विना कस रणा? भागवत मना बग और रण त्रिम चिन्तामें पण गण कि जव करा किया गय त्रिम अग्रताका पण का रणा यह राजनीतिक गत्या मुख्य ।

त्रिम प्रकार चिन्तामें पण रण मध्य रणाका रणें ता व त्रिमन गिनाय ता मकन ह

१ राष्ट्रीय दक्षिण भाग विचार करके चरणका नानिवाण ले रण

(१) काद्रम ।

(२) मध्य रण जसा पसरहित नतावग ।

२ जन हितका मुख्य दक्षिण काम चरणवाण बाका मद्र साम्प्रदायिक

(१) मम्मिम गण ।

(२) हिन्दू महानना तथा निक्म ।

(३) भावकरवाण हरिजन रण ।

रणा गणत्राण त्रिम समय कुउ नण पण या व ता मकोंपरि अग्रता गान्त्रायक शायमें थ । जव त्रिम समय गतरजक त्रिम भाण्टका चाण चणना नण चाण थ ।

अग्रत मणारका ना गाम चिन्ता नहा या कयाकि अमन मान लिया या कि साम्प्रदायिक भाण्टका पणर पेंक लिया है और मद्रकाण्टका मकन है त्रिमन्त्रि भारतका गणना पुनियाका त्रिवाकर तथा आन मच्च बनकर भागमें मरकारका गडाका चाण रणा ता मकना । अत्रिन्त्रि अनन ता अक त्रिमा वातका रण रणाय रणा और रणमें रण्ड त्रिन्त्रियाण रण थ कि भागवत मना प्रमुख रण जेक हाकर कात्रा निश्चिन् सवममन वाण कण ता हम अमक अतगार काम चरणका तयार है ।

२

अप्रजाका यह शय कुछ गरम हुआ माना जायगा। श्री गांधीजी और श्री सप्र यह मानकर कि अंग प्रजाका बीबी अन्ता पना करी हमें अप्रजाक पाम पदुचना चाहिये गंधिवाता करनन बारमें माचन लग।

अवड भारतन स्वरायन विरोधा साम्प्रदायिक दगाता यः अः मीका मिया। जिनः नामें मुख्य बी मस्मिः गः अगः अनुकरणः जिनः जनाके आवःकरः लन विया। दाना जिनः स्थितिः गः मः अः जिनः अः जिनः अपनी मायः पः करनः गः। जिनः सामनः विलुल नः जननका वात कहनकाः विरोधा साम्प्रदायिक दः यः हिः मः मः मः और मिकन। मुः मः लीगकः मायः वात करनवातामः वः साफः कः यः कि जरा भी शुकागः तो हम तुम्हारे साथ नहीं रहग।

जिन प्रकार एक बार ता अप्रज सरकारका भःवाणी दाकः खूब चल गया। सच्चा दुःख और गहरी परगानी तो काश्मकी था। एक तरःमः कः ता १९४ में अुमकी जो दगा थी वमा फिर नय और गभीर रूपमें पः हा गया। १९४० में मः दः निपधकः व्यक्तिगत सत्याग्रह द्वारा काम लिया गया। जिन बार असस भी वः चः कः मः अगया गया और वह था भारत छोडा की चनौती देना।

३

किष्म मिः नः कः जानकः वाः गांधीजीका आत्म-मयनः खूब वः गया। अन्हान सारी परिस्थितिका जसा निः नः किया कि जभा जो कुछ हो रः है वह निरा निरकुः नः का व्यवस्थित अधरः है जसे व्यवस्थित अधरका जारी रखनवाला अप्रजी सत्ताका हमार बीचसः निरः जाना बहतर है। भः हा जिससः देगमें जराजवता फः जाय यह जराजकता अप्रजा गाननकः याजनाः दः अधरसः जः मः स्वागतयाग्य होगी क्वाकि जिसमें देगके मः स्य नता आपममें मिः कर अपना पः सः का हः खोज सकग। आज अप्रज अपना रगः रामें बीबी हुआ भः नातिका खः सलवरः भारतयाः जनताका सत्त्व हरण कर रह ह यः तां एक महानः राष्ट्रकः साथः अः मने जीवनका विलवाड किया जा रहा है। यह स्थिति मिटना ही चाहिये। जिसका अकमात्र मागः यह है कि अप्रज भारत छाः कर चः जाय असा जः मः साफः वह दनका समय जा गया है।

जिम विचारना गांधीजी अपन हरिजन पत्रमें विस्तारस कह रू व और भाग्यकी जनता जनता जिम खचाका खपचाप ध्यानपूर्वक पान कर रही थी।

एक जगहना जिना अच्छा योरा हायमें आया ता था जिनान उमस अपने लड़ा मत्ता बाफा जमा थी। पत्राजमें था सिगलर हयानता जिम अमेंमें गजर गय। अनक सामन लाफा कुछ दवना पन्ता था। जब जसा स्थिति नहा रहा। जिम प्रकार अग्रज सरकारका तरह मुस्लिम लीगना भा जिस समय छूब बन आजा।

४

६ जुलाई १९४० को कांग्रेसका काममिति बधामें भिग। जनन मारा परिस्थितिका चातरफा अन्तजा ग्यावर यह प्रम्ताव पान किया कि नव तरहस खन हूज ब्रिटिश राधमतोकी तुरत भारतस हट जाना चाहिये तथा साम्प्रदायिक सवापनाका जोर यद्धमें जीतना भा गच्छा हू मिल सकगा। जमा हान पर भारतका जिम्मेदार ननाबग मिन्कर अपन दगावा वारोशर सभानका सच्चा वागिन बरगा और अुमक प्रन्तावा हू कर सकगा मुद्ध जातनक जिम भा व अिगलर मीन बगवराकी हैमिअनम विचार कर सकेंग। यमि जमा न हजा ता गांधीजीक ननत्वमें गजबाना गत लडाजा छू दा काय।

कांग्रेसका यह प्रस्ताव प्रकाशित हान हा बाकाय सब दल अनक रिद्ध अपना मन प्रगट करन ग्य। श्री राजाजाने कांग्रेस छान दा। था सप्र जिगा बगरा ग्याआक लिज कांग्रेसका अिल बुन्त पुकारन ममान रूपमें विगाथा थ। परन्तु आम जनतान अिन पुनारका हूअन स्वागत किया। और ८ अगस्त १९४० का आजागीका यम अनिम लडाजा शुरू हा गजा।

सरकारन जमा तिन गांधीजी काग कांग्रेसका ननाजाने जगवा हूमर जनक गमाता परडवर जलमें डाक दिया। और जाग बन्दर गान् जिनिन्दगीन गांधीजी पर यह अिगलर ग्याया कि आपन छिन तीर पर जायाना पनका महायना दना जिम यम नूफान सन किया थ। जिममें अग्रतारा यह लद ना स्पष्ट था कि बाह्यर ग्यामें गांधीजीका गन्ता पर लिखाया जा नक और भारतमें बर रहा समन-जायना जकरा दनाया जा सक। जिम जिगलरका शूरा गांधीन करना जकरा था। यह काम गांधीजीन जन्म भा दिया।

गांधीजी गवर्नर अिस अिन्त्रामाता वडा रिगप रिप्या और जना निर्णयता वसत्रमें २१ दिनता जपयाग वरन तारा वरम जपया जिगमें व मरन मरन वव । परन्तु वरमें वरन्तुवा वामार हा गभा जीर वहा जनरा अवगान हा गया । वुता ल्गभा अिन्त्रामे गांधीजीरा मरन्तरी तत्रका तरफम वापा तत्राग और मानगिा ध्यया गन्ना पनी ।

रन्तरी छिडनन थाड हा दिन वाट वापगी कुछ रागान — गाम तीर पर समाजवाणे विचारधारान रागान — गैरभरमें नाड फाट्टा तरारा अलिपार किया । जिमक विरुद्ध गांधीजीन जन्म और ग्राटर आकर ना अपना मत प्रवट किया कि यह हिमा हा थी जम जट्टिमर वरम नहा कहा जा मक्ता ।\*

## ५

जन्म गांधीजीन राड लिन्त्रियगाव माय पत्रा द्वारा वानचीनरा गांधीन जारा रवा था परन्तु अुगम वाओ गाम लाभ नहा हा मका । वाजिमरायन कुछ भा न करनवी ल्गभग गाठ वाध थी थी क्याकि यट वक्ति चर्चिन्त्र धारण का थी । जिमलिअ लिन्त्रियगा जो केन्द्रीय सरकारमें जिम्मगर गामन जारा करनका विगप अ य र्कर मात वप पहुट भारत आय थ अिस लिगामें कुछ भी कर न मक और ता २ - १ - ४३ को वापस चट गय । अनका जगह लाड ववट वाजिमराय वनकर आय । भारतमें अिस समय वमा ही निरकुण गामन जारा था तसा कपनी सरकारक जमानमें अग्रज गवनर करते व । अपवाट-स्वरूप मरिन्त्रम लागवी मत्तावाट तीन चार प्रन्ग थ ।

वापसकी अिस उडाओम मधिवाता आन्टिकी सब वानें दव गभा और जक वात स्पष्ट हो गजी कि भारतका प्रन्म मूठमें बिन्नी सत्ताका वट्टनका हा है जीर यन्ति जग्रज अिस न समनें ना भारतकी जनता जनकी भन्नीनिमें फमकर अिस मूल वाका भल न जाय । अिससे भारतका राजनीतिक वागावरण माक हुआ और राजनीतिक सत्ताके परिवतनका मूठ प्रन्म सामन राया जा मका ।

\* ७ दिसम्बर १९४५ का हुआ अपनी वरन्म वापस वापसमितिन भा जपन अक प्रस्तावमें अिस नीतिका निपध किया था ।

## लडाओका अंत और नयी ब्रिटिश सरकार

एक बवलक वाजिमराय-मल पर आने हा तुरत भारतक प्रान्त और जुमका हल करनकी बातचातन नया रग नही पकन। भारतका गुयाका कुजा चर्चिक पास था वह न घूम तव तक वाजिमराय क्या कर? तव तक अम प्रचलित नातिका ही ग्टत करनी थी। और बवन्ने गुल्में यहा किया। न्हान गाधीजाक साथ जलमें जा पत्र-पत्रहार हा रहा था अममें बताया कि आप पद यह स्वीकार काजिय कि आपका लडाओ भूभरा है अमने वाट कुठ हा सकता है। और कुठ भी कर सवनक लिअ सबका अकमन पर तो जाना ही चाणिय। नहा तो अग्रज सरकार जिम कणि युद्धकायमें भग क्या कर सकता है?

दूसरा आर गगकी तरफमें श्री जिघान अज तक अपनी बाजा तमा नी और कायमक भारत छाना सूत्रका मुधार गगका तरफमें (जिम्वर १ ६२) घापिन किया दगका विभाजन करा और चर जाओ।

फिर भा अपन मनमें वेवठ स्वय जा साचन गग यह यह था कि अज यद्ध समाप्त हाना लिवाओ दना है। जिमलिज यद्ध खतम होनक वाट जिमनका कुल न कुछ तो करना हा पन्गा। ता फिर अमका यात-यद्धत अत्र अभीम लगाना करा न गर कर लिया जाय?

यह विचार पकवा करनक लिज बन्ने अगम्न १९४४ में मव गवनरानी परिय लिंगमें बुलाओ और अमक मानन यह विचार रपा। मव गवनर अिगम महमन हुज। य गत किया गया कि भारतक विविध दगक नताजान मिन्तर अतरिम बालकी कामचगाओ सरकार बनानक वारमें जनम चर्चा का ताप। यह अगर बाओ जा मक ता बतमान कानूनक मानहत रह कर बनाओ जाय। दूसरा आर स्वतत्र भारतका मविधान नयार करनक जिज मविधान-मना बनानका प्रपल किया जाय। प्रानामें गकप्रिय मनि मदर फिरम बनाय जा सवन है या नग जुमकी भा ताच का ताप।



अंग प्रसार यद्वात्त गव गागराता मर-मम्मति गाय सत्रन  
जपन विचारकी रूपरगा भारत-मत्री ता जमरात पाग भत्रा। जमराता  
यह याजना अच्छी नहीं लगी। धुमन अपना दूगरी याजना बनाया जा  
ववत्का वत्त पमत् नहीं जाया।

सरकारी धनार्थे खानगा तोर पर यह गत्र हा रत्त था। अिननमें तां  
सप्रून फिर कुछ स्वतंत्र दत्तक भारताय नताआता मत्तन गाय जक और  
याजना सावजनिक रूपमें पग की। अिन मत्रता तुरत काआ परिणाम नहा  
निक्का। परंतु जक वात अग्रज त्तन जळर निश्चित कर ता रि भाग्याय  
नताआके जकमत पर आनकी जिम्मारा जहा पर छात्तर मत्तीति खलन  
रहनस जक काम नहा चरगा जसक वजाय अब अिननरा यह त्रिपाना हागा  
कि भारतके सम्बन्धमें सचमुच कुछ करनका जमका अिराग है। अिस  
त्रि भारत-मत्री था जमरीन यहा तक विचार किया कि अमा नाति  
धापिन करक आग वत्त जाय कि भारतका अिननकी बराबरक दत्तवाग  
औपनिवेगिक राय बनाकर जस अपना कारवार सद चरानकी स्वतंत्रता  
देनी चान्थि जिसक बिना यह गत्या गुत्तन नहा सकती।

ब्रिटिश गसकाका यह विचार भारत छोटा सम्बन्धा गागजाक  
विचारकी नतिक विजय मानी जायगी।

दूसरी जोर लीगका भा बोत्वाग वत्त। ली जिज्ञान असा निरकुग मत्ता  
प्राप्त का कि मुसलमानाका तरफसे व जा कह वहा हा। गाधीजीन जिज्ञाके  
साथ ममशोनकी बातघात की वह अगपत् रनी। और मन्ति तुरत मत्ता  
परिवनन करना हा ता ममशमानाका आधोआध सत्ता दनी चाहिय जमा  
दावा लीगन यकिन प्रयक्तिसे सत्ता कर लिया।

वेद्राय विधान-सभामें वाप्रस-त्त जोर लीग त्त थ। अनन नता  
ली भूलाभात्री दमाना और थी लियाक्तअत्री खान भी मिक्कर समस्याके  
हत्का जक रास्ता सोचा। परंतु जहा हत्की आगा ही नहा था वहा  
यह सारा प्रवत्त यथ सिद्ध होनक सिवा रीर क्या हाता ?

फिर भी अिस सबमें स यह सार जहर निक्का कि भारतका प्रन्त  
निपटाय बिना अब काम चल ही नहा सकता।

जिमतिद्र माच १९४५ में वेत्त भारत मत्रीस मिळन त्तन पत्त।  
दो महान वात् ता० ७-५-४५ का जमनीका पतन हुआ जापान बाका रह

गया था मा जमका ना पतन समाप्त हा था। अिमम सरकारका गग कि भारतीय समन्वयाका जीर भा तरंग हए करना चाहिय।

४ जून १०४५ का लाल बक्श भाग्न गेट तार निम्नमें अज्ञान भारतीय नवाआका अक सम्मग्न गगया। अमका मख्य प्रयाजन वाजिमगायका नआ रायकारिणी बनाता था जिन्में गकमका प्रतिनिधित्व हा। पत्रका तरट्ट जिम परिपदना भी तुरत काभा ताम परिणाम नहा निकला। गगन हठ पकडा कि अमका यह गवा स्वाकार किया जाय कि बहा अवमाय मुस्लिम प्रतिनिधि-मस्या है। जिम वाग्रत कस मान मक्ता था? जिनिग्न बात यही अटक गजा। कौमा अकता मायकर काम करनमें वाग्रत जीर लाग गराक न हा मकी। लीगत असा करव भा अपना भाव जीर बना लिया।

अब आग क्या किया जाय यह मवाग ता खडा हा था। अिनतमें दा बाने नजी हुआ। अिमग्न फिर गुल्या मुकसानका गस्ता निकल गे अम आजमा कर देवतकी सभावना पना हुआ। वे दा बाने था (१) गिनमें नया चुनाव हुआ जिममें चबिगल हारा और अगका मजदूर जाना (२) जापान पर ता० ६-८-४५ का अणुम गिराया गया। नौ तिन बाद ता० १५-८-४५ का जमनाक पचात जापान भा गरणमें आ गया। अद गडाआक बहान भागतका प्रत म्यगित दा गिलाजामें नहा रखा जा मरता था। बलिन यह तय हुआ कि अल्लिम सरकार बनानका बात ता टाक अब भारतन स्थाया हलका विचार करना चाहिय। अतमें चबिगका यरावर भा नहा रहा। यह भी म्पतिम बडा परिवर्तन हुआ माना जादगा।

गिनकी मजदूरका सरकारन अपरावन गलिम भागतक विषयमें विचार गरू किया। अस सरकारमें मर स्फड गिनन अक प्रभुय मशा य। बुन्दान मुद्राया कि भागतमें अय नया चुनाव हा कराअ अुमर जागर पर आग बढना आगान गगा। कगय विधान-सभाया १ ४ में जीर प्रान्ताय विधान-नभाआका १९५ में चनाव हानर बाद गुदारा चनाव हा नहा हुआ था। भारतन गगान चनावका बातरा स्वागत किया नाकि मुदकागना निरकृग अग्रजा राय हए और भारतन राजनातिक मत्रमें कुछ नभा और गुग हका बहन गग।

जगत् अन्तर्गत वाणिज्योद्योग घाषणा की जोर दत्त भा कप्त रि य  
यत् द्वारा भारत-मन्त्री मित्र विन्यास जायेंगे।

ता० २१-८-६५ का यत् घाषणा कप्त २४ का वयत् विन्यास  
त्रिभू ग्याता हुये। वयत् १६ मितम्बुत्ता जोर। जोर नञी त्रिभू गम्बुत्ता  
जारा १९ तारावत्ता यत् घाषणा की गभा रि चनार सनम हानर यत्  
मन्त्रियान-सभा बनानका कारवाभी का जायगा ताहि वह भारतता सनम  
मन्त्रियान तयार कर।

अिम बीच देग मन्त्रव कामारा भा जचित सगस सभात्ता जरूरी  
या। अिसत्तिअ चनाव-काय पूरा होनक वात् भारतन प्रमुय राजनानि  
त्तास समयनवाञी नञी कायसारिणा भी बनाना जरूरा या। जमा गभ  
निष्ठा प्रगट करनका रि यह काम त्रिभूत्ता सचमच करता ही है मजदूर  
सरकारन पारिष्यामण्टक १ सत्स्याका अक प्रतिनिधि मन्त्र भारतीय नताआम  
मिन्त्रक त्रिभू भारत भजा। वह जनवरी १९४६ में भारतका भ्रमण करव  
गया। चनावका समय हानक कारण अुम प्रत्यभ देसनको भी काफी मित्र।

अिसत्तिअ देगकी राजनीति चनाव पर केन्द्रित हुञी। काप्रमन सपूण  
सगनन्त्र आधार पर यह काम जारम किया लागन पाकिस्तानकी माग  
पर। अिन टोना दगेञ बीच कोञी समझौतका माग न निकले ता  
कठिनाआ स्पष्ट थी। कायसन अिमके त्रिभू फिरस प्रयत्न किया केकि वह  
वहार रहा। अग अत्र अपनी पाकिस्तानकी नाति पर अधिनाधिक दूत्  
हाना गञी। अिमके सिवा जमन जनतामें दगे तकने जादोत्त चगनका  
काम छत् लिया। मतत्ब यह कि जब तक जिजा साहब लीगके नता रह  
तत्र तक कौमी जकताकी बात मुश्किल ही थी।

## अतरिम सरकार

विधान-सभाका चुनावका परिणाम काग्रस और लीगका मात्रा जी जीतक अनुसार आया। पहला चुनाव काग्रस विधान-सभाका हुआ। १९८ व अन्तमें अन्तक परिणाम मात्रा ही गय। अन्तमें १०० वटकामें स काग्रस ७० और लीग २० वटक जीता था। ताना जिन परिणामस घयता जनभव का। तानाक बीच साफ गहरा खाआ है यह और ना स्पष्ट हुआ।

ता० २८-१-४६ का कन्द्रीय विधान-सभाका पहला वटक हुआ। वाजिमरायन अन्तमें सामन भाषण दत हअ आगकी नानि फिरस बनाआ और कहा कि अब अतरिम सरकार बनान और सविधान-सभा प्रगानका काम हागा।

लीगको आगा बधा कि अन्तमें जा गागा अन्तमें गिरकर अटक गयी थी वह अब गहम बाहर निकलकर चल्न गयी।

प्रान्ताय विधान-सभाका चुनाव बादमें पूरे हुए। अन्त परिणाम लीग अन्त अपराकत दग पर ही आय। अन्त आधार पर मन्त्रि-मन्त्र भा बहा बन। या ता लीग पाच प्रान्ताका अन्तना माननी था परन्तु अन्त मन्त्रि-मन्त्र कन्त मिय और वगायमें ही बन और सब जगह काग्रस-सरकारें मत्ताहूँ ग्या।

गड वेवन्त अब आगे चल्नमें अपराकत दा वानाक मिया प्रान्तामें काग्रस-ग-महयागका समव बनानकी कागिग करनका तामग काम ना मनमें गाच गिया था। सारा सवाय काग्रस और लागक दा दलाका विया तरह मियाकर भारतका गाय अन्त गीप तनका था।

ब्रिटिश सरकारने अब समस्याका हूँ निवानक लिय मन्त्रि-मन्त्र ही तीन मन्स्याना मियन भारत भजनकी घोषणा का (ता १०-२-४६)। पार्लियामन्टमें दूसर महीनमें जा चचा हभा अन्तमें प्रधानमन्त्रा था अन्तना कहा कि भारतका प्रान बन गभा है अन्त हूँ करना ही हागा काजा अब अन्तमस्यक दल अन्त गियायगा ता अब अन्त नहा चल्न गिया जायगा।

कमिन्स मिशन ता० ४- -४६ का स्थिति आया। पूरा तब मात्र  
यह कामें स्या। तब मुख्य स्थिति मिशनरों का जो था वह सारा जम  
गफ्ताना नहा मिश्री। जिससे ता १६-१-६ का मिशनरिग कावरीतो  
फरारस्य रिम निष्पन्न पर पन्चा अगि गम्भयमें जगन प्रपना धारणा  
प्रग का।

यह धारणा वाक्का मारा वातवात जीर सविधानारा मुख्य स्थिति  
वना। जिसमें जगन साफ पापित्त किया कि (१) मिशनरों का भाग  
करके स्वतंत्र दा राय वातवाती मिफारिग नहा कर गरता। (२) दाी  
राय अत्रजा माभ्यायमें आनम पट्टे जस आज्ञा थ अमा स्थितिमें जीर  
तामय यद्यपि दाका सविधान तयार करनमें व जरर भाग उँग जीर जममें  
भरनर महवाग देंग। (३) नया सविधान तयार करनमें मुख्य कौनमा वातें  
ध्यानम रखना हागी अिस वारेमें यह निर्णय किया गया कि ब्रिटिश भारत  
जीर स्त्री राय तानाका अक यनियन-राय बनगा। अमक प्रात  
मिशनर अपन अप-ममह राय बनाना चाहे ता बना सकेंग जिनका विधान  
मभा कायकारिणी आदि अग्न वनाओ जा सकेंगी। (४) सविधान तयार  
करनका काम करनवाली सविधान-सभा किस रगसे बनाओ जाय अिसका  
स्पष्टता की गभी और व किन पद्धतिस अपना काम करे अिसका भी  
जममें निर्णय किया गया। भारतमें रायमत्ता रागक हाथमें जाय तब जममे  
पन्हा हानवाट कुछ मामडाक वारेम सविधान-सभाको ब्रिगनक माय अक  
मरि करनी हागा। तथा (५) यह काम होन तक बीचके समयका मारा  
प्रवाय गभातनक अिअ भारतक मुख्य दडाकी वनी हुआ कामचगभू  
सरकार बनाओ जायगा जिस गवनर जनरल जीर ब्रिटिश सरकार पूरा  
सहयोग और सहायता देंग।

जीर अिस प्रकार काम जाग वगतका प्रयत्न लाट वेवग्न प्रारभ  
कर लिया। पन्हा काम अतरिम सरकार बनानका था। सविधान-सभाका  
चनाव भा गर करता था। नओ सरकार बनत ही सविधान-सभा बुडाओ  
जानवाती था जिस सविधान बनानका काम गरू करता था।

अतरिम सरकार बनानका काम गरू हुआ। परन्तु अिसमें वेवलको  
तरत या वाछिन सफलता नहा मिश्री। अक या दूसरा अतराज अठाकर  
राय अिसमें आनस जिनकार ही करता रही। पहल असन मिशनकी ता० १६

मजीदानी घापणा स्वीकार का था। वाम बल्कर अम स्वीकार कर दिया। ब्रिटिश सरकारके अिधे यह बग कठिन प्रश्न हा गया ता क्या काग्रमन जिनन यह घापणा स्वीकार का है सरकार बनानका कहा जाय? अिन पर गग क्या खया अपनापनी?

अिस परगानाका ग्ज जमन जमा निकाला जिनम आग बग्म बगानमें मग्ज मिग्ज। और ता० ६-८-६६ का गग्ज बवग्ज काग्रमका सग्ज भना कि बग्ज अतरिम सरकार बनानमें मग्ज करे। यह सरकार कितन आग्मियाका ग्ज अुममें त्रिभिन्न जातियाका किम हिमादम कितना प्रतिनिधित्व मिग्ज अुग्ज नाम कौन बनाय आग्ज तरह तरहक मवाग्ज अिमदे माय तड हुग्ज थ।

ग्ज बवग्ज अक बार ता काग्रकारिणीस मग्ज्याने नाम वगरा काग्रमक माय मिग्जर तय बग्ज अिय और अुग्ज ता० २-९-६६ का पग्ज पर बडा दिया। अिममे मुग्जिम लागक श्राग्जका पाग्ज नहा रहा। अमन सीधा कारवाजी छग्ज तनका प्रस्ताव पाम किया था। दगमें — ग्जस तीर पर बग्जवत्तमें — साग्जप्रगयिक् दग गग्ज हा गय। लीगन अपना जद्दय पूग करनक् अिअ हग्ज कर दा। या कहिय कि दगका जनता और सरकारक विग्ज्द गग्ज विद्राह करनका फर्मनि निकाला।

अतरिम सरकार जम सत्तास्थानम गग्ज बचिन रह गग्ज अिमस अम बग्ज जाप्या दुग्ज। गग्ज बवग्जक माय कुछ बातचाक् बग्जक वाग्ज था जिग्जान अुममें जगन पाक् मग्ज्य भजनकी तबारी अिग्जाआ और ता २६-१०-४६ को बग्ज लिय गय।

अिम प्रकार अतरिम सरकार मव दग्जि सग्ज्याका ग्यक्न सरकार बनी। स्पग्ज है कि अक मत्रि-मडग्जक रूपमें अन दगक मग्ज्याका अक जमान बनरर काम करता चाहिय था और तीगका गविधान-मभाव आगक काममें मग्ज्याग दना चाहिय था। अर्थात् अुम कविनग्ज मिग्जानका १६ मजाका घापणाका फिरम स्वीकार करना चाहिय था। अिन प्रकारकी स्पग्जना भा वेवग्ज लागत मग्ज्याका ग्ज ममय जिग्जाक् माय कर ग्ज थी। परन्तु तीगन शानामें ग्ज अक भी बचनका पाग्ज नग्ज किया और अतरिम सरकारमें भा दगका कौमा पग्ज पद्दय गग्ज। सरकारा बग्जग्ज्या-नत्र और सना तकमें यह भा पग्ज गया।

दुग्जरी आग्ज दगमें मुग्जिम तीगका गाधा कारवाजी क ग्ज और प्रग्जान हात रहे। गारी पग्जिस्थितिमें गनापका बात जिननी हा था कि दगकी

स्यानस्य यात्राया नाय भवराग घिया हान पर भी चर रहा थी। गाग मराठ  
 जतर राजनानितना और अुत्त त्नाप्रमम आग यङ्गना था। परन्तु त्रिभार  
 अक्मात्र ननुत्तमें काम करनवाग तीग मुयत्माना नाम पर ता रागागा  
 अपनी त्रि पुरी करन पर तुडा हुआ था त्रिमत्त्रि पग पग पर जापनिया  
 जठनी हा रहना था। त्रिटिंग सरकार यत् मज हान दुअ भा भाग करना  
 चाहती है अिस विन्नामम भारताय जनता मारा घटनाआरा त्ना त्ना था।  
 अिस तरहका विन्नाम-अत् अमा कर्त्तन परिस्थितिमें भा बडी भातरता त्ना  
 था। त्रिटिंग सरकार अिस बत्का विमा भा तरत् जाच आन त्ना ता  
 अमकी मारा गाडा जुत्त जाता और फिरम भारताय जनताक लिअ त्नागागा  
 माग त्नाका मौका आ जाता यह स्पष्ट था।

१५

## सविधान-सभा सम्बन्धी गतिरोध

अतरिम मित्र सरकार ता २६-१०-४५ को बन गत्रा थी। वान्में  
 अस सविधान सभा बुलानका काम करना था। मस्त्तम लीग अिस मामलमें  
 जानाकानी करन लगी। कबिनट मिगनका घोषणापत्र स्वीकार करनक  
 बारेम जसन त्नापरवाही त्रिवाआ और सविधान सभाका फिट्हाठ स्थगित  
 रखन तककी बात बहा।

ता ९-१२-४६ को सविधान सभाकी पहली बठक करनका विचार  
 किया गया था। अगर वह ताराय टल जाती ता अुसका अमर त्नाकी  
 जनता पर खराब पडता जितना ही नहीं मिगनन जो काम हाथमें त्रिया  
 था जसके बारेम त्नागोका त्नाका हान त्गती। अिसत्त्रि त्रिटिंग सरकार  
 र्क ता सकती ही नहीं थी। परन्तु असा मात्तम हाता था माना वह  
 तीगका तरह तरहकी मीन मय निवालनक त्रिअ प्रात्साहन द रहा हो।  
 क्पाकि अ्चिल-दल त्रिटिंग आभी सी०अम दल वगरा जनार्ते भीतरसे  
 और बाहरसे तीगरे साथ मित्कर अत्तजना प्गती थी।

लीग सविधान सभाका काम चगानक त्रिअ विसी भी तरत् नहीं  
 वकी। अत्तमें वाअिसरायत ता २०-११-४६ का सविधान-सभाके सत्स्याकी

## सविधान सभा सम्बन्धी गतिरोध

सभाक निमंत्रण भज न्यि। जिसस लग सूत्र चिन्त गजा जीर जुसन न्या कि अुसन सत्स्य अस सभामें न जाय। अुसन यह भी वता मिगनका घापणा गगन स्वीकार नहा का हं जीर २७ जुगजीका बम्बथा प्रस्ताव ज्याका त्या कायम रहता है।

अिमने बावजूत गीग अतरिम सरकारमें ता बादमें आ गजा थी अुसमें रहना भी चाहती थी। फिर भी कबिनट मिगनका वह घापण अुस स्वीकार नहा करना था जिसक अनमार वह अतरिम सरकारमें सवता जीर रह सकती थी। अल्ट दामें अमकी आरम सीधी कारवा दग बगरा भी हो रहे थ। जीर अनमें सरकारी नौकर भी माम्प्रणा रग अस्तियार करव काम करत थ तथा अुनक मंत्री अह खुग प्राल्म दन थ। या कहिय कि गीगन सरकारमें रहकर माना अमके विरुद्ध बगावत अलान कर न्या था। जिसने अग्रज सरकार कुछ करता हा नहा या कु कर नहा सननी या करना नही चाहती—असा मयाग लोगामें पना हा लगा। १९४२-४५ की अवधिमें गाधीजी जीर काग्रमका कर्ममें खनका लाड बवलम यह भा पूछा गया कि अत्र ब्रिटिश सरकारका नातिने विरु सुग विद्रोह घोषित करनवाणी लीगका कुछ कहा क्या नहा जाता ?

अिमने विरुद्ध गगन अपन बचावमें काग्रसक विरुद्ध अिन्जाम लगा कर कहा कि वह भी ता मिगनका घापणापत्र पूरी तरह नहा मानती है। अिमन जवाबमें काग्रसन स्पष्टता की कि काग्रन अम पूरा तरह मानती है। जीर अल्टकर अुसन यह सवाल पूछा कि लीगक साय मिन्कर ब्रिटिश अधिकारा अभी तक भारताय स्वराज्यने मामलमें भन्नीति चला रह = या नहीं ?

मारी बातका मार यह निक्कता था गीग ब्रिटिश गताक साय मिन्कर पाकिस्मानका मौग ता पक्का नहीं कर रही है ? अभी हायतमें काग्रमन कहा कि या ता गीग सरकारमें रहकर गान्तिपूवक काम कर नहा ता अुसमें ग हट जाय यदि अमा न हागा ता काग्रम सरकारको छोडकर गामें फिरग अपन गम्ने पर चरनका निक्क पडगा।

अिग गतिरायका गुल्मानर अिअ ब्रिटिश सरकारन प्रमुख ग्यके पुन दुश् नगाआता लग्न बुगया। व गय परन्तु कात्री हट नहा निरग। व जग गय वग हा भारत जीग जाय।



ता ०-१२-६६ को सविधान-सभाकी पन्जी बन्द हुई। लीग का सम्बन्ध अगले अध्याय में वर्णित है। सभा का सत्र समाप्त हो जाने के कारण अगले अध्याय में चुना। पश्चिम जमाने के लिये सविधान अध्याय सभा के लिये प्रस्ताव रखा। यह काम अगले सत्र ता ० २०-१-६७ को फिर मिशन के लिये करके सभा स्वयं करके गयी। जिसमें विचार था कि जिस बीच जागृत मन्त्र सभामें जानना राजा हो जाय ता अच्छा।

लीग का आपत्ति जगत् था कि कुछ प्रश्नों का समाधान करना था। जिसमें पंच था कि जिस दंगल जागृत अथवा पाकिस्तान के लिये प्राप्त कर सकती थी। काश्मीर कहा कि लीग की भी भावना कि प्रस्ताव सविधान के लिये स्वीकार नही करना पड़ेगा यह सारी याज्ञना का मूल आधार है। समूह रचना के बारेमें भी यहाँ मिशन जागृत था। काश्मीर प्राप्त या असका महत्त्व का भाग समझमें जाय ही जिस प्रकारकी चीज अगले पर जागृत ब्रिटिश सरकारकी घोषणा के बाहर है।

ब्रिटिश सरकार ने जिस झगड़में लीग का पक्ष था कहा कि क्विंट मिशन का घोषणा का जब लीग जो समझना है वही जानता है। जिसमें लीग का पक्ष था।

जिस परिस्थिति में देश का काम न हो कि जिस दृष्टि से काश्मीर यहाँ तक कह दिया कि हम अगले समझकर भी जागृत बन्दता तयार हैं परन्तु जिसमें बात स्पष्ट है कि किमा भाग को काश्मीर जगत्स्वी न रहना परन्तु और अगले मजदूर सविधान स्वीकार न करना परन्तु — क्विंट मिशन जिस स्वीकृत मिशन के ध्यानमें रखकर हम चर्चेंगे।

स्वाभाविक रूपमें लीग को जिसमें सन्तोष नहीं हुआ। वह तो यही चाहता था कि जगृत अथवा सोचे हुए दंगले काम हो। और अगले जगृत ब्रिटिश सत्ता के तीसरे दृष्टि का पक्ष काममें लीग का रास्ता अपना रखा था। जागृत बन्दता जिसमें काश्मीर आपत्ति नही मान्य होती थी।

सविधान-सभा का पक्ष ता २-१-४७ को फिर हुआ। अगले अध्याय के प्रस्ताव सभा पक्ष किया। कुछ महत्त्व की बातों के लिये समिति का नियुक्त की। जगृत कुछ स्थान जागृत जिस खाली रख गये।

लीग की कार्यकारिणी समिति की पक्ष ता २९-१-४७ को हुआ। अगले अध्याय यह प्रस्ताव पक्ष किया कि क्विंट मिशन की घोषणा व्यर्थ सिद्ध हुई है जिसमें अगले अगले किया जाय और सविधान-सभा को विचार दिया

जाय ! और यह स्पष्टता का कि भाषा कारवाजी का धुमका प्रस्ताव वायम है।

शिम प्रकार गगन हूँ हा कर टा। अब क्या किया जाय यह बड़ा मवाल बन गया। अन्तरिम सरकार का प्रसा और गर-मुस्लिम अत्यन्तवाक्य मन्म्यान वाशिमरायका शिमित मन्मय भजा कि अब गगन मन्मयमे त्यागपत्र मागना चाहिये क्याकि गगन हूँ कर टा है। अमन कबिनट मिगनना घापणा जीर मविधान-सभा गनाका निरम्मा हा नहा माना है, वल्कि वह गगनें खुद तीर पर विद्राहका भन्वा रही है। ता० १ -२-४७ का गगन वरन्का अब विगप पत्र शिमकर जवाहर्गगगनान शिम मामन्का तुगन हूँ निवागनका उम्मत पर जा र लिया।

शिम शिमिम शिमिम कबिनटका वाचनें पन्ना पग जीर ता० २०-२-४७ का प्रवानमत्रान शिमिम पाशियामपन्ने फिर अब वरन् मन्मयपूण घापणा की। अमनें कना गया कि जून १९४८ म पन्म शिमिम सरकार अपना भारताय हुक्मन गगनिम गगन हायामे मौसकर भागन छाड गगा अयान सबका स्वाकाय मविधान जननन वा अमक अनुमार जा मतात्रे स्थापित हागा बुहें वह गगना हुक्मन मागगा परन्तु यन्ि उन १९४८ तक अमा न हा मवा ता भा सत्ता ता निश्चित तारीखन पहेँ मौप हा दा नायगा दयना यहा हागा कि वह किन मौप जाय।\*

शिम घापणाम गात्रीजाकी भागन छाणा का मागका मपूण मायकता और मयता मावित हुआ। उन तक तामग दूँ वाचनें रहे और मन्म सलाना

\* शिम मन्मयनें धुरराकन घापणापत्र (परा १०) क गगन शिम प्रकार प

परन्तु यन्ि यह शिमिजा द कि जुपराकन पग ७ में बनाय गय ममय (अयान जून १९४८) म पहेँ असा मविधान पूरी तरह प्रनिनिधित्व गगनवाणा मविधान-सभा न बना मक ता शिमिम सरकारका पन्म शिवाय करना पन्गा कि निश्चित तारीख पर भागतीकी पन्माय सरकारका मतात्रे किन मौप जाय — शिमिम भागनक शिमि किना प्रकारका पन्माय सरकारका क गगन मौप जाय अयवा कुछ भागामे मौजूग प्रान्ताय सरकारका मौप जाय अयवा वामे अय किगा जम डगम यह काम किया जाय जा मवम अधिक ममतागाराका लग और शिममे भारताय जननाता अुत्तम हित हा।

रह तब तब भाग्यवाणीया तमन्था हूँ हा हा हा तम गताः या कर्माणि  
 भुमन जार पर स्वार्थे गत टाग कर जता यत्र विद्या पतानता चा  
 हा गीग गत रहा गा। जोर यत्र त्रिंशति अनुनाग हूँ तथा जगता भाग्याप  
 नौकरणाहीका पमन्था वात था। जनमें यत्र मत्र तदुचनन वात्र त्रिंशति  
 सरकारक पाम दा गी माग हूँ जान थ (१) भाग्यता जात्राग जनम  
 सम्बन्ध रत्नवात्रा मिगत-यात्रनार अनुनाग त्रिया कगया मत्र कुत्र मत्रिया  
 भेट करव प्रजाता त्रयार गामन त्रिया ताय या (२) जग कामता  
 दृष्टासे आग वग्या जाय। जगत दूगग गमना जपनाया जोर त्रिमर लित्र  
 सारा दुनियात जस वधात्रा गा।

दूसरा काम जमन यह किया कि गाँव बचका वापस बना लिया जोर  
 गाँव मात्रणवन्दनका जपना ४ वा जोर अन्तिम वाजिसराय बनाकर भारत  
 भजा। जिन दोना कारनामियाका वाडित प्रभाव पडा भारताय जनता  
 — गीग भी — समथ गआ कि जात्रिरा पमन्था अब नजनीक है जत्र  
 हीन या जित वन्त दिना तक नहा चल सभता।

१६

## आजादीकी नाव किनारे लगी ।

१

भारतकी स्वतन्त्र-यात्रा पूरी हानकी अन्तिम घडी अब आ पहुची।  
 यह बात जब प्रकारमे अुल्लेखनीय मानी जायगी कि अुस समय अकक  
 वात्र अक जो दो वाजिसराय आय वे दोना योद्धा थ और विश्वयुद्धक प्रमुख  
 सपानी थ। मानो भारतका सवात्र भी युद्धका जब भाग हो जिसी  
 ढगस सारा काम हो रहा था। दोनोको यद्धके मार्चसे हा जठाकर भारतकी  
 आजादीके मारके पर त्रगा दिया था। वचत्रको चर्चितन पसत्र किया था।  
 अुन्होन पूरी तरह चर्चितवी नीतिक अनुसार काम किया। अस नीतिकी  
 छायामें भुस्त्रिम ठागवा जार खूब वन्त गया। चर्चित-सरकारको जिसमें जापति  
 नहा थी वदाचित यह स्थिति असे वाछनाय लगना हा। यह सब असन किया  
 जिस सुन्दर वधानस कि त्रिंशति प्रजात भारतके अल्पसह्यकाकी रक्षा करनकी  
 मेनरी गा है जिसलित्र जिस वारेमें जितमीनान करनके वात्र ही वह

भांगका नत्ता याग्य गाने हाथमें मौप मरना है। त्रिमका अथ अंतमें यद्वा हा गया कि गग जम नचाय बम नाचना पडगा। दक् रायमें अमा हा हुजा। धार धारे वात यग तक पहुचा कि मविधान-मनाता काम हा न चर मर मिता त्रिमक कि गगका पूव और पचिम भारतक प्रान्ताकी समू रचनाम सम्बन्धिन प्राणिक मविधान-मनामें मग गगाम मौप दा जाय। य ग समू अथान पूर्वमें बगाए और अमाम प्रान्त तथा पचिममें पजाव निघ और सामाप्रान्त। त्रिन त्रिगाममें मुमयमान निर उदुमनम काम ग मुके ता निव त्रिदू बगर अत्यमव्यव कौमें न्य जाय। गग अमा हा करना चाग्ता यो। काग्रमन त्रिसक विरुद्ध यह मदा गगदा कि विद्या भा मम अथवा प्रणको (चाहे वह पूरा प्रान्त हा या अन्का भाग हा) तवरन् भारतक मप-नरिधानमें नहा रता जा सकता।

त्रिम मर पर मतिराय पना करव गगन मविधान-मनामें न जानका निचय किया गौर आग दक्कर यह कहा कि मविधान-मना व्यय है अम ता निया नाय।

अमा बगनमें गगन ना जगमें काग्रमन ना मुग्य अगया बुमाका अुपयाग किया था। अमन कहा कि समूग मविधान-मना ना हिदू बमनवाग हातक कारण हिदू राय हा स्वापिन बग्गा त्रिममें हमें जगस्ता गराव हाता पग्गा त्रिमत्रिज जगने नम अयम्वित हा नहा रहेंग।

अकिन नर काग्रमन य मदा प्राणिक मविधान-मनाका काय-गदतिके बारेमें अुगया तव अमक विरुद्ध गगन य आधर रिया कि दता काग्रम भी कविनर मिगतकी धारणाका नहा मानता।

त्रिमका हा निवाएकर कामरा आा बगनका नियतन काग्रमन कः कि कविनर मिगतका काय-गदतिके हमें स्वाकार है परन्तु किगा पर बमनवका जवग्ना गग तथा जा सकता त्रिम रनियाना मिदानका या गकर काम किया जायगा।

और त्रिमर अन्तमा पजाव और आगाममें अल्पनतरा रणाक त्रिज गीग्ता ही नातिका आथय रिया गया। काग्रमन बनाया कि प्राणिक मविधान-मना नातर नमें पूरी स्वतन्त्रता न ता नम अामें अुम्वित नग रहेंग।

अंग मित्रिमित्रमें सब बातें चली। अंगमें लीदरा यह मानता पडा कि पञ्जाब तथा प्रगाण वगैरे भारत गारे नई गिण्ट मानी। अंग न प्रान्तों से जा भाग पूर जयता पण्डित गमूरा रातामें ग जाना पाण्डित म जसा करनका र दा जाय। जयान् अंग न प्रान्तों वरुण करन हाण। यह विचार जुन प्रान्तों भा अपन सर्वोत्तम मन्त्रों गारा माय रिया।

अंग वाच माधुण्डयटन यह देवन लग कि गता अंग गौरी जाय। अंग अंगिन वडिनटरा २० फरवरीका पापणा अंग था कि लण्ड लण्ड अनर राय लड करव भा अह सत्ता गौरी जा गवना थी। व गावभूमि वनत तो भारतके टकड-कड हा जान। मकडा गारा राय ता गावभूमि वन ही रहे थ। अंग पर यन्त्र अंगिन भारतके प्रान्तों भा अनर गावभूमि सत्ताओं खरा हा जानी तो भारतकी जयता गान्धि और मगडनरा मगपूण राजनतिक नाम हा जाना। अंग वडिनाभीस वचन हज सत्तापागकी योजना अंगिन सरकारका बनानी थी। अंगमें स अकर वजाय ग राय—भारत और पाकिस्तान—और अनकी अरुण सविधान मभावों बनान और अह सत्ता सौपनका विचार उत्पन्न हुआ। दा रायारो ह वाधनक अंग ( खास तौर पर पञ्जाब वगाड अस्त्यान्त्रि लिअ) कमान नियक्त करन हाण यह भी स्पष्ट दिखताओ दिया।

अंग सब विचारोंका समावण करनवाला कानून अंगिन पार्लियामण्ड बनाय और जयका आधार यह रखा जाय कि भारत तथा पाकिस्तानका अंगिन राष्ट्रमन्त्रों दा नय औपनिवर्गिक स्वतंत्र रायारका दर्जा दिया जाना है। अंग नय रायारकी सविधान सभावों ठीक समझें वगा सविधान बना मकेंगा अंगिस मामोंमें य सभावों सम्पूर्ण स्वायत्त होगी। सब तरु राजराज चगानके अंग १९५५ के कानूनका नगी परिस्थितिय अनरूप बनानकी दृष्टिस अंगमें आवश्यक सुधार करव जम जारी रखनकी यवस्था पार्लियामेण्ड अपन कानूनमें करे। अंग प्रकार दो राय जग बनानके लिअ भारतका गामन मना जोर जयतथ मन्धवी बटवारा भी करन हागा। अंगिस बातकी भी अचिन् यवस्था कानूनम साचा जानी चाहिय।

अंग सारी बातोंका विचार करव अंग योजना गण्डवड का गत्री और अंगे माधुण्डयटन मरुय मुख्य भारतीय नेताओंका खानगी तौर पर बनाया। अंगमें विभिन्न दण्डकी काफी समति देखा ता अंगे कर वाअिमराय

सु. ना० १८-५-४७ का लान्त रवाना हो गय और जुने कबिनटके सामन रवा। कबिनटन असे मजूर किया और यह निश्चय किया कि मुसक अनुसार तुरत घापणा का जाध और वारमें पार्लियामेण्ट भरसक जल्ग ही अक कानून बनाये।

माजुष्टरन ना० २१-५-४७ का दिल्ता गैर। ता २-६-४७ को जुन्होन नधी याजनाक सिर्गसिमेम पूछनरे त्रिज काग्रम लीग और सिक्क जानिक मुख्य नताओका त्रिधिवन सम्मलन बलाया और जह याजनाकी नकतें दकर कहा कि अिस वारमें आप अपनी राय मुझ तीजिय ताकि म कबिनटको दूसरे दिन अुमने वारेम उता सकू। ताना दगाडा कु मिंगकर अनुकूल मत होनस ३ जूनका कबिनटने भारत-सबधी अपना अन्तिम घापणा की, जिसम देगके टुकडे करव अुमकी लो अलग सविधान-सभाआका हुकूमत सौपनका अन्तिम फमता किया गया। अिस सम्बन्धमें सारे प्रान्तोस भा पूछा गया और अुहान भी अपनी स्वीकृति बताजी। जिस प्रकार अन्तमें भारतीय नेता अक निणय पर पहुच। जिसका अय 'यक्तिव' रूपमें लाड माजुष्टरनको और समूहक रूपमें भारत तथा ब्रिटेनक ठाकनताआका मिला।

अन्तमें ना० ४-७-४७ का भारतीय स्वतन्त्रताका कानून अपरान्त लय पर तयार हाकर पार्लियामेण्टमें पेग हुआ १५ जुलाआका आभ-समान अम पास किया दूसरे दिन अुमराव-सभान अुस पास किया और १८ जुलाआको अम पर राजाका स्वाकृतिक हस्ताकर हुआ। अमम सत्तात्यागका तारीख १५-८-४७ निश्चित की गयी था। तन्नुमार जुस तारागका भारत और पाकिस्तानकी अलग अलग सविधान-सभाआका मारणबटनन वह ब्रिटिश हुकूमत जा पार्लियामेण्टन १८५७ क कानून तारा ग्रहण की थी ९० बपक वार भारतका वापस सौप दा। अिस प्रकार भारतका ब्रिटिश साम्राज्य खतम हुआ और अुमक कामतक'य रा'यक लो नय स्वतन्त्र अुपनि-वगाना जम हुआ। भारतन अपने पहल गवनर जनरल रूपमें माजुष्टरनका पमन्त किया और अुहान यह पन् स्वाकार किया। पाकिस्तानन अम पदक लिख जिगा गाहबकी चुना। अनका अुम पन् पर नियन्त्रित हुआ। ताना तगाका जनतामें आनन्त था परन्तु यन् सहा है कि वह विगड आनन्त नहा था। साधागत ग तपमें जा कहा सा सच था कि म्दरा'य आ गया अकिन्तु तिम में पूण स्वरा'य समझता है यह अभा आना बाका है।

वापस नवंबर १९२० में भारतीय जनता जयपूर विधि राज्य छानका जा बाडा अगसा था य ता अगन जन जी ताप नता नवंबर १५ अगस्त १९६७ का पूरा लिया। जोर ज राष्ट्रपिताका प्यारा नाम लिया। ब्रिटिश जनताके साथ सख्त रिश्ता य गड घपताकी बात था। अिस अनिहासित घटनाका जगन हमना या रगगा।

१७

### भूतकालके गभसे

विनायकास्त्री कहते हैं कि पश्चात् भारत जाग है ठान जोर जावन ता जगकी सतह पर हा है। क्या प्रजाआन अनिहामर्य वारमें भा य वात मच हागा? सामूहिक वरभाव और विराधती जाग जनक भूतकाठ रूपी जतरमें दसी रहनी है जोर जा कुछ अछाभी मिगस जोर मानवता पूण मस्वृति होता है वह क्या असका वनमान सतह बन जाना है? क्याकि कभी-कभी ज्वाणमुखाकी भाति जिम सतहका चौरवर भूतकालमें छिपी जाग फूट निकलती है। भारत स्वतंत्र हो रहा था अमा समय जमकी मस्वृतिक जूरा पत स्तरका फाकर साम्प्रदायिक वरकी आग मार दगमें फ गयी।

३ जून १९४७ की ब्रिटिश घापणाम असक पह जो कटता और कौमी जहर फ रहे थ व मिट गय थ। गगका अब गान्ति हो गयी थी कि पाकिस्तान मिग्या और असका सविधान जुगीके प्रतिनिधि जसा चाह वना निश्चितनाम तयार कर सकेंग। जिमति १४ जगधीका जब फिर सविधान-सभाकी बठक हुआ ता जसमें गगक सस्य अपस्थित रहे थ। अब मू सविधान-सभाम स पाकिस्तानी भाग अग्य अस्तित्वमें आनवाग था।

भारतक मानस पर भी असा ही अछा असर हुआ था। भारतके दनी राजाजा पर भी अछा प्रभाव पडा था। अब अपनी मना और सत्ता द्वारा अनकी रक्षा करनेवाके जगज नही रहंग जनके स्थान पर जनताके नताआकी वना गकनाशिव सरकार जायगा जम भारतमें असकी सरकारके साथ मिगकर रहना ठाक है यह समय अनमें अच्छी तरह पैदा हा सकनकी भूमिका तयार हा गयी थी। भारतक कुगल सगठनवना और चतुर गसकके

रूपमें प्रसिद्ध सरदार बलभभाजन अपन सचिव श्री वा० पी० मननकी सहायतासे हैदराबाद कामार और काठियावाडके दो तान मुस्लिम राज्याके सिवा सब गेगा राज्यके साथ अचित ममझीते करके अरे भारतके अकालका मागमें पिरा लिया। माअणवदन गांधीना और कायते आजभक मम्मिन्ति हस्ताक्षरम प्रजाके नाम शान्ति-सदन प्रकाशित करा सब थ। ३ जूनकी घापणाके अिम गुम असरमें काम हो रहा था। जितनमें पजाबका विभाजन किस प्रकार किया जाय अिमका रेन्किन्फ निणय प्रकाशित हुआ। पजाबकी मम्मिम लीगने तुरत अिमके मिलाफ आवाज अग्रा और अपन पत्रके सर मुम्मिम गगा पर हाथ अुनाया। अघिकनर मुस्लिम पजाबमें रहनवाके मिकवा और हिन्दुआ पर अमानुषिक धरना और नीचतापूण हमके गुरु हुआ। परिणाम-स्वरूप अून गगान पजाब छोडकर भारतका सीमाकी आर भागना गुरु किया। भागनवाअना भा नहा छाया गया। अुनमें म्त्रिया बच्चा और बूना पर भा गया नहा का गजा बल्कि ये बच्चा अुनके हमलके पन्क गिनार हाल थ।

अिम ममाचारन भारताय मानममें भरी इओ कौमा आगका भडवाया और बरसी अगिन बदनमें अब भारतीय मुसलमानाका अपना ज्वालामें गपटा। दिल्ली तक और अुसके पार अुतर प्रन्ग तक तथा दगके कुठ दूसर गहरा तक बड आण पहुचा। पूवमें भी अुमका अमर हुआ। अिमसे भारतके मुसलमानाकी भण्ड पाकिस्तानका तरफ गुरु हुआ। अिम मारे प्रन्ग पर दारुण दुःख और नाच अमानुषिकता माना सागान ताण्डव कर रहा हा जगा वह भयकर दुःख था।

अिससे अक बार ता असा लगन लगा था कि पूव पजाबका और दिल्लीमें बडा अुओ भारतका नया सरकारका मिहामन ना डाके अग्या। या कहिय कि नया सरकार और भारताय सअननाका शक्तिकी हा अगिन-धराणा हा रहा था। गांधीना अममें बगवर जूम रट थ थ भारतका सअननाका आह्वान करके अम अिम कठिन परिस्थितिका मामना करनरा प्रेग्णा रे र थ। नहरे और सरदार मनतवागी सरकार अपन माधना गरा कमाके कर रही थी। अलमें भारतका नया सरकार अम आगमें म महा मलामन बाहर निरगा।

परन्तु भूतकालके गभमे पूवके प्रचलित की जाती रही माअणविक आग भारतके नय जावनरा जूपरी मतह पर आ गजा। नया राज्य अब हिन्दू



राज्य हाना चाहिये जना आवाज जुग। यमाय हिंदू मतागभासाभिमो  
 अगा भावना थी कि गांधीजी जिनमें पण्डितों का जगत् बाधा बनकर गया।  
 अग नाजवाक वग हाकर जुनम ग जिन ० जनवरा १ ६८ व जिन जिनगी  
 प्राथना-मभामें गांधीजीकी सेवा कर गयी। अत्रारान भारतमें जामा यग  
 परिवर्तन करनवाट मत्पुष्पना जत जनक वाग्य हा जगा। जिन बर्तमानन  
 भारतका नशा स्थितिका निश्चित कर दिया। वर यर कि नागरी  
 भूमि पर सब जानिया गव धम रर मप्रणय मित्र तत्रर जव  
 मानव-कुटुम्बकी भाति गाव-नाथ रग्य। धम व्यक्तिगत वस्तु है राय  
 अगक आपार पर खरा नहा हा मरता — भट पाकिस्तान जिस्सामा राय  
 बन गया।

भारतक अतिहासमें हिंदू-मुसलमानाका जव करनक प्रयत्न जनाग  
 होने रह थ। जनक आपमा सम्बन्ध औरगजबन बाट बिात्तन बिात्तन जम  
 बिगट कि मुसलमानाक विरुद्ध हिंदुआ और सिक्काका भावनाओं अतिहासका  
 चान बन गया। जप्रजान जिन गांधीजीकी भन्वा जपयाग करर जपना राय  
 कायम रखा। जिन भन्वाति पर गांधीजान काप्रम तारा विजय प्राप्त का।  
 अुनक नतृत्वमें सब कीमें भारतया प्रजाक स्वराय जीर स्वानभ्यक अर पत्र  
 नाचे अक हाना गभा कायट आजमकी लाग जिनमें अिरात्तन अपवाट ग्हा।  
 गांधीजीकी अहिंसा अम भा निगट सवता थी। आवकरन अम्पय जातिपाक  
 सम्बन्धमें यहा रग अपनाना चाहा था परतु जममें गांधीजीका जात  
 हुआ। वही गांधीजा अगक सामन हार गय। कारण यह है कि गतराजामें  
 अुतर कर दखें ता हिंदू मानममें अरिजन जक जातिर रूपमें अग नहा  
 थ परन्तु मुसलमानाक जिज अमा नहा कहा जा सवता। यर मनका गहरा  
 भद था जिसलिअ गांधीजीका अहिंसा जिज मानमक गदिक ममयनके  
 अभावमें जितना चाहिये अतना मरर नहा बन मना जसा अतिहासको  
 बहना चानिये।

जिनमें स गांधीका माग रगका विभाजन करनका हा था और भारतया  
 नताअका भजवर हाकर जम जपनाना पडा। जन्टान चानपूवक जीर  
 साहमक साथ यह माग अपनाया। गांधीजान जमका समथन किया। अिन  
 प्रकार भारत का भागामें अागाट हुआ।

विभाजनक दग गांधी हुअ जीर निराश्रिताका फिरम वसानका भगीरथ  
 काय सामन जाया। फिर भा जमस कुठ गांधी मित्रन पर मविधान

सनाका काम गच्छ हुआ और १०४ व अन्त तक पूरा हुआ। जुमक अननार  
-६ अननरा १०५० क त्ति भारतना मावनीम प्रतामताक राय म्यापित  
हुआ। जमरा खाति उपय यह है

हम भारतक गगान प्रतिनापूर्वक नकल्प किया है कि भारतको  
मवमनायाग राकनाद्रिक गणराज्य बनाग जाय और अमक मव  
नागिकाका—

सामाजिक जातिक और राजनानिक चाय मित्र  
विचार वाणा मानना घम जाग अपुमनाका स्वतन्त्रता मिल  
ल्ले और जवमग्का समानता मित्र

तथा प्रयक व्यक्तिना गौरव और गच्छका अक्ता मुगतिन रहे

अिम प्रकारका बानुता प्राप्त हा  
अिमक त्ति हम अपना मविधान-मनामै अमा घायणा करक यह  
विधान म्वीकार करत ह अिमका कानून बनात ह और अपन आपकी  
वह जरण करत हैं।

अिम प्रकार जम त्तिवाग भारत मानवता और वमुधव-कुटुम्बकी  
मवामै जजर अमर ह।

## अुपसंहार

१

### देगका विभाजन होता है

अितिहासका ल्ले ना भारतक मध्यकालका जरणाय ट्टा और अन्क  
हिन्दू गाय बन। अुन मवका सुदमग्य अक्क करक जकरण मुगल राय  
स्वापित किया और अममै त्तिवा वर भग्न और मल्ल मग्गनका भावना  
प्रलि करत त्ति अमन भारतका मारा कौनारे प्रति अक्नाका अगार गच्छाय  
राजनानि अपनाया। परन्तु औरगतवन अुन नाकमै ग्ग त्तिवा छिद्र नी  
अनिक वग्ग अमन अक्कक गच्छका अपना वडा राय तमाया। परन्तु करक  
मनिक वग्ग राय नहा त्तिन। अिगत्ति अुनक मग्गन हा अय वगाकी  
तरह नाकना हैरागाग्गा निवानवग अग्ग बना मग्गन अग्ग गाय  
स्वापित किया राजपूत जाग और अिक्क राय पग त्ति दगाग्गा

नवाय अंग हा गया। मार य कि कपीय मगारता य न हा जाने साथ ही ज राग्यर अनर गड हा गय।

फिरग कपीय गक्ति अयत्र हाता ता य मय राग्य फिर ज हा जान। परन्तु यह गक्ति मुगयामें नहा थी। मगय अगा राय स्यागि कर सवन य परन्तु जिनर डिअ आययय अुगर नाति और व्यापक न्ति अन्हान नहा न्तिराभी। जुहार गयमें विभाजन हा गया — गायराड हान्तर गिगिया भाय और दूगराती बात ता ठा य मय भा पयराहा जकछय नातिमें नग र सव।

जिन परिस्थितियामें अयत्र व्यापारियान यक्तिन घारे धार अर ताकन स्या की। अन्हान राजाआको अपन जधान गिया जयवा जपन पयमें कर गिया। तबग अम सत्ताता जम हुआ जा दगा राया पर जग्याकी सवोंगरि सत्ताके नामम पुकारी गयी। जसा कुछ समयार गग भ्रममें डाकनक लिअ कहत ह असी अवता कायी ब्रिटिश ताजकी सामियत नहा थी।

जिम प्रकार १८५७ तक राजाआके विग्या सत्ताके अधीन हा जानके वाद धीरे धीरे भारतय जनता अपन विग्या गामनति विरुद्ध जायत हुयी। वह परराय नही चाहती थी। जिसलिअ अुमे यामें रगारे लिअ पुलिम और सनाके साथ जुममें जो बडा साम्प्रदायिक पिछग हआ वग — अगहरणाथ मुममानाका — था अमे खगत रनका भदचक गुरु हुआ। अग मय अलग बडकें जग कौमी नीकरिया वगरा खर करने करते अन्तमें यह सारी गाडी पाकिस्तान तक पहुचा दी गयी। हमारा कहना यह नही है कि जिसमें पग वाअिमरायकी वनियती जयवा करामान है। बात यह है कि पाकिस्तान अक सी पुरानी अयत्र राजनीतिका अतिम नतीजा है। इसी लिअ विभाजनकी नीति (सचभच मान तीजिये कि) माअण्टवन्को पमन था तो भी अहें मानती पडी वायसका पस न थी ता भी कायसको अमके वग हाना पग। अतिहासमें जसा सयोग-य हाता है। इसलिअ भविष्यमें अतिहासका अमा प्रमाण मिठे कि लीगकी अस पाकिस्तानी जिन्व पीछ अयत्र अनुगर राजनीतितोका गुप्त सूत्र-सचालन था तो आश्चयकी बात नही समझना चाहिय। और देगी राजाआके सम्बधमें क्या ख हागा यह तो अतिहासमें सामन जाय तब सही।

जिस प्रकार भारतका अपन गिकजमें जकड कर रखनक लिअ अग्रज गामक अर तक दा कमजोरियाको कायम रख कर धा

१ दंगी राधाका पिछा हुअ प्रणाके रूपमें स्वाकर रगा।

२ मुसलमानाका नानातिका गिकार बनाया।

यह भा मुन्सुवनाय है कि लंगा राजा और मस्लिम गग दाना सच्च लाकनधमें विवाम रखनवा नहा ह। रावा निम्बुग गामन और स्वा रायाधिकारमें विश्वास रखनवा ह। गग गाय धमगाहा या कुगनगाहा राज्यतधमें विवाम करती है — वह जब फामिस् सम्दा है \* यह स्पष्ट है। अथवा या कहिय कि वह लासनाधिक ता बिमी हालतमें नहा है। कायस अकमाय लासनाधिक बा है। जिस प्रकार सार भारतमें जबस गवनतका विकाम न हुआ यह भा आजका स्थितिमें निमित्त जाय विभाजनका प्ररक सूत्र कारण माना जाना चाहिय।

आज जब अग्रजाका अकछत्र राज्य जा रहा है तब य मय टका हुआ कमजोरिया प्रगत हा रहा ह। जिनना सच्चा बा भारताय जनताक पाम ह वह पूरा तरह काम द रहा है। अिमोतिग अनक राधा और अनक प्रान्ताय बना हुआ जब गस्किराग हुकूमन लामें गान्तिम कायम हा रहा है। यह हुकूमन अपनी कद्राय सरदारका अर अतिक मजदून और पूरा मत्तावागी बना सकगा। कबिनट भिगतना नातिका छायामें बनाआ गजा अन्तरिम विमवाय सरकारक कडव अनुभवान बा स्वभावत मत्रा अतम नाति ग्स्ती है। जिन साम्प्रदायिक भगता कूडाकक अग्रजान भागमें शिवगता किया है अुमडी मारा सराडी पाकिस्तानक जगका बाच्छा हा जान पर दूर हा रहा है। अब गान्तिम भारत अपना नया और सच्चा लाकनाधिक गामन गुरू करेगा। अर साम्प्रदायिक मताधिकार शिवादि वगत्रिया नहा लंगा और यह नभा रचना किया जानि या धमक लिअ गनितारक नहा परन्तु अच्छी और लामकारक है य विवाय जनताका लिगया जा सकगा।

काओ पृच्छता अना आगावाय रखनक लिअ आदक पाम बाधा कारण है? निगगावायक वजाय आगावाय अधिव काण्य ह। और व द कि प्राण दान भारतावाता अपन गग नुनन भविष्यता गभावनामें थडा है और

\* शिवि अन्तमें लागका वानून धग और माया कारवाआ व नामय गुरू का मत्रा हिमक और अपा धमाचौरडा। पाकिस्तानमें यही गग रावनीतिक गकि आन्तगनक लिअे आग घग ना क्या हालत हागी?

भारतीय संस्कृति का भारत का गौरव पर जो भ्रमण है। यह गौरव गंगा चाहे कि भविष्यतः स्वयं न देगा या जयसा दुष्प्रसिद्धि गङ्गा नाम होता है। आत्मनिष्पत्तिका वा स्वीकार कर भाग्य राष्ट्र जनम अर्थ हानिका अर्थात् अर्थ हानि के त्रिगुण हमारा राष्ट्रीय गति तथा बर्णना। जमा गांधीजी वक्तव्य है भारत यदि साम्प्रदायिक बन जाय तो हिंदू का जितना साम्राज्य की दा राष्ट्रका मायता आना गिद्ध कर रहे। आज जितना साम्प्रदायिक राष्ट्रवादीक आधार पर हम कुछ प्राप्त अर्थ तथा हा रहे है। व जय हा रहे है जयजाता अब मनी पुगता साम्प्रदायिक कुनीतिन कारण जोर गांधीजान द्वारा बनाओ हुजी गतिन कोमी जवतार रान्त का प्रयत्न जभावन कारण। अग्रजाकी कुनीतिकी ह् पाकिस्तानन रूपमें जा गया अर वे जा रहे हैं। अस्मिन्त्र दूसरा कारण दूर करनेका बात रह गया है जोर जिमास्त्रि गांधीजी अम पर आज भी जा रहे रहे है। हिंदू समर्थ कि व हिंदी ह् जनका देग हिंदुस्तान नहा हिंद जा पट्ट या वहा है। हि सांस्कृतिक अुत्तरता जोर व्यापकताक वर पर अगत अिस अब बनाया है। क्वन मनिक् वरमे तो औरगजब जोर मरागत जा कुठ कमया या वट सत्र चत्रा गया। और अिसी तरह अग्रजाका कमया हुआ भी चत्रा गया। क्याकि कर्तीय सरकार दा प्रकारस वरवान हानी चाहिय (१) राजनातिक अथम और (२) सांस्कृतिक अथमें। राजनातिक अर्थान् आर्थिक और सनिक। सांस्कृतिक अर्थान् धर्म कोम अित्यास्त्रि परे अब प्रजाकी भावना वाला जवतत्र। यह निश्चित सत्य हमें भूतना नहा चाहिय कि जसा अिविध निर्माण करनेका स्वतंत्रता अब हमें मिठ रही है। यह सबसे बन्ने खीरी बात है। अब हम अिस बातना अितमानान करना है।

जून १९४७

२

‘गांधीजीकी जय !’

१५ अगस्तका जा भावभाना और गम्भीर समाराह दिल्हाकी अबसे हमारा स्वमताधारा राष्ट्रसभा बनी हुजी सविधान-सभान मनाया असमें अिस बातना अफनाम कुछ जगाको रहा कि समाराहमें गांधीजी मौजूद नही थ। जम समय गांधीजा कर्त्तव्य अब परित्यक्त मस्लिम घरमें थ। अस

भागम समुत्थान परिवार साम्प्रदायिक आतंक का भाग बन गया था। गांधीजी ने भी इनमें निभयना पदा करके और अन्त में धारज बघाकर फिर से आ बसने का बात समझाने के लिये कहा रहने था।

जिन जिन गांधीजी के कर्तव्य अन्त माहल में गया जुमक दूमेरे हा जिन अक सूचक घटना हुआ। कुछ जिन नौजवान जुमक पाम जाकर वाट जाय भाग हुआ हिन्दू आक माहल में क्या कहा रहने? गांधीजी ने मशरफ में क्या कि मुने यह समझा था कि जिन समय भरा बसा करना धम है ता म तुम्हें ब्रह्मा चंगा जायगा। अखबारों में माहल हुआ है कि वाट में गांधीजी के निवासस्थान (हेल्थ मन्शन) पर पत्थर फेंके गए काचका गिड किया गया। काचका एक टुकड़ा एक अहिंसावादी अग्रज विभवजनका लगा।

गांधीजी के लिये आज्ञा के अन्त वाट में यह क्या भेंट कहा जायगा। घर छाकर भाग हुआ हिन्दू कुटुम्बाका निभय बनाकर वापस बसाने के लिये य पर-दाज हिन्दू नौजवान मन् तो क्या कर सकने था? जिन लिये व ७७ वषक अक बूढ़का अन्त लिये कहने आय। आय तो आय परन्तु जुम पर परराका क्या की।

दा हा जिनमें दूसरी तरह का समाचार मिला हिन्दू-समुत्थान जापस में मन्त्रि और मन्त्रि में मन् और घाड हा जिन पहा साम्प्रदायिक आगम घषकना हुआ कर्तव्य गान्त हा गया। १५ अगस्त का भगल लिवमका यह भेंट कर्तव्य गांधीजी का दी और अन्त नौजवानका बक्कीका लक लिया। जिन प्रकार जुम जिनका कर्तव्य अन्त किया और मच्च अन्त में मनाया। राजाजीन जिन मारा घटनाका अक बडा जाडू बनाकर अन्त रचनेवाले महांत जाडूगर बनाया है। मच्चमुष चमत्कारका थग अभा भारतम चंगा नहा गया है।

परन्तु गांधीजी का मच्चा बडा जात ता दूगरा ही है। ३ जून १५ अगस्त तक जिनमें घटनाओं अन्तना तजीम हुआ है कि क्या हा ग्ला है जिन बार में गान्तिम विचार करने के लिये गायन हा समय या वातावरण मिला है। मन्त्रिवादी समय-अन्त अन्त में जाना मन्त्र-काय धरनेका जाय मुना हा तब और हा भा क्या मन्तना है? भारतम राजा वषक जिनिहामका तुम्हारे में यह अवधि अक पन्तक प्रगवर ना ना नगा है। मच्चमुष घडाक छः भाग में भारत आजात हा गया। विजयका गानिम घटनेवाला जिन

घटनाओंमें जिन महापुरुषोंने भाग लिया है व अता सम्मरण प्रतिपाद  
मानन एते अंगमें अभी कुछ देर है।

यह मनाहर जोर भव्य त्रिम लाना गांधीजी ह त्रिममें ता त्रिगीता  
भव नहा है। यं भुनना जय है। परन्तु म त्रिगीत जगवा जत दूमरी  
जयकी बात कर रहा हू। यं यं कि त्रिम महापुरुषोंन आरभग ता प्रण  
किया था जमीन अनगार वह पूरा हुआ है। अतान क्या था कि काप्रम  
सारे त्रिगीती प्रतिनिधि-मस्वा है वह अग्रजोंने उडरर स्वराय जयगा परन्तु  
यं स्वराय त्रिगीतक मय जगात त्रिभ जगा। आज जा कुछ मित्र है  
वह सारे देगको मिला है जोर त्रिम सरकारन अम जपन हाथमें लिया है  
अममें सबको प्रतिनिधित्व मित्र है।

जितना हा नहा जब प्रकारम देवें ता क्या पाकिस्तान बननमें भा  
अमी प्रणकी विजय नहा हुआ? काप्रमन तं उडकर अगा रग जमाया  
जोर जगत-बनन असमें अमी पूर्ति की कि अग्रज भारत छाडरर चं गय।  
अिमका लाभ मुसलमान भी मनचाहा प्राप्त कर सक। व पाकिस्तानम  
ही खुण हो सकत थ वे पाकिस्तान भी उ मके। पाकिस्तान अनन हिनमें  
नहा था परन्तु यदि वे अपनी जिन् न छोडें ना काप्रमन पाकिस्तान देना भी  
स्वीकार किया। अनजान भी अिसस यही सिद्ध हुआ कि भारतक सब वग  
आजातोंमें हिस्सा पा सक।

और अम प्रणना दूसरा अक भाग यह था कि भारत अग्रज जातिका  
गधु नहा है वह भारतके प्रति अग्रजाके रायगोभना मिटानन लिअ  
स्वराय माग रहा है ताकि दोनारा भग हो। आज यह चीज भी सिद्ध  
हो सकी है। स्वयं भारतना पहला गवनर जनरल जब भारत मित्र अग्रज  
बनता है। आज भारतीयोंको अग्रजाके प्रति त्रय नहा रहा।

जिम प्रकार उडाओने फरस्वरूप जो आजाती मित्रा वह सारे भारतको  
मित्री है। अब यं दयना है कि भारत असका कसा अपपाग करता है।

जय हिंद !

जगस्त १९४७

1

पूर्ति





## १८५७ की शताब्दी

हमार ज्ञान वतमान ज्ञानागमों जिनना जवल्न्य प्राप्ति करव असा  
 वया ज्ञान माग है कि वह ज्ञान जिनियासका समाप्ता एक एक ज्ञानाका  
 जिनान का सक्त है एकक वा एक वय या ज्ञानका जिनान न्ना।

१७ ३ में बगावत नवाब निगजरीग ज्ञानका आजाग जात दमकर  
 पन्त पन्त अजबकि विरुद्ध स्या ज्ञान। अभावजाना जमा तन्त ठरहका  
 मक्कागिनाका बज्जन्त भातग्न स्यावग बना ज्ञान हमार ज्ञान जिनमें हार  
 गया। जन्त नमद ता जयज गता भा नहा बन य कवल व्यापार हा  
 य थी व भा बगावत नवाबकी हुकूमतमें। फिर ना व जुनका विराय  
 करनका जपावा कर नव यह हमार ज्ञानकी जुन नमदका बग दगाका  
 बजाना है। हुमग जार जयजका डर था कि जिनमें ज्ञान गाद  
 कजात्रिद बगगता जमा अज्ज थीर विचारज्ञान कानूनाका पन्त न कर  
 ता मुक्ति स्या ज्ञान जिनजिद कलकनका का काठग का प्रव  
 रवकर नाका जानामें घूट पाकनका काम कुठ गार जुम्नाजान किया।  
 जिन प्रकार भागमें जयज गताका मगलावत जारन दृष्टा।

— मो वय वा अज व्यापारिका य प्राप्ति-कूब पूरा ज्ञान।  
 पूरा ज्ञान जिनियासके हाथामें बग गया। य वात नहा कि जवार बका  
 निजाना है कम अज हमार ज्ञानका निज ह है जिन विदरात जिनका ज्ञान  
 राजाधान ज्ञाना न ना। जन्तु जुनका वह बननाग ज्ञानका त्ना बना ज्ञान या  
 जिनक काय मो वरम पन्त बगालका नवाब गरा था। जन्तान नमक अजब  
 नाक जिन बगगहा काम करन जिन जयजके विरुद्ध विद्वान ना  
 किया। जन्तान य काम निजाना विगह कहनाय काकि अज कलनाय  
 गय ज्ञानि हा गया था जो जुन ज्ञाना नौरग करनवाक निजानियासके  
 जिनार जिन यदमें नज ज्ञानि काम लना था। अज जुन स्वानन्द-सद  
 का नाम ना मिना हा क? जन्तु जन्तु युगग जार ज्ञानाका दुष्टि

देगें तो वह अद्वजाता राज्य विहायनता प्रयत्न था जिनका विनया नही किया जा सकता।

२

१७५७ से १८५७ के १०० वर्षों में अंग्रेजों ने अंग्रेजों द्वारा अंग्रेजों द्वारा १८५७ से अपने कायदा नया पृष्ठ आरम्भ किया। भारतमें जनता का राज्य स्थापित हुआ। प्रजाकी नि गस्त्र बनाकर कर्मका राज्य शुरू किया गया। अंग्रेजों से जेपी जोगाका वन जनता टकडा देना जिन नौरा जिना अधिपति व्यवस्थाओं हुआ। वाममें विधान-सभाओं यगरा भा र्था गभी। जिन मयम हमारे अपरा स्तरके जोग गरीक हुआ। जुन्हां यह भा देखा कि जिन नय गायरा स्वरूप कसा है। अंग्रेजों से राष्ट्रीय स्वाभिमानका जीव नय म्बरायका विचार पदा हुआ और अंग्रेजों के जिन प्रयत्न शुरू हुआ।

जिन प्रयत्नका स्वरूप तीन प्रकारसे वर्णन किया जा सकता है

१ १८५७ के विद्रोह जैसे — मगस्त्र विद्रोह — की योजना करना।

२ सरकारी नौकरियोंका यथासम्भव भारताकरण करना और विधान-सभाओंमें स्थान प्राप्त करके वधानिक ढंग पर राज्य चयनमें भाग लेना।

३ जनताका अब होकर असह्याग द्वारा नि गस्त्र गान विद्रोह करना।

अंग्रेजों से तीसरा जग मफल निद्र हुआ। पहला असफल रहा और

हमारे देशका भीतरस कुतरकर खा रही था अन्तरे सारे भल्का घो मन्तका मन्त गाथाजान हमें निया जीर अम मन्तक द्वारा प्रगठ हानवाला हमारा मन्तका मन्त नियाकर काम करनका कायक्रम बनाकर अन्तान हमें आग बनाया। जानपान धम भाथा वगरा अन्तक कारणामे जन्त रान् ग्ग हुज द्वामे — गाथन् जिनका कारण अग्रजी विद्यास मिन् हन् अम पाठ य — उन्त मिन्त हुओ प्रजापन्तिका गाधीजीक निया हुअ कायक्रमक द्वारा पन्तित करक हमन स्वराय प्राप्त किया।

अस समय हम १८५७ क अपन पूवजाक साहसका यान् कर यह अन्त प्रकारस अन्तित ही है। अिसी प्रकार १७५७ स लगाकर आज तकक अन्तित्तामका दये ता अस दूमरे छान् मान् साहम नहा हन् हा मा वान नहा परन्तु अन्त मन्तका रग १७५७ क रगसे भिन्त प्रकारका था। वह ग्ग जगतका पूवरग था यह नहा भून्ता चान्तिय। आज समारमे पन्तित जीर यद निपधका युग आरभ हुआ है। भारतन अपन गान नि गस्त्र विद्यान्की मन्तक पद्धतिक द्वारा अम निन्तट लानमे बडा माग निया है। १८५७ का गतान्ती अन्तम मनात समय हमें यह बडा वान नहा भून्ता चान्तिय क्याकि हमार देशमे हिमा स्वाय जित्तादि पामरताकी वराजिया गागाक पुगत मानममे स फिर अन्त वार मुन्त निन्तान्कर थाकना मान्त हा रहा ह।

१८५७ क गतान्त अन्तमकर समय हिमाक गुणगान हान ग्ग ह। पडिल जवाहरगन्तने १०० वपमे हुअ अवाचीनताक परिवन्तनक वारमे हमारा ध्यान आन्तपित किया परन्तु अन्तम भा वन्त परिवन्तन ना बह है जा निया बन् या मन्तक अन्तमन्तकी हमारी दृष्टिमे हुआ है। अमकी जीर जाग्रत रहकर गागाक ध्यान नियाना चान्तिय नहा ता १८५७ का अन्तक अन्तचिन मिन्त हागा अमक परिणाम ता प्रतिगामा हाग ही। गान भागन् ना क्या आन्त नियाकृति जीर नहा पक्क रहा है? अम समय १८५७ की भावनामे प्रजामे जापन करनेमे भावधानी रगना चान्तिय। अन्तु।

आज जगत अिग मन्तकी आर मुन्त रहा है कि शानि मन्तपान धम पापण निपध ही मानव-जगतका मन्त है। अम मिन्त करनका वगौग आज जगन्त हा रहा है। भारतमे गाथन् यह वगौगी जाराग हा रहा है। १८५७ का भा सन्तका पाठ ता यहा है न कि मन्तक मन्तका बन् नहा है? सन्तका बन् अन्त और राष्ट्रनिन्त है अन्त और राष्ट्रनिन्तक अन्तममे

सम्पन्नता का ह्रास भी कम भूमि समझ लाने। १७१७ व बाद का गो बामें जगत नय ही युगमें प्रमाण सदा सदा है। अगला ज्ञान सदा ही १८१७ व गतात्मा-अलगवरा सार है।

८-१-५७

२

## पूरी हुआ पीढी

[ १९१५ - १९४८ ]

[ भारतकी आजादीकी लड़ाईमें गजगतरा कीमता हिस्सा रण है। और यह हिस्सा १८५७ म गण हानवात् पूरे ९ वर्षक अममें बनाया जा सकता है। गजरातक विद्यालय अिस आर जितना चाहिये जुतना ध्यान नया लिया है — जसा कि महागण्ड्रमें हुआ है। अिस कारण मन्तराष्ट्रका तुत्नामें गुजरातका १८५७ म १९१५ तकका काजी विषय अिनित्ताम माना है हा नया असा साधारण छाप पडती है। यह बात मध र है। अद्योग धम जय समाज मुखार गिता राजनाति सात्थिय अित्यात्ति सभी धनामें भारतक अजादान अत्यक्तात्क अिन वर्षांमें गजरातमें अनेक पुस्तक पण स्र ह जिन्हान गजरातका बनाया है। १९१५ स ता सब उगात अिस लेखा है। नाचर स्रम १९१५ म १९४८ तक पूरा हानवाती पीढीकी सन्धिप्त समीभा है। जस पन्थाका हमारे प्रत्याकी क्या ध्यवस्थित नाथ द्वारा जय शिवी जाना चाहिये और जुम पर विचार किया जाना चाहिये।

अिनती प्रस्तावनाके साथ १९१५ स १९४८ का क्याक मागस्तभ शिवानवाग निम्न लक्ष यण अडत किया गया है।

१५-७-५७

— म देसाभी ]

पूरा हा रही वतमान पीढीक प्रवाहाक धारमें शिखनक शिअ ता अनेक प्रथ चाहिये अितन महत्त्वका वह रही है। अिस छोटे लक्षमें जसकी शानीमी स्ररत्वा हा बताया जा सकती है। अिस पातीका अय है पिछठ पच्चीस तीम वर्षका जमाना जुम छाना और सूचक नाम दना हो ता वह दगा और गुजरातका गांधी-यग है। अिस युगमें देशकी भय और प्रचत् प्रगति

हूँ है। जिनका समा ता थोड़ेमें करनक लिअ म मूखन गजगतका ध्यानमें रन कर चगा।

### असि पीतृके पितामह

१९१७ में गांधीजीन प्रहमगात्रार्थमें अपना छावना ग्लि तत्र गजगत गाय हा भारतक राजनानिक नका पर था। ध्यापार अत्राग और कमाका धवन मिवा गव जावनक दूसर क्षत्राक धारमें ना यही कहा जा सकता है। अम स्थितिमें म निकृत्कर आज गजरानन भारतक नका पर गामा सप ध्यान प्राप्त कर गिया है। स्व० धा आनगाकर धवन कहा था पर नया जमाना गांधीजाका वाक्क है। अिसमिअ जुमक प्रवाहाका समवनक मि १९१७ क वा गांधीजात जा जागान गुं विअ अह ग्वना चाहिन कपकि गांधीजी पूरी हानवाग पाका यग-गगाकी गगाथा थ।

### सत्याग्रहाश्रम

१९१५ में अिण अमाकाम भारतमें आनक वा गांधीजात गामे अपन कायका आरभ सत्याग्रहाश्रमका स्थापनाम किया। आश्रमका अथ धा अवावान भारतक मि आवक्यक समग्र जीवनका सर्वांगण आग। आका जायन करता हा ना गठुजनक नान म च जावनका नया नमुना गगाक जाग पर करता अगा था। अममें जावनक गमा पर आनप्रात हान चायि। युगक अनुगार आवदक जावन शानि मायनका राति प्राचान वाग अिस उगर आश्रमोंके द्वारा हा मरु हाता जाता है। अवावान कामें भा गांधीजात अिमी प्राचान रातिका अरनाया। पूवावागोंका तर अतर मि भा य राति महुक था। और व राति भागनमें ग गया। गजरगतमें अममें म अतक गराकड निवक।

अक अन प्रवतिराहा थवें जा आश्रमक कडम ग होन गा।

### गुजरान राजनीतिक परिपद

गजरगतमें अिसम पहू गम (मोंग) प्रकाकी कुठ राजनाति च रली था। व मा मूखन अमगावात जा व गममें हा जीर वकात नन कुठ वोंके द्वारा। ना कुगिरा पर व व विअ जानवात कामत कुठ बनता गहा है यत ना कुठ गा मनगत थ। परन्तु प्रान थ थ वि नगा गग कौनना है और अम उगरा केना कौन है। जा दगामें गांधीजीन गांधीगमें गुजरान राजनाति परिपका आरभ किया। अिसामें म आज चकक

१९२२ व बापू गुजरात प्रांतीय कायदे समिति में हुए थे जो आज तक हमारे प्रांतका राजनातिक बल रहे।

### अस्पृश्यता निवारण

अंग प्रवृत्ति का यह है अस्पृश्यता निवारण का जिस अर्थ गंध्या स्थापित हुआ और आजमवाला का मामला कायदे पढ़ने का काम शुरू हुआ। जो ठहराया जा चुका है '१९२१ व बापू अंग में मजदूर विद्यापीठके स्नातक का परीक्षाका मजदूर नामित हुए। जो जय १९३२ में हरिजन मक्क-मक्क की रचना हुआ तो यह गंध्या प्रांतिय हरिजन मक्क-मक्क रूप में बल गथा और आज तक यह अपना काम कर रहा है।

### सत्याग्रहका आरंभ

जिमा कायदे गांधीजीन सत्याग्रह आरंभ की अपनी विचार पद्धति का भी परिचय गुजरातका दिया। वीरमगामकी जवाबका प्रश्न रचनाका प्रश्न प्रकरण जहमगांधीके मजदूरका प्रश्न—अन तीनार मित्रमिठमें सत्याग्रह प्रारंभिया गया। अनमें स गुजरातके लिए नवयमक सबक अपन जाप निकल आय यह भा जल्लवनीय है।

### राष्ट्रीय गिन्ना

सत्याग्रह आरंभ काय राष्ट्रिय पाठशाला आरंभ की गयी। १९२२ में असहयोग छिड़ने काय गुजरात विद्यापीठकी स्थापना हुआ और असमें

१ जातिवासियाका सवाक प्रारंभका भी यका जल्लवनीय करना चाहिये। श्री ठक्करवापान पंचमहाजिमें भील सवा मडक गुरू किया। वंछी वाराठी ताठनमें १९२४ व बापू रानापरज जातिका सवा गुरू हुआ। दुबारा नामक आवासियाक जिअ भी आग चक्कर सवाकाय गुरू आ। जिमा प्रकार वाराया जातिके जिअ खाक गय बोधासणक बल्लभ विद्यालयका भी जुल्लवनीय करना चाहिये।

२ गांधीजीन राजनीतिक परिपदकी तरफ पहली गुजरात गिन्ना परिपद भा भडौंचमें का थी और असमें राष्ट्रिय गिन्नाके विचार घोषित करना आरंभ किया था। राजनातिक कामक जिअ जैसे आग चक्कर गुजरात प्रांतीय समिति बना वम राष्ट्रिय गिन्नाक जिअ भडौंच परिपदमें से आग चक्कर गुजरात विद्यापीठका जम हुआ।

उनके शिक्षण-संस्थाओं में सम्मिलित हुआ। जिस प्रकार विद्यापीठों में जन्म के पर गुरुत्वात् अनेक स्नातक-सदस्य प्राप्त हुए जो वृद्ध-वृद्धों के प्रान्त-विद्यापीठों में लगे हुए।

### आश्रम जीवन द्वारा शान्ति

आश्रमों द्वारा अनजान ही एक सामाजिक शान्ति प्राप्त हुई थी। माता कुरुक शरण-श्रमवाला माता जावन माता पापाक स्वा-न-मान स्वर्गा स्वच्छता और पाषाणा-न-पाषाणा सम्प्रदाय जन्मा जानपान या अस्मयनाक अचनाच भेदनि रहित अकमा भारताय जावन धर्मपरायण विवाह-सद्वृत्ति माता और सगानमय प्रामना श्रियाणि अनक धानाका प्रथम परिचय आश्रमने गजरातका लिया। और अूममें धर्म-श्रुत समय त-... जानवा-... मवक दिन मव चाशामें रह नवजावनक मवका जनतामें फलान रह।

### नवजीवन संस्था

और जिस नवजीवनका मन्त्र गामें फलान और समजान अनक श्रिअ नवजावन संस्थाका जन्म हुआ। अनक द्वारा गजरात और भारतमें एक नव प्रकारका पत्रकारिता भी आरम्भ हुआ। जहाँ तक मय माध्यम नवजावन सामाजिक गुरु हानक फलान जनतामें सामाजिक समाचार-पत्र नाथ परन्तु जमा विचार-पत्र गायक एक भा नहीं था।

जिस प्रकार गुरु और गजरातक व्यापक सामाजिक जावनमें न-... प्रगका जाग्रत हुआ। अूममें म आग चरहर का वरत हुआ अन संवत्स-... म-... म-... कि जिस नवजीवनका मुख्य ज-... का व-... व-... जन-... हुआ।

### जिस पाठशाळा संवत्स-...

गाराजाका प्रवृत्ति गुरु हान पर एक मान बात-जा हुआ व-... द-... थी कि १९२० तक गजरातक जावनमें विद्यमाना हास-... ग-... ग-... ममा आयमभात्र सामाजिक मुषार समाज-मवा आर्थिक कामें जा ज-... अ-... प्रवृत्तिया व-... र-... या व म-... गाराजाका विद्या-... का-... प-... जा-... आध्यात्मिक मवा-... भ-... ममा ग-...। गाराजा मानवक भातर ग-... धार्मिक मवा-... और त्थाकृतिका जावनका प्रपन व-... थ-...। ग-... म-... म-... अ-... म-... थ-... और अ-... कामें व-... काम व-... थ-...। अ-... ग-... म-... म-... द-... बता-...। जिस अ-... म-... का-... म-... ग-... अ-...



गवर्नात जना जनी वक्तिर जनुगार तथा तावत प्रयोग करत अस्य हा रत्त  
 तत्र प्रचारक गांधीजी राजवतम असा म्यात ल शिया जोर गांधी वान ता  
 वत ह्या कि जिन मय शरणावा अत वडा त । वन गती । भिगता कारण मय  
 था कि गांधीजी राज और राजनातिका गांधीजी तत्र प्रथम जोर घमरा  
 अत नती दृष्टि प्रथम वा । याग वक्तिर मयम तथा तामगदि गांधी मू  
 गांधीजी गांधीजी राजवत तत्र अत तत्रा तत्रा मय वा गया । गांधीजी  
 भागत मयव-ममाजना तत्र वधानि मयम ना वत ना वना परन्तु  
 अत दुर्मयना भाति काम करतनाय अत नतिर मयव-ममाज अममें स  
 अत्य हाता गया । बाह्या दृष्टिम त्र्ये ता अत गवराता मयम मुख्यत  
 (१) मयाग्रह आरम (२) गुजरात विद्यापाठ जोर मयजीवन तथा (३)  
 गांधीजी प्राताय समिति—जिन तान वक्तार वाय तारा हाता रहा ।

#### सरदार बल्लभभाभी

और जमक नता वन सरदार वल्लभभाभी पत्र । तत्र व सरदार  
 नता व । गांधीजीजी राजनातिका अत्य हात पर वकीला द्वारा चरनवाणी  
 पराता आरामका राजनातिका अत ह्या । अत राजनीतिमें काआ त्रम नता  
 वा । सरदार बल्लभभाभी अममें अबिर मार नता त्र्ये रहे व । परतु  
 गांधीजीजी राजनातिक पद्धतिमें जुहान वघडक काम करतना त्रिमित  
 आर वनादुरी देया । जिन त्रिअ वक्तार छान्कर व त्रान काममें त्र्य मय ।

जिम प्रकार वकील त्राम जमहाणा राजनातिक १९२ म ता अत्य  
 त्रम मा त्र्यभग १९ ५-३७ तक अत्य हा रहे । बादमें फिर यह प्रवाह  
 वत्या आर जाज धीर धीर यह मय हात त्र्या कि फिर वहा पुराना  
 त्रम ना नहा हा जायगा ? गांधीजी राजनातिक सरवाता ववा चीराना  
 घटका वना शिया वा । जिम परम्परात गजरातम त्रम जमा ली है । स्वराय  
 यमम यत्र परम्परा जाग वमा स्वराय त्र्यो यत्र त्रम त्र्यना त्र । यहा यह  
 अत्यनाय है कि जिम परम्पराती तात्र रारा त्रिअ स्व मयत्रव  
 त्र्याभास स्मारक टाटन गजरात विद्यापाठमें समाज सेवा महाविद्यालय  
 आरभ किया है ।

#### गजरात प्रांतीय काग्रत समिति

जुपर हमन त्र्या कि जिम मारा पीताक दौरानमें प्रांतकी मय  
 गजरातिक सस्था ग प्रा समिति रही है । यगपिताकी वाय प्रणात्री

रवनाबाय द्वारा मगठिन का हना नय ही डगका राजनाति चगनका वा । प्रानाय समिति जुसक अनुमार अपना काम करता रहा है । वा-मकक लंग जरा-जित्याति कुछ समयक कष्ट निवागणक कामान लगाकर स्वग-यका ग्यात्रिया लान तकक काम बह करना जाना है । राकक अनक रचना कायोमें जमन मन् दी है । अमक भिवा जमन स्वानीय मस्थाना और विमान समाद चनावाम भाग जिया है और प्रान्तका जिम पारियामणरी कन्गन वाग प्रकतिना यवस्थित रूपम मागगान किया है । जोर धार धारे जिममें जमन जद्वितीय म्यान प्राप्त कर लिया है ।

१०३० का हभाग जाजागारा लानाक वा-दामें समाजवाणी पारिया वाते गरू हुआ । गुजरातमें भी कुछ नोजवान अपनका समाजवाणी कहन गग । परन्तु एक पारिया माना जा मर जिनना मगगन व गाय-हा कभी कर मक । जुसका कारण यह है कि गाय-मामन मुख्य काय स्वनाता प्राप्त करनेका था । और समाजवाणीका तत्त्वनान हा अमा है कि स्वतन्त्रता आय विना बह एक कर्म ना भुटा नहा सकता था । अमलिज यह वा-जधिकतर वाताका मन् बना मरता था । यका कारण है कि बह गेक करन योग्य कायोमें निष्ठाम लगा हुआ प्रा-नाय समितिरा क्लिग न मकर । अमक सिवा गादीजीन ग्गर समभ दखिनारायणाका मवाका हा ध्यम रखा था और जसक लिज वाय प्रम ना लिया था । अमलिज समाजवाणी लाग ध्ययक-ग्लिम विमा प्रकार वाप्रसम आग नहा थ । फिर जिम वा-का नभी दृष्टिवाग तत्त्वनान भा हागाका पमन् नही आ सकता था । गादीजी द्वारा बनाय हुआ मयम प्रधान हान हुआ भा स्वतन्त्रतावाणी आचार विचारका तुगनामें यह नका दलि गगान लिज अप्रिय हा मजा । जोर स्वतन्त्रता आ गभा है । अज त्यता है कि जिम साम-में क्या हाना है । जात्र वाद्यमन पना मुख्य राय पूरा कर लिया है व नय ध्ययका स्वाकार कक नव जावनमें प्रमाण कर रहा है । अग समय जुसकी स्पधा कर मकनवाणी एक ना मयम मय्या वा राजनातिज पारिया नहा है । गाम्यवाणी और समाजवाणी पारिया ह परन्तु अनका आज ता काओ गाम प्रीष्टा नहा है । सराय जान पर लिङ्ग महाभमा पारिया बहा आगायें बाधा था कि प्रजारा साम्प्रदायिक बुद्धिका गभ अणकर बह अरर आ मरगी । परन्तु गादीजीक बलिगनन जात्र ता जम आगा पर पूरा पर-तुरागान कर लिया है । और वाद्यना सगार अमास्यार्थिक राय स्थापित करनक वारेयें दह मन रगता है ।

राजनीतिवे बापू दूगरे धत्रारा धरा पर आवें ता गिणारा अुगमें मुख्य स्थान है। गांधात्रीक गवाण्य राजनीति स्वराज्य जे गांधन था। अम प्राप्त करन बापू ना रचनामन काय नी करना था और करना है। जममें गिणा मुख्य है। अिग धत्रमें मुख्य काय करनराणा मस्या गुजरात विद्याया रनी है। १९२ में अुगरा आरन नान पर मरवागन माय अमन्वाग करक गजरातकी अनन मस्याअें अुगन माय ज\* मत्रा। अिनमें मुख्य था अहमदाबादका प्राप्ताअिटरी स्कू जाणना परातर जयवान मामायनी और भावनगरका दणिणामनि मस्या। मूरतका सावजनिक मागाअिण नहा अिनी। अिमलिअ वहा अब नया राष्ट्रीय गि तमन्त्र पना हुआ। जमन थाप वय काम किया। आज ता अुमका प्रवृत्ति गगभग यतम हा चका वही जा सकता है।

१९२-२१ की असहयागी हवा कोअी पाच वषमें मन् होन लगी थी। यह आगा नहा रही थी कि अकनी गिणाका भा यति सरकारम स्वतन्त्र करक सावजनिक बनाया जा सक तो भी हम अग्रज सरकारको मान देंग। १९२४-२५ के बापू काप्रसन गिणावे धत्रसे असहयागको हटा अिया। लागाका सरकारी गिणाका मोह दूर नहा हुआ। परिणाम-स्वरूप राष्ट्राय मस्याआमें विद्यार्थियाकी मस्या घटन गी। अिम स्थिति पर विचार करवे अनन मस्याअें फिर सरकारी बनन लगा। अनमें दो मुख्यन अन्तनीय ह १ प्रीप्राअिटरी स्कू अहमदाबाद। २ आणदकी चरोतर अयवान मामाय \*। अिम प्रकार गिणा द्वारा स्वराज्य और स्वतन्त्रताका मापीजाका प्रयाग धारे धारे गुजरात विद्यापीठमें सीमित हा गया और वह अब तक जारी है।

दणिणाम्तिन गजरातका गिक्षामें जो अब नया मागस्तम जोना वह था वार्तगिणावा। असन नायक थ स्व गिजभाजी यधका। अुन्हां छो् उच्चाकी गि ताका विचार गुजरातमें जाप्रत किया। यह आन्तान बड ग रामे अधिक आग न जा सका और अमका प्रचार अपरक वर्गोंमें विाप

\* आग चल्कर १९३५ के बापू यह प्रवाह काञ्ज और विन्वविद्यालय बनानकी ओर मुडा। देखिय अहमदाबाद और आणदकी अिस धत्रकी प्रवृत्तिया।

रहा। १९२७ के बाद वर्धा-योजनाका नया विचार सामने आया। उसमें गांधाजीन शिक्षा-सम्बन्धी अपन समग्र दृष्टान्तको प्रत्यक्ष रूप दिया और अम कायाचित करनेके लिये विनान्तुद्ध और व्यावहारिक माग बताया। बा-शिक्षाक विनन हा मुख्य तत्त्व अुमम आ गय। अिमक सिवा अुममें हमारा राष्ट्रीय आवश्यकताआ और व्यवहारकी भूख मतु करनक गुण भी य। दक्षिणामूर्ति सरया ब- हान पर आ नानाभाओ भ-न अिस नये विचारको अपनाकर भावनगरक पान आग्रलामें ग्राम-क्षिणामति\* नामक शिक्षण-संस्था खोत्रे और शिक्षा द्वारा रचनाकाय गु- किया है।

जिन सब प्रवाहामें गुजरात विद्यापीठन अपना काम अखण्ड रूपमें जारी रया है। शिक्षाक क्षेत्रमें से अमहयोगके हट जान पर अुसन राष्ट्रीय सबक तयार करना ध्यय स्वीकार किया और दगाकी सच्ची ठोस शिक्षाक निर्माणको अपना अुद्देश्य बनाया। शिक्षाका मुह गावाकी ओर हाना चाहिय नहा तो शिक्षा सच्च राष्टकी नहा बन सकता।

विद्यापीठकी अुत्पत्ति अिस विचारसे हुआ थी कि जो शिक्षा स्वराय और स्वतंत्रताके विमुख है वह शिक्षा ही नहा है। अिमलिख स्वतंत्रता और स्वराय प्राप्तिके लिये कोणित करना शिक्षाका अक मुख्य और बडा काय है। शिक्षाके अक्षरमें अमहयोगका मान अथ यही था। अिसलिख विद्या पीठन खानी अस्पृश्यता तथा कौमा अकताक लिये और स्वरायका अडाअीक लिख विद्यार्थी-संख्याकी तरफ नहा दया और आचारसे गुणका अधिक प्रिय समया। १९३०-३५ में नया १९४२-४५ में अिनक लिख अुमन अपना सक्त्व होम लिया। अिमका फल अच्छा हा निकला। अुमक काम सार गुजरातमें नतिव रूपमें फला। और भ ही बहुसंख्यक विद्यार्थी अिग संस्थामें नहा आय परंतु स्वरायकी लडाअीकी पुकार हान पर अुममें गराक हाना ही सच्ची शिक्षा है यह मत्र विद्यापीठकी जलना ज्यादातर कारण मव जगह फल गया। अिम प्रकार अपन मू- अुद्देश्यमें विद्यापीठन पूरी सफलता प्राप्त की।

### शिक्षामें अाति

विद्यालयमें भी अुगता काय अना ही मौखिक और वनियान्त मिद्ध हुआ। शिक्षामें अुद्योगका महत्व शिक्षाका माध्यम स्वनाया होना चाहिय

\* आग बड़कर अिगमें न लोकनाराता नामक ग्राम शिक्षा-क- अक बहा विरमित किया गया है।

हिन्दुस्ताना का गण्डभागात् स्वयं स्यात् अथ तादा जम्भयग -यात् मन्त्र  
 न स्यात् ज्ञाय स्यात् भागात्तादा दूगरा भागात् स्वयं स्यात् त्रिभामें स्थान  
 लक्षित कथाभागा महत्त्वं त्रि ताम भावना और परिवर्त विद्याया अ  
 स्थान अत्रियात् जनक धारें त्रि तादा स्वयं ज्ञान नभ्रा हा गाथा और जम्भयमें  
 गजर वताआ। अमम गजरगतमें त्रि तादा विद्या त्रि प्रकाश पाय  
 पहल्ल-यन्त्र निमाण अथ। जिन कामात् त्रि ज्ञाययत् पुम्नकें अमन तमार  
 कराओ। या कहा जा सकता है त्रि जज्ञायत् और विद्यायात् मन्त्र  
 गजराना माहियमें नया ही गस्ता यनाया और श्रितता हा मीत्रि माहिय  
 जनतात् सामन रसा। गांधीजाका प्ररणात् ग-कायका काम गुरु अ  
 जिनम गजराना भायाका वतमान काय त्रिया। विद्यायात् त्रि तादा तत्र तादा  
 त्रि मुन्त्र पाठघपुम्नकें दी नय गजरगत त्रि प्रारभिक पाठमाला था।  
 जिन सबका स्वात् आज तक गजरगतका ग्या अथा है और यत् काम  
 जब स्वरायक ज्ञान पर अधिक हाना चाहिय जगा विद्यापाठकी त्रिया है।

### अस पीढ़ीक तीन मस्य बल

नया युग पदा करनवात् बठ मस्यत तान चार हा मवन ह

१ राजनीतिक क्रान्तियुक्ति

२ त्रिभामें क्रान्तियुक्ति

३ धम और जीवनम क्रान्तियुक्ति

जिन तीनामें परस्पर सम्बन्ध हाता है। तामरी क्रान्ति मस्य वनि  
 यागी क्रान्ति है। अब तक हमन गांधी यगमें दुबरी पहला दो क्रान्तियाक  
 वारेमें याग चर्चा की। अब तीसरा क्रान्तिये विषयमें दख ।

जिस सारे यगम पन्थी क्रान्तिकी मस्था कायस है और दूगराकी  
 गुजरान विद्यापीठ है। तीसरा क्रान्तिक क्रिअ असी काआ मस्था नही है।  
 अम वारेमें गांधीजीन कहा कि म सनातनी त्रिदू हू। मरा वाजी अनयायी  
 नहा। म ही अपना मचा अनयायी वतनका हमेगा कागिग करता ह। अस  
 प्रकाश वे स्वय ही धमक्रान्तिकी मस्था थ और जतम गहात् होकर जुहान तो  
 धमकाय विया बह मधमुच अवतार-वायके समान ममान और मीत्रि धम  
 मस्थापनका काय मिद्ध हुआ है। अम प्रकार वे मन्त्रक लिअ ओसाकी तरह  
 स्वय अब धममस्था वन गय ह। असका मूल्य समजनके लिअ अतिहाम  
 पर जन्ती हनी नजर डाटनी चाहिय। असस माहूम होगा कि यह पीनी

भारतने अर्वाचीन इतिहासकी मुहूर्त पीनी है। वह सत्यमि जकव वा अक गुजरनेवात्र काथा मामगी पीनी नही है।

### धममें काति

जिम हम सनातन हिन्दू धम कहत ह वह भारतक प्राचान इतिहासका एक माना जायगा। अमुका निश्चिन स्वरूप भारतमें इस्लामक जानम पहलू निमाण हो चुका था। अउते न पहलू ह अक अमका जावन-गान। जावनमात्र अदत है जुमक प्रति कफातर रहना चाहिय। यह पहलू दुनियाक दानामें आज तक अपूव और अस्थीय रहा है। दूसरा पहलू है इतिहासका अनक गताश्रियामें निमाण हुआ हिन्दू जीवन। अनक जानिया और प्रजायें अिम दगमें आनी गआ और अेक समाज बनानी गआ। अुममें जूच-नाचका और अस्वृथताका लया घुमा। अदतका अपामक हिन्दू समाज असी भयकर भूत कर बठा। परन्तु सनातन धममें यह अतिरिक्त अग अक दापक रूपमें रहा है। अिस्लामन युस पर विजय प्रान्त की परन्तु धार धार वह भा बगना गया और दोना धम अिम विषयमें अकने बन गय। अिसीअ अनुगामन फौजो तागीम और राष्ट्रधमवागी गारी जातिया भारतमें आत्रा और क अिन दाना समाजा पर प्रभाव जमाकर रायि स्थापित कर मका।

अिन दोना कालामें जा पुनरुयान हुआ अमके आदिपुरुष धमपुरुष थ। अिस्लामके कालमें रामान कवार नानक रामराम बगरा हुआ। अुनक धमदुग्धका पान करव मिक्क-भराठे पना हुजे। अपजी कालमें ना हम धमगुप्त ही आग व है। यह बल गाधीजाका पालामें अधिकम अधिक व्यापक और प्ररक बना। जानपानकी चारुतागी अूच-नाच भाव तथा अस्वृथताके भयकर जहरक विरुद्ध कर हमारा पानीत सनातन हिन्दू धमका मच्चा तत्र प्रगत किया। जिम ह तक हमन वह तत्र प्रकट किया अम ह तक हम मरत हुआ। अिम प्रकार मच्चे सनातन हिन्दू धमका व गाधीजीन किम्म शिया शिया है और क हमें चनावना ग गय है कि यनि हिन्दुआत जिम जहरका समातन नहा निवाग ता हिन्दुआत और हिन्दू धम शाना नष्ट हा जायेंग। जिगअि जग हमन गरुमें दया जायममात्र बह्य समाज प्राधना-समाज धियागाफा अि धमगान अिम पालामें कतकरय हाकर नर धमकालमें लान हान गय। अम व्यापक बलका प्रभाव जीवन और धमक गय अगो पर तथा विविध मस्याआ पर पडा है। अुन सबकी विम्वत जाच

यस तहा की गा सकता। परन्तु अब धाराता जामें अन्तर्गत करना चाहिये। और वह यह कि हिन्दू धर्मन जात अतिशयमें अलग समय पद ही पहल ता धर्माधता नहा गाता ?

हिन्दू धर्माधता सोचने ह ?

अस्वाममें धमजनन है यत् ता गभा जानन । दूरगत गात् लाममें भी राष्ट्रधर्मी जनून है यह जनन राजनानिज जीर गामाजित है फिर भा वह यद्वाका प्ररित करनवाग जनन हा है। अिन गाना जनूनाम ता हिन्दू गग धम जीर जीवतन धारम जनना नहा बन ? वना जस हिन्दू हायग अपन धमपुष्पना हदयाकी घटना अुमत् अतिहाममें पन्तुपन्तु कम गभन हाता ?

अिन घटनाम यह पीनी पूरी हुआ जमा मानें ता पूरी हाासाता हमारी पीना मचमुच अब मगान पीनी है। अमरा अत्तराधिनार पानवानी पीनी अम हजम करेगी जीर जीवनमें जाकर तियादगी जमा जाता सभा रखने ह ।

७-१ - ४८

३

## सौ वष पहले

[ टाइम्स आफ इंडिया पत्र रोज १ ० वष पहली अमी तारातका प्रकाशित अपन पुरान अवमें मे कोभी न कोभी भाग अदत करता है। जन भागामें से कुछ यहा दिय जात ह। ]

१

पजाबको जीवतने वात् अज्ञान भारतमें यवस्थित राय स्थापित करनता प्रयत्न गृह किया। अहोन नहर खुलवाना जारम किया। परन्तु वात्में एक गय जीर रउके बनानम गग गय। अग वात्का टाइम्स वा अब तबेर नाथ अदत की जाती है

सतीके लिअ नहरें—योजनाम गामित की गभी या सानी जा रही नहरोमें गगाकी नहर सबम बडी है। अमन सभका अदाज

मात्र बारह लाख पौण्ड है। उसकी लंबाई ९०० मीटर है और ऊंचाई ५५ फीट है। जहाँ जहाँ जमीनकी वह जाच सकमा और चार लाख पौण्ड महसूस होगी। यह आश्चर्यक वषकात्ममें वह गुरु हुआ। अनेक अच्छे कामका तरह यह काम अत्यन्तसमयमें तारुमें रण लिया गया। आज यह हार्डिजन जम फिरम गुरु किया और यह डट्टाअमान कहा कि सरकारका समय अच्छी सजायना देनेवाले जिस काममें कोजी हटावट नया जान दी जायगा यद्यपि जम समय स्पयकी मूल तगी थी।

यह भी अल्लेखनीय है कि योजनाओं बनाना और उन पर जमल करना नया अत्यं चार्जे ह।

२

दूसरा अद्वरण जिसमें ज्याला मजदूर है। वह बताता है कि हमारा प्रजा नौकरी और अफसरोंके सम्बन्धमें अम जमानमें क्या विचार रखता था। क्या हम आज भी अम दगासे बाहर निकल गये हैं असा कहा जा सकता है? हमारा लगामें घर निचे उठे जागरणारी और राजागाहाके गण सया ही अुसरी जडमें ह। यह स्पष्ट है कि अुनसे बाहर निकलना चाहिये। नीचका अद्वरण दपण नया काम द सकता है

७ नवम्बर १८४९

सरकारी नौकरी या अफसरोंके कारण जो वनन हक प्रतिष्ठा यगरा मित्र ह अुह हिट्टुस्लानमें जमके मित्रसिद्ध विय गय काम अयवा अया किण गय फजरा महनताना नहा माना जाता परन्तु मौभाग्यम जावनमें अच्छा तरह दू वन हूअ प या नियकि गाय मिन्नमाया विापना माना जाता है। पन्क अश्वारा हाजग विाता नौकरीमें लगानका अयवा दूसरा तरहम गम अहुवानका जा हा मित्रा है य रायन हिामें अुपयोग करनका जब दूम् है अगा नया माना जाता परन्तु जमा माना जाता है कि व मित्रा लाभमें अुपयोग कराव मि अुपरा मिलनयाय विाग अधिगार है। यह धम नूच अश्वारियोंके लकर नीच कमचागिया तर गयमें जोर गय यनोंके फग हुना है।



आजकल हमारे यहां श्रावण बसाया गार मनाया जाता है। अगलमें यह गार आया गया है यह कल जब दजेकी श्रावण ही गार है। बस साधारण छल राकी दया ता हमारे यग बन्न हाता है। परन्तु अम मित्रे काममें नहा गना कयाकि अमग नरा कम हाता है।

यह गार पुराना है। जीस अिदिया कपनाज जमानमें अग्रज भी यह गार मचाते थ परन्तु दूसरे कारणम। वह कारण नाचका गिपणी बनायगा। हमारे देगवे ठोक-स्वभावक विपममें भा शिममें जक आगचना है जा बोधप्र मागूम होनी है।

३१ अक्तूबर १८४९

### दक्षिण भारतमें दओकी खतीके प्रयोग

१८४९ क अतमें आस अिदिया कपनीज स्पयका जपन्यम हकीकी पदावारक सिगसिलेमें अिगलण द्वारा अमरीकाम स्वतत्र बननक लिअ आजमाओ गओ कगानिक योजनाआकी अमकणा भारतक मजदूरोंकी जसीकी बसी दगा और माचेस्टरक अद्योगपतियाकी आगाअें पूरी न होन पर अुनका भारी असन्नोप अिन मवका हमें अुल्लेख करना है।

भारतके ठोगाको यत्रसि अटल घणा है और व समूहमें अकन हाकर काम करनको तयार नहा हात। वे स्वभावम नरम और आनाकारी हैं और अुन पर सीधा देखरेख हा तो ही आना मानकर काम करत ह। कपासकी खतीमें कुछ किया जा सक अमम पहले आपको ममूचे कपक-वगकी सारी आगनामें जम्मूअम परिवनन करना हागा और असा कुछ करना हागा जिसस वे समझ मकें कि समयका मूल्य है। अनकी जरूरताकी सख्यामें आपको बडि करनी पन्गी और अुन पर नीचेक सूत्रका जा असर है वह दूर करना हागा वह सूत्र अट सिवाना है कि दौन्नसे चन्ना अठा चन्नम बठना अठा और अिन दोनामें स अक भी न करके सोना अति अतम है।

आजकल आय-करकी चारा अक बडी समस्या बन गयी है। काला बाजारका तरह जिस सफ चारी कह ता गयत नहा होगा। अुसस कम बचा जा सकता है?

और आजकल कुछ गग जात अनजान खुद मत्यवाणी और प्रामाणिक बनकर कहत हैं कि हमारा नतिक स्तर बहुत गिर गया है।

परतु नीचे लिखा टाबिम्स की सौ वष पहलकी टिप्पणी जिसमें काफी विचारप्रक मिद्ध होगी। अुसमें मुण्-कर (Poll Tax) का सुझाव काफी मजदार है अुसमें चारीका गजाअिग तो नहा ही रहेगी।

१३ अक्तूबर १८४९

भारतकी सरकारी आयका विचार करने पर अक बात जो सबको टिगाओ दनी है वह यह है कि सारी आय अक हा वगस मिलती है। वह है कृपक-वग। अय दो वग — घनी व्यापारी और आम लाग — कुछ भा नहा दते। यह भूल दूर करलक लिअ कभी बार दा रास्त बताय गान ह आय-कर और मुण्-कर। अिसमें गक नहा कि जमीनके जगवा जय साधनासे हानवाली आय पर कर नमें याय है। परन्तु अुग अिकट्टा कम किया जाय? भारतीयकी आयका निश्चिन हिगाय अुनकी सहमतिन बिना मिग्ना लगभग असभव है और कर लगवानक लिअ कभा काभा यह सहमति देगा नही। दूसरे रास्तक विरुद्ध प्रभावगाग मत विद्यमान ह फिर भी हम साहमपूवक कहना चाहत हैं कि मुण्-कर जितना अव्यावहारिक लगता है अुतना वह है नहा।

फरवरा १९५०

## राष्ट्रकी शिक्षाके पिछले सी वय

[ हिमव शान्तिर मस्य माधन सम्र जीर गता नृ । जग्गिष्व शान्तिर  
 मुख्य माधन शान्तिना नष्टिर शान्तवा तथा चान्तिन ह । त्रिमन्त्रि  
 १८५७ म १९४७ तकके भारतके अहिंसक शान्तिशान्तिमें एा गता गिना  
 पर दृष्टिपात करके अुगता अतिहास ना जानना चाहिय । ए भा  
 संगोधनकी अब बडी गिना है । जग मनुष्योंमें कुछ विचार प्रस्तुत करनेका  
 थोडा एव यहा अुद्धत किय गय ह । ९० वर्षक जिन महान एव शान्ति  
 समानमें व अुपयोगी हाग जगा म मानता ह । य एव जिन शान्ति  
 विषयके साथ पूरा साथ ता नही करने फिर भी जाता है कि व कुछ न  
 कुछ गिना-सूचन जरूर करेग ।

१५-७-५७

— म० देसायी ]

१

## राष्ट्रीय शिक्षाका अय

(१)

राष्ट्रीय शिक्षाके पिछले १ वर्षमें अतिहासका विचार करने समय  
 पहले राष्ट्रीय शिक्षाका अथ स्पष्ट समानता जरूर हागा । आजकल जसका  
 जक अथ यह रुठ हो गया है कि महात्मा गांधीजीका विचारधाराका मानन  
 जोर जम पर चलनवाले कुछ घुना गग गजरात विद्यापीठ या जमने जसी  
 'अय सस्थाओंमें जा शिक्षा देते ह वह राष्ट्रीय शिक्षा है । यह जसका अथ  
 नहा है किन जाजक एव शान्ति मान जानवाले लोगके दिमागमें अिसा  
 खयालन घर कर गिया है । जसका मूल अथ तो दूसरा है जोर अुस  
 समयमें ता ही अिस गिनाका जक सनीका अतिहास जाना जा सकता है ।

प्रत्येक राष्ट्र अपन बालकाका शिक्षा देनेका व्यापक जुदाग करता ही  
 है । जुनके माग जोर पद्धतिया अलग अलग हागा अिस अयोगके प्रति जुनकी  
 निष्ठा जोर अपणबुद्धि भिन्न भिन्न होगी अन्के व्यवस्था-सन्धामें फक हागा ।

परन्तु जिस प्रवृत्तिना कोश्री ममाज — काश्री राष्ट्र छोड़ नहा सकता। यह प्रवृत्ति अपन राष्ट्रक मानव धनका शिक्षित बनानवाणी अत्यन्त मौलिक वस्तु है। अमुक द्वारा यह राष्ट्र सजाव और प्राणवान बनता है अपन मानव धनका तयार करता है और राष्ट्रकाय कर्मकी गवित प्राप्त करता है। और अमा जा व्यापक राष्ट्राय पुरपाय है अम उम राष्ट्रका शिक्षा बहा जाता है। यह स्वाभाविक है कि जिसका प्रभाव सपूर्ण राष्ट्रक कन्दर पर पडता है।

जिगण्ड जम दामें बहाकी विमा भी प्रकारकी शिक्षाक शिक्ष राष्ट्रीय विगणण काममें लिया जाता मागूम नहा हाता। यह अमक लिख जकरा नहा है क्याकि वहा जा शिक्षा प्रचलित है अमका समग्र कल्पना अमुक कल्याणक लिख की गत्री है और जिसलिखे वह राष्ट्रीय हा है अत अमके लिख अमा भिन्न विगणण काममें उनका उररत महमूम नहा हुआ।

हमारे दामें जमा नहा हुआ। हम जा राष्ट्राय विगणण अस्मभाल करन ह वह अस्मभाल आदि दगाकी तरर व्यय या अनावश्यक नहा है। अमुक द्वारा हम एक विगण विचार — अक निश्चित भाव प्रगट करना चाहत ह। अमुका बाध करनक लिख हम राष्ट्राय गग रखत हैं। अमा हम क्या करन ह जिसका जाच करन पर हमें राष्ट्राय शिक्षा का अध अधिक स्पष्ट हा जाता है और अमुका मम क्या है यह जस्टी तरह समवमें आ जाता है।

पिछ १०-१५० वर्षोंका अय है भारतका शिक्षा गायका। यह गाय विगणा या अग्रज अम गायरा मचालन अपने दगाक निमें करन थ। जुहान शिक्षा विभाग भा अम दामें नामकक रूपमें चगाया और अक नाम गगरा शिक्षाका तत्र लडा लिया तथा धार धारे अम विकसित किया। यह तत्र हमारा जनताका राष्ट्राय नहा गगा बहा न बहा अममें प्रदिया मागूम हा हाती रहा। जिस कारण अम तत्रकी शिक्षास भिन्न शिक्षाका भाव प्रगट करनक लिख और शिक्षामें अमक जा प्रयाग निय गय जनर वाचकक रूपमें राष्ट्रीय शिक्षा गलप्रयाग जकरा पागम हुआ और जिस कारण वह प्रचलित हुआ। जात्र भी शिक्षा अधमें हम अम काममें लन ह। धरत गच पूण आय ता काश्री भी स्वतंत्र रूप अपना जनताक लिख जा शिक्षा निश्चित करे वह अमुका राष्ट्राय शिक्षा ही है। अमा निदर राष्ट्राय शिक्षाका आयोजन करन या विचार करनका अम उररत नहा

हाना — जगा गवान् यण रहना हा नहा। यण भेग अपनी काथा भा प्रवृत्ति राष्ट्र हिनका विचार करण हा गिदिचा कग्ना है अिगतिअ यण अपन आप राष्ट्राय बन जाना है। परन्तु हमार यहा परराय हानस जगा नहा हुआ। जा कुछ भी गाचा जाना रहा वह हमार राष्ट्र अिती बिगुड दृष्टिस नहा साचा गया। अन जसा कग्नाका जलगम जणरत मग्गुग हुआ और अिस कारण राष्ट्राय गिगा दग्ना अक रानाराय बन गयी।

अिस प्रसार देखनसे हमें आजका चचति अिअ राष्ट्राय गिगा का कामचगण् व्याख्या मिल जाना है। राष्ट्रीय गिगाका जय है पिछनी सणैक दौरानमें राष्ट्रका सच्चा निर्माण करनक हतुस किया गया गिगा-मरधा राष्ट्रीय विचार और तणनुसार किय गय काय। अिमका अिनिहाम हमें दखना है।

अिसलिअ पहेठे हमें यह स्पष्ट समझ लना है कि राष्ट्रीय गिगाका विचार भारतमें विदेगी रायके कारण अुसक गिगा-नाय पर जा अमर हुआ अुसमें स जोर असकी बनैलत अत्यन्न हुआ है। अमका विकास किन किन मणिगामें हुआ है यह हम आग देखेंग। अक प्रकारसे दखें तो यह सारी वस्तु सरकारी अथवा अग्रजी गिशाकी राष्ट्र द्वारा की गयी आलोचनामें और सुधारके प्रयत्नामें समा जानी है असा कहा जा सकता है।

## (२)

### प्रारभ-गुगका विचार

अीस्ट अिडिया कपनी १८१८ तक व्यापार और जमक लिअ चलाय जानवान् गसनक अगावा अधर अधरकी वातामें नही पडनी थी। गिगाकी तरफ अिस कालमें अुमका पहले-पहल ध्यान गया विलायतके अदारमतवाणी सुधारकोके कारण। अन्हांन बताया कि भारतम हम व्यापार करक कमा सार्ये यह काफी नहा है हमें भारतकी गिशाका भी खयाल करना चाहिय। अिमसे (अण्ट करके १८२३ के कपनीके अधिकारपत्रमें) १ गाल वार्षिकका बडी रकम अुम मदमें खच करनका कग्म जाडी गयी। परन्तु दस वय तक अिम वारेमें कुछ हुआ नहा। १८३३ क नय अधिकारपत्रके समय फिर वह वात याद आयी और अिस गिगामें विचार गुरू हुआ कि यह रकम गिगाक अिअ किस प्रकार जोर किस चीजमें खच की जाय ?

यह बात याना राजा राममाहनरायका युग। तबम दगाका गिणाक बारमें जा विचार गन हथा व ठठ आज गाघाजाक यग तक चग। जिनत्रि जिन जिनिहामका राजा राममाहनरायम गाघाजा का गापक दें ता बुचिन हागा क्नाकि दाना पुरुष ममथ गिणाका भा थ यद्यपि व पगावर गिणाक नहीं थ। गानान अपन-अपन जमानमें ममथ राष्ट्रका स्थिति गति और विकामका विचार करव अपन ममथ अनुरूप नियम किय और शिक्षाका विचार दगाक समक्ष रखा।

राजा राममाहनराय वक्ति तथा प्रकृतिम पडिन विगान थे। जानापासना बुनव जावनका अन्वड माधना था। अन्हान दगा कि दगाक लोगारा यत्रि अपना प्रगति करत रटना हा ता नथा विद्याजा और कगाजाका सपानन जारा रहना चाहिये। जिनलिज नथा विद्याक रूपमें अग्रजा नापा और बुमव द्वाग मिलनवाग नय जानको अन्हान स्वाकार किया। दगमें फारसा अरबा और मसूतक मिवा अक नथा भापाक पान भठारका बुजा दगाका ह्मनगत करना चाहिये यह बुनका विचार था। जिन प्रकार अन्हान दगाका प्रचरिण गिणामें अक नय विचारका वडि की और बुसक अनुसार अग्रजा भापाका गिणामें स्थान मिला। जिममें अनका दष्टि गणका गिणाक प्रवाहमें नजा कामना वस्तु बगानका था और जिन प्रकार यह वस्तु राग्याय था।

परन्तु यह वृद्धि अक नथा हा प्रपाग अन्व्र करनवाला सावित हुआ। प्रजाक गिणा प्रवाहका जिनन असा गिणामें मान लिया कि बुमव बारण राष्ट्राय गिणाका स्वतंत्र और अग विचार करना हमारा जनताक जिज जरुरा हा गया। जिन गृद्ध विचारक भातर गामकाका दृष्टिया और सानिधति मिन्नन बुमका गदना हवा हा गत्रा।

राजा राममाहनरायम जिन नय मुजावम विचारक लिज ग प्रान खड अ

१ यह अग्रजा विद्या ला जाय या नया ?

२ और ला जाय तो किस भापाक द्वारा ?

नियम हथा कि नजा विद्या ला ग जाय। जिन गामें विद्याका कभा बहिष्कार नहा हुआ। परन्तु यह निश्चय हुआ कि नह विद्या अग्रजा भापाक द्वारा ग जाय।

आज मार मागूम हाता है कि फराजा भापाका माध्यम स्वाकार करनमें बडा नूल हुआ। जिन अक गलीन हमारा प्रगत विकासका अपार हानि

पञ्चायत है। परन्तु जिनका क्या क्या करना ज्ञान प्राप्त होगा। जिनका ही ज्ञान करना चाहिये कि जिन गणवत् राष्ट्रों जिनमें सरकारों अपने जगत् प्रवेश किया और जिन प्रकार भाग्य सारकारी जिन्हा जगा नया नृत्ति विज्ञान आरम्भ हुआ जिनका सन्नामें और गुणवत् अथवा पुनित रूपमें राष्ट्रिय जिन्हा का जन्म जन्म प्रयत्न करना कारण जन्ममें पया हुआ। भारतका मासुत्तर प्रणालीमें सरकारों जिन्हा जगा वस्तु पायन पहला बार आरम्भ हुआ। अमर साथ प्रजाकोष अथवा राष्ट्रीय जिन्हा अलग प्रवाह ना जपन आग पया हुआ। जमका जिन्हा और हनु गमनत जगत् ह।

अगर जिन सरकारों जिन्हा बना गया है जमका आरम्भ १८७७ में मानें तो गन्त नहा होगा। १८०७ वार राजा राममोहनरायण जिन जिन्हामें जा प्रयाण करने के लिए अग्रज कपनाका जपन मूल्यान मनका समयन-बन्त दिया अमर १८१७ तक अपना स्वल्प ग्रहण कर लिया और दूसरे वय दगाक सबप्रथम अग्रजा विन्वविद्यालयका स्थापना हुआ।

यह नवप्रयाण भारतका जगत् जात्रा राष्ट्रिय जिन्हा प्रणालीमें जगत् नया बद्धि रूपमें था यह ध्यानमें रखना चाहिये। राजा राममोहनरायण मयालय जिनमें कात्रा नया जिन्हा पञ्चनका बात नहा था। व ता यहा समयत थ कि अग्रजा विद्यामें दगाक प्रजात नृत्ति जगत् नया विद्याभन सगता है। जिनोत्तर जन्मान नया विद्याका दगाक विद्यालयनन प्रयत्नमें स्थान लिया था। परन्तु काञ्चन कारण वह जिन्हा दूसरा हा वस्तु सिद्ध हुआ और जिनोत्तर जगत् सरकारों कन्तका जन्मन मन्मूम हुआ ताकि मच्चा राष्ट्रिय जिन्हाका जमन जगत् बनाया जा सक।

२

नये बलाका अस्तर

(१)

जिन्हा राष्ट्रिय है जिनका जगत् यह है कि वह राष्ट्रक समग्र पुन्यायना पापण दना है अम आग बनाना है और अमका विकास करता है वह राष्ट्रक गमस्त जावनमें जितना जातप्राप्त हाना चाहिये। हमन स्व जिन्हा कि भारतमें जिन प्रकारकी जिन्हा था जिनमें अग्रजो राष्ट्रकालमें नया प्रयाण आरम्भ हुआ।

अतिनामकार वानत हू कि अिम नवप्रयागम पूव भारतका जयिकाग जाता पन्ना गिन्ना माग्य र्ना था अिमव अिअ गाव-गावमें म्यानाय व्यवस्था था। अमर सचर अिअ गगान अपन दगम दन्नादम्न किया था जा मरकारा नहा था गावत्रा अपन सामाजिक जाग्याव अनुनाग म् व दन्नादम्न करत थ। कर्ग-बीगा अिग्वानक अिअ भा परम्परगत पद्धति प्रचलित था। कारागरव पाम र्गग वाम कर्ग-कर्ग र्गग माग्य र्ग थ। वाव अिममें जातपान और वर्णवि म्याल गय र्ग थ। अर्यात मारा चाज अुम वाव ममाजक अक सजाव भागक रूपमें मगलित था। अुच्च गिम्बाई अिअ भा प्रवच था। अमक अिअ प्रमिद्ध विद्याधाम थ र्ग जाक विद्यार्थी पन्त थ। अनर सचका व्यवस्था भी म्यानाय हाता था जो ग्यापान न्ना थी यद्यपि राय अममें र्गगा म् र्ग था। अिम व्यवस्थाक माव गान पचायतका हमार प्रवान पद्धति गया र्गा था। या कलि अि गिम्बाई अिअ जनतान अपना प्रया निमाण कर र्ग था अिमका जर्में माग्य भावतनिक प्रारभिक गिम्बाई गान्याया व्यवस्था था।

अिम मारी व्यवस्था पर १८-१० वा म्गाव निवन् वावमें र्ग रायभरिवननक कारण वग अमर पडा था। अनका र्गवा विवर र्ग हागा फिर भा मू रूपमें वह वायम था। और जमका र्गनिद्या गगान ज्तर हानक कारण और गगानि गरा व् तत्र चर्नक कारण अमका र्गवा वाम दता था। भारतका ग्राम-व्यवस्थामें अुमका ज्में जमा हूरा गनक कारण अमका बनियाका नकमान नहा पन्व मरा।

(०)

अग्रजा रायका आन पर ना गानान न्गा वाने र्गा व थ ८

१ परगयन जा गामतन्त्र मडा किया अममें १८ ७ तक भारतका ग्राम-व्यवस्थाका धक्का पडुचा।

२ मगरी और मगरीका गामतगानी मनिक पद्धति मिक्क गला फौतका अग्रजा छावना प्रणाग आरम्भ हूरा। अिमका मनिक वर्गोंमें र्ग वकारी पन् हा गरा। यद् अक म्गापर जद्या था। अमक अिम प्ररार मि अानम ममाजका मनिक जातिया म्नाम र्ग गरी।

३ अग्रजा व्यापारक कारण र्गव अदाय पध र्गन र्ग। य् चाव भा वकाराका म्नाममें वृद्धि कर्नवाग्य गावित हूरा। जतन लागता व् व्यवस्थाका य्ग-व्ग य्गनका कारण भा पन् किया।



जम गनित जातिया ही नही परतु गानन तथा प्रबन्धन कामामें पीना-र-गोड़ी लगी हुआ जातिया जयवा वग नय रायमें क्या कर ?

जिसमें पत्र-व्यापारी वग तथा राजराजमें लग हुआ वग अग्रज वपनाक आइतिय दगा मुनगा पत्रवारा शराणा-बानवा कानूनगा जियातिका जा भा काम मित्त अममें जान लग । अगत मित्रिममें लग-बाग रिचन अनाम भेंट-मोगात आतिव रिवाज अग्रजी सागनमें भी चल पड । बान अितनी ही थी कि य सब धारें कानी-सरकार काममें सीपी बाधक न हा तब तब काजा आपत्ति नही अठाओ जानी था । यह स्थिति सपूर्ण अग्रजा गामनवाल्में जारा रही । अिस अब स्वरायमें कस मित्ताया जाय जिमकी चित्तामें हम आज लग हुआ ह ।

## (३)

सरकार द्वारा गुरु का गजा गिणासे सम्बधित निणय अिस प्रकारकी मानाजिक पृष्ठभूमिमें वायाचिन हुआ । सरकारन घोषणा की

१ गसन-काय अग्रजीमें होगा । जिसलिअ नौकरीय वास्ते अग्रजा भापाका जतरत पदा हुआ ।

२ अग्रजी विद्यामें अच्छ और सुतर ह अिसमें अह गिषामें मर्य स्थान दिया जाय । जिस प्रकार पश्चिमकी गिषा प्रमुख स्थान पर विराज मान था । और अम गिषाका प्राप्त करनेवा अग्रज और भारतीय लाग समाजम जूब दर्जेक मान जान ग्य । अग्रज लोगेन जिस गाराका गरुमार कटा जाता है जुम ग्रहण किया । अिसका आदि आचाय मको माना जा सकता है जिसन वगर समच-वृक्ष भारतका विद्याआक वारेमें अपना मत दनका साहस किया और अतानम अनकी खिल्ली बुडाओ । और

३ घोषणामें यह माना गया कि नजी विद्यामें दगा भापाका द्वारा लोगामें फ जायगा और सारी गिषा लागाक लिअ अकरस बन जायगा ।

## (४)

जिस नजी गिषाके लिअ जो प्रया निश्चित की गजी अुसका मूलमत्र १८५४ स १८५७क जसमें नियमित और गल्बद्ध भी हुआ । अुसके मुख्य जग य थ

१ राय नियत पाठ्यक्रम,

२ सरकारा पमका महायताका नाति और जमक जुनुमा न  
जातवाग सरकारा महायताक बर पर दगाका गिना पर—

३ सरकारका नियत्रण। १८७७ क विवाहक बाँ रायका जुन्न जमा  
प्रवय करना हा गया जिसम फिर बसा विद्रा न हा मक। नआ गिनाका  
पवम्यामै गयका बसापारा जक अनियाग वम्नु वा।

(५)

जिन नय नियमा तथा नय विवविद्याका कायप्रणाग और जुन्नक  
कारण नआ गिना प्रजामै अतरनक बजाय जुमक तावन प्रवाहका अक  
अग्य धारा बन गजा। अकक त्रि जुपमा न ताय ता भारतक गिना  
गतीरमै यह नआ गिना अमक निकम्म अग का तरह हा र्हा। जिनक  
पम्बन्ध पुराना गिना मरन ग्या। परम्परागत अच्च गिना पडिना और  
मौगविया तक सामिन हा गयो जिनका ममानमै काआ आर न र्हा।  
काआ गिरमय या जान्य हमार प्रगाड मम्हन-शाम्नाम अधिक आर-गात्र बन  
गया। जिनस पुरान मम्कार नदरामै म जावन रनका मिचन हाना धार  
धीरे बर हाता गया और अग्रजा भाषाम मिन्नवा नय पान विमान  
मुन्न बन गय और जिन बानका मुग निया गया कि गगाका गिना  
जक सत्राव विवामका वम्नु है और जा कुठ दुआ जुमक बारमै अग्रज  
जिनिहामकार महा लिखता है

भारतायोंके मानमका पूव जिनिहाम जान-ममय बिना जन  
गितिन करनका काम भारतका (सरकार) गिनात हायमै लिया।  
जुमके सयागमै सबक मानस अरम य कराकि अतुन सबमै विमान पाम  
पन्चिमका जानकारा नया था। जिनलिअ व मना जुमक जानन ममान  
ममै स्याग हानक काग्य भरनक पात्र य। जिगणमै जा बडियवन  
जयका मयक्तिर था वह भारतमै भा बसा हा हाना चापिय आर व  
यि जाग जवम्ना गक्तिर किया जय ता जन जायगा। जिनर  
त्रि गिना पडितिका चुनाव करनका चिन्ता करना जग्य नहा।  
विगयनन अविन प्रराक्ता जानकाग कासा माप्रामै गआ जाय ता  
भरनक पात्र तुरन भर हा जायत जमा मान लिया गया।

अब तब त्रिमा भावनाग वान र्हा। त्रिगि विवविद्यायामै  
हानगा विचार वहाका विद्यामै पुम्नहै जिपाति वपाग माग दहा अना

रंग जोर अगता विद्या-ध्यापन हा चळता रंग । त्रिगत परिणाम-व्यवस्था  
समाप्त जावनमें विद्याया वर अगता हा माशामें जोर अगा प्रसारका मयाग्नि  
हा गया ।

बिनता हा नया जगता अगता जोर कथा नररंग पत्ता । त्रिगता अगता  
जगताम अम गि ताम जो मन्स्वपुत्र या बनिवाया इमिया बलाभा गता  
वे वरत नामन आ जाता ह । अगता अगता वरत त्रिगा जाय ता त्रिगता  
अयत शायप्रत जोर रमित अतिशय ३ प्रजाप्राप्त निर्माणका काम रगतया  
बलाया गुन्तर विरचन अगताम ह में मित्र गयता है । त्रिगताम गतर न जातर  
गागतामें कुठ मुठ अपराकत त्रिनिहामराग मलयक गतामें ता अदत वगता  
ठीक हागा

१ भारतका भौतिक तथा राजनातिक प्रगतिता तुगतामें  
भारताय ससृतिर त्रि हमार गिगत बतुत कम काम रिया ३ ।  
हमारी पागतागता तथा कतिजाका आर भारतका दृष्टि वरत  
जावन निवाहक त्रि रहता है गुवा जीवनत मत्रत त्रि वर हमरा  
आर देयता है ।

२ भारतमें विदेशी ससृतिरे विरक्त भावनाजारा गृह  
अगता है त्रिगता जुसत अगता त्रि आक मानसानी जनकल भूमि  
गहा मित्र सरता ।

३ भारतक व्यक्तिव या समग्र जीवन पर अम गिगाका  
गायत ही गहरा प्रभाव पगता जिस्त पर अमवगता प्रभाव न  
हा । ( ५ ४ )

गिगत मिवा भारतमें जा नया गिगतत्र पता हुआ अगता परिणाम  
यत आ त्रि

हमार भारतकी (अप्रजी) गिगा प्रणागताके जागमें फगा आ  
गिगत जनकी नियम पुम्तर हायम रकर चळता है । असत त्रि  
कात्री प्रणात्री या अत्रिपित वानत नही है । नियत समय पर अम  
अमुक पत्रक भर वर भजन चाहिय अमक नियमावा पालन करता  
चाहिय परा शत्रु ह्य जनम अमक अमक कासता विद्यार्थी पाम हान  
चाहिय जोर निरापराका जा अकाल या प्लगती अपथा अधिक्  
नियमित रूपमें आता है घातत मितगाम यत निरचय वर गता पत्ता

कि काजा नियम टूटा नहा है और प्रयोग कुठ न कुठ काम हाता रहता है। जमा प्रयामें स चिग अनौ या मण्मन जन (स्वतन्त्र गिताकारार) निरल जानका जागा ग्यना व्यय है। यह गिक्षण प्रया भारतमें गकर करीर या गगार पया नहा करगी। (५० ७२)

गिताय जव विभावक बरक ममों मनुष्यकी व्यक्तित्व काम कर बना अवमय य प्रया ग्ना हा नगा। गचा स्वय या यकित्व जा भा हा व पागगायक वाटर हा रहना चाहिय। (५० ७३)

जिन प्रकार दूसरा अनेक बात कहा जा सकता ह। परन्तु गार म्पमें ग्य या नय प्रवाहने कुठ मुख्य ग्ण अपर आ गय ह। जतमें जव जातरा जल्लय करना ग्ता है।

(६)

गिता कवक मरकार गु हा न पन्तु गर-मरकारा मस्याओं जिन कामका करें ता अु मरकार म्प जिन नियमम गिता-नत्र चगा। जिनन गिताय धत्रम व्यक्तित्वम मान्मका स्थान मिया। आगाआ मितान भिसवा गम बुगान गग। जिन प्रकार ये भारतमें अयजा गिताका चगतमें अपना हिम्मा अण करन गग जा जन तर जारा है। जिसा प्रकार यामें भारताय मस्याओं भा जिनमें भाग गन ग्या और जहान गगारा नजा विद्या दना गु किया जगा कि वाग बम्बजा और मद्राममें — जा तात मुख्य अयन काण्यिक्त्ति स्थान ह — पाग ताता है। अुपरातन व्याख्याताग राष्ट्रीय गिताक प्रयन जितामें स गल हज।

## धार्मिक शिक्षाका प्रश्न

हमारे देशका समाज स्वतंत्र और समाज जिम्मेवारी प्राप्त ज्ञानम प्राप्त पाठ्यक्रममें धार्मिक शिक्षाका प्रश्न जितना समाज जाग आनसता है जितना प्रश्न कभी नहा जाया था। वस्तुतः बुद्धिवादिनी देवापूजाय प्रश्न। पताश्रियामें जलपत्र हुआ गत महायुद्धके समयमें ओकर सिद्धांत यत्नव-व्याप्त जगतमरमें मनुष्याके हृदयाको क्षुब्ध करव यह मान कराया है कि हमारे व्यक्तित्वम जोर सामाजिक दोना प्रकारके जीवनके पथप्रदान और सामनस श्रिअ कवक बुद्धिनी जपणा किसी अय वस्तुकी भी जरूरत है। भारतमें हम गाय अधिन धार्मिक वसतिवाक मान जाते ह और हमें कभा कभी अिस बातस साधन भी क्पिआ जाता है कि पाठ्यक्रमामें धार्मिक शिक्षाके प्रति उपरकाह रहनेमे हम जपन जन-जीवनकी आरमाको गभीर हानि पचावेंगे।

भारत-मरकारके शिक्षामंत्री मौजना आजात्साहब जमान भी यह प्रश्न अठाया है। १९४८ के जनवरी मामके मध्यमें दिल्लीमें हुनी कर्तीय साहकार मडलकी १४ वी बत्कमें आय हुआ सत्स्योके समक्ष वाग्ने हुआ अन्होन वताया था

आप सब जानते ह कि धार्मिक शिक्षा देनेके बारेमें १९ वा सन्तीका अदारमतवाणी कहानवाग दष्टिकोण कभीका अपना महत्व खो बठा है। प्रथम महायुद्धके बाद भी अिस बारेमें अक नश्री ही समझ पदा होने लगी थी और अिस दूसरे महायुद्धके अन्तमें सामन आजी बौद्धिक क्रांतिन तो जैसे निचन स्वरूप दे दिया है। पहल यह माना जाता था कि धम बालकाके स्वतंत्र बौद्धिक विकासमें बाधक होने है परन्तु अब यह स्वीकार किया जाता है कि धार्मिक शिक्षाका सबया त्याग नहा हो सकता। यदि राष्ट्रकी शिक्षामें अिस तत्वका अभाव होगा ता नतिक मन्थारा कुछ भी मान नहा रयेगा और न मानवताके माग द्वारा चरित्र निर्माण ही सम्भव होगा। आप सब यह वान जानने हाग कि रुमको पिठके महायुद्धके दौरानमें जपनी

विचारसरणा छाड देना पडा था। अंग्लण्डका ब्रिटिश सरकारका भा १९४४ में अपना गिना प्रणालीमें सुधार करना पडा था।

अबता विन्गा सरकारका धार्मिक गिनाक मामलमें अपन आपका अलग रखना पडा था परन्तु राष्ट्रीय सरकार यह जिम्मेदारी जुझतस बच नहा सकती। जनताक नय मानसका योग्य मार्गों द्वारा निमाण करना अुमता प्राग्भिक बनव्य है। भारतमें हम धम रहित शैक्षिक गिनाका ढाचा गढा नहा कर सकन।

स्वाभाविक रूपमें हा अिस बातन हमारी राष्ट्रीय गिनाक अिस जल्दी मवाग पर चचा सडी कर दी है। परन्तु मुझ डर है कि अमकी गनारता और महत्त्वका अठा तरह समजा नग गया है।

प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि अयज्ञा राज्यक विरुद्ध मन १८५७ में हमार लगीका विद्रोहका प्ररणा दनवाग कारणामें अक कारण यह डर था कि विन्गी अधिपति नामक अुहें धमभ्रष्ट करक अधिपति बना लैन। अिसा कारणन राजाकी धायणामें अम समय हमें निश्चिन आश्वामन लिया गया था कि हमारा धार्मिक और कमकाण्डमन्वजा भायताअा और आचारामें काअा मन्वप नहा किया जायगा। अुसक वाग नुरन हा स्थापित का गअा अयज्ञा गिना प्रणालीन धायणका अिस बातना स्कूलामें धार्मिक गिना विरुद्ध न ननक अयमें अपना लिया यद्यपि अुमन साम्प्रदायिक गमे स्कूलक विनाग ता किय। अिगक पाछ अिराग यह था कि अिसा भा अक धमक कमकाण्ड या साम्प्रदायिक मिढानाका मरवारी स्कूलामें मिवाया न जाय अथवा अुनका अनुमरण न किया जाय। परन्तु धार्मिक गिनाका अय बवग धम काड या अमका आचरण हा नहा हाता। अगलमें जब भी धार्मिक गिनाका महत्त्व स्कार किमा जाता है तब अिसा ध्ययका मामन रखव किया जाता है कि मनष्यक गहनतम व्यक्तिबका बाहर साचवर जम मानव जीवन और पुण्ययका विविध भूमिनाअामें व्याप्त किया जाय। वह हमारे व्यक्तिबका अेक जगमून मूग तत्व है अुमका अगता करे ना हमारा व्यक्ति ब विगठिन —विच्छिन्न हा जाय। अिसक अिअ अिसा प्रमाणी जल्द हा ता म हमारे दगा अिअौचित कटाननाला अयता गिनाक परिणामोंका अनाहरण हा लुगा। अुनक कुछ समय अवेकके ही मन में यग अुद्धत करता है।

भारतमें अयज्ञी गिनाक अिनियमकार आपग महत् अरनी पुनक अयगनन और अिनिया में अिस प्रकार अिनत है

गौरवीय गायता रूपमें तथा विषाण आक्राणत और अवृत्तक घटन जिग क्षमागारमें तथा ह्रा ५ भुम गस्त्रागार रूपमें हमारी गिणान गवना जा बताया है। परंतु हृदय तक पारन अथवा विषाण प्रवृत्ति मल पर अमर टाउनका अपनी अमरगारा कारण अगन गना धर्मोता विराधा गामें यात्र किया है। (पृ ३) दूर अगगयानमें यही ग्गक कटा है

धमक मामगमें आवपर रूपमें तन्म्य — अग रहना चान यात्री मरकारकी अपनी गि ता प्रणागत माय अरूपता हानन कारण जम प्रणागमें धार्मिक जागानन धार्मिक प्रभात और धार्मिक ग्म्य नहा रह गया है और अनका कमीन गिणाका जछ या बरने लिअ जिन गायन जावन संत्वत धार्मिक वृत्तिवाक ह अन गायामें मिष्या और अत्रिय बना किया है अिग बात पर पहर जोर किया जा चका है। (पृ० ६७)

भारतमें जीसाओ अुच गि ता मग्ग्धी कमीगन — जिसके जध्यम वन्ध्या वंजिजे प्रिसिपात्र अ डा० रिडस थ—की रिपोत्रमें कहा गया है

पिछक सी बग्ग्से विनासका कुल परिणाम यह हुआ है कि जातपातने पुरान आधार पर बना हुआ सरकारी नौकर क्काक डाक्टर राजीतिज्ञ यापारी अद्योगपनि साहकार कगराका गहरी धनिक बग पदा हो गया है परंतु धमगस्यावे सन्स्थाका — पात्रियोका — कोभी बग पदा रहा हुआ सिवा अिमक कि राष्ट्रायनाके पग्ग्बराको अिस बगमें गिना जाय। (पृ ३६)

वन्धिल वंजिजे प्रिसिपात्रकी रिपोत्रमें किय गय तीव्र जोर प्रभाव कारी कटात्रकी आर म पाठकाका ध्यान याचता ह। अिसके सिवा म अक और बात ध्यानमें रगनका अनसे अनुरोध करता ह। वह यह कि पिछत्री आधी सती और असस भा अधिक समयमें हमारे राष्ट्रीय नताआ द्वारा किय गय राष्ट्रीय गिशा दनके लगभग सभी प्रयासाम अक या दूमरे प्रकारसे नीति और धमकी गिक्षा दनकी ओर कभी लापरवाही नहीं कियाओ गयी। और वास्तवमें वे नता जीवन और धम (वह धम जा स्वतत्र विकासक सबके जमसिद्ध अधिकारको प्राप्त करनसे सम्बध रखता था) के बारमें

प्राणवान् दृष्टिकां स्वनवान् पगम्बर हा थे। त्रिमूर्ति जिन्हें अहं भारतवास्य व्यक्तिवत्ता बुझका अन्तर्गतम गन्धर्वाजामें न चतुर्नावान् बनाना था। और असा करनका अकग धम हा पदाज मानव्य स्वता है। जापर मद्दून अरना पुन्तवनें विलकुट सब बहा है कि

धमक द्वारा प्राणवान न बना ज्ञा कात्रा गिष्ठा सम्य सभमें भाग्याय व्यक्तिवत्त और जावन पर गहरा असर नरीं डाल सकता। प्रगतिवा विराध करनवाट बगका बहा धम राक सकता है वा सहा गिष्ठामें भाट सकता है जा अुन लगामि अधिक प्राणवान हा त्रिन पर विराधा अना ताकतव लित्र आनार स्वत है। (१ ४)

त्रिनत्रा ध्यानमें रक्षिय कि गन्धर्वा धनिक बगन गगनग अक अगा जानिका स्व ग गिष्ठा था और हमार विष्ठा गानुकाका बह माया वा गुणामग बन गया था। त्रिन जानान अिन अरन गगन धमका गिष्ठास दूर स्वनका बात स्वाकार वर ग था। विष्ठा गानुकाके पास ता असा कन्धर लित्र दगक अग्य अग्य धमों और मन्त्रगणान्ता सग्य बनाना था। और क्यसे पम तथा पट —प्रतिष्ठा— क मामगमें मन्धून बन गत्र गिष्ठात बन धमहनें आकर त्रिमूर्ति अरन नय माव पुत्र १ वा मन्धक पांचा प बट्टिवागमें स अिच्छित्त कारण दुःख गिष्ठा था। त्रिन्हा गगाका आज ना बाटवाग है। परन्तु स्वानश्य अान पर जननें ना बग स्वबला मच गत्रा है। पाकिम्मानक जमन त्रिम बगमें ना साम्प्रगायिक विभाजन क गिष्ठा है—दह एक रहस्यगूण घटना है। और गन्धर्वाका दूर हया अन्तर्का जसु हिंग स्नवाणे अक असा घटना है त्रिन पर हम सबका बन्ध गनार विचार करना चाहिये। धम पर आपगित साम्प्रगायिकता जा अग्रवाका अरुनामान्य गन्धर्वा नाच दबा पडा रहा था तदाकथित प्रगतिगाल अग्रवा गन्धर्वाका पूग हा रहा गगामें न जरा ना हानि अगाय बिना सुगभिन सभमें वाग्य निवल्त आभा है। क ग राय प्राणिगाल अक ही अयमें था जोर क दह कि अुन विष्ठा गन्धर्वाका अतमति त्नेका भमिका पर तथा मनधर अन्तिवक अिह शौकिच तथा धार्मिक गग अतिच्छारा विच्छाका भूमिका पर गिष्ठा पाय गत्र लागका अक अग्य गति अुन्न कर ग। धमका स पदक कमकाड वा साम्प्रगायिक भावनाधामें ही नया गुमा जाना। वह ना मानव आमाकी अन्ध गहरा भूगरा आविष्कार है। वह त्रिनत्रा ध्यान बस्तु है कि त्रिहृत्कीच



गिणा स्वयं हा धर्मज्ञ वा जाता है — अर्थात् प्रिन्सिपलितार्थ धर्मज्ञ रूप  
 में होती है। क्या ब्रिटिशों ने लगभग जब धर्म ही नहीं धन गया था ?  
 जुमकी जगत् पश्चिममें आज मान्यताएँ धर्म से ली हैं या नर अधर्मों  
 मय है। महान धर्मशास्त्राचार नर निष्ठ बर्गोंमें गरीब स्त्रियोंके लिये  
 कारगर सिद्ध न हो सकनेके कारण अम पर अपना पकड़ सा बन्दवाया कथक  
 बुद्धिका अन्तर्गत वृत्ति का विनाश वस्तुकी तरफ प्रमाण करनेका सूचक है।  
 भारतमें ना हम अन्तर्गत नाशक गुणगिणित गामन आकर गड ह। अन्तर्गत  
 बर्गों और आम जनताके बाह्य गुणगिणित विनाश काया अन्तर्गत  
 जयवा था हा धर्ममें व्याप्त धर्मना नया है। यह ना हमारे गार् जीवन पर  
 पडा हुआ गम्बा गहरा और अन्तर्गत अन्तर्गत टकर कर दनवाया घाव है।  
 बुमका हानिवाग्बन्ता स्पष्ट है। तात्त्विक स्त्रिय वह गन्त है और जब  
 अर्वाचान आनन्द गन्त और विकसित हानमें बाधक है। भारतका आम  
 जनता अपन यगा पुरान बहमा जाण गार् स्त्रिया और गन्त अन्तर्गत नाश  
 लगभग दब गया है। अर्वाचान गन्तस्त्रियोंमें बाता स्त्रिया का जम जब ही  
 रानिम स्पष्ट कर सका है और वह है जममें स मारा जागा और जावनका  
 मारा धान नष्ट करनेका राति। यह आज हताग मानव-समूह स्त्रियों  
 जा रहा ह। अम फिर अमक स्वचना भान कराना चाहिये। यह काम  
 मच्च प्रकारकी स्वतन्त्र और सर्वांगीण राष्ट्रिय गिणा हा कर सकता है। क्या  
 जममें धर्मका भी काया स्थान हा सकता है ? यदि हा ता कन् कमा हागा ?  
 यहा हमारे सामन प्रश्न है। पार्थक गन्तान यह न समन है कि अमक मागकी  
 कठिनात्रियाकी मज्ञ काया कल्पना नहा है। और य कठिनात्रिया धार्मिक  
 गिणाके मामलमें ता विनाश प्रकारका ह। परन्तु अिसका जय यह नहा कि  
 हम जिन कठिनात्रियाके नाश गन्तगका तरह अपन निराका दवाकर हा यह  
 मान है कि हम जनस बच गय।

जसा अब जगत् गवक कहता है आवश्यकता ता यह तय करनेका  
 है कि व धर्म गन्त निश्चित रूपमें क्या क्या कहना चाहत ह तथा बुमकी  
 गिणा बाह्यका प्रमाण किस ढंग पर दनी चाहिये।

धर्मक विषयमें हमारे भावी नागरिकोंमें जब विगाठ दृष्टिबिन्दु  
 विकसित करनेकी अन्त आवश्यकता है। ( धार्मिक गिणाका समस्या और  
 अमका नया ह — अन्त आन्स गोवन्स व्याजिट प ४४ ) यह किसे

करना चाहिय और किस प्रकार करना चाहिय यह प्रश्न असा है जिसके लिये बहुत विचार और प्रयोगाकी जरूरत है। मन जसा गुल्मों ही कहा या यहा तो न अितनी ही माग कर रहा हू कि हमारे सामन खड अिस महाप्रश्नकी जाच की जाय और अुस पर अचित विचार किया जाय।

६-७-४८

६

## राष्ट्रकी बुनियादी शिक्षा

मडम माण्टमोरान बास्केमें सहज रूपमें काम करनेवाली मानस-शक्ति को सय-कान्यस अथवा अव्यक्त या सूक्ष्म मानस कहा है। व कहती ह कि मूढ या अबाध शिवाजी देनवाले छात्रम बालकमें भी अपन अक खाम निराश्र बानूनके अनुसार काम करनेवागी अव्यक्त मानस प्रक्रिया चलती ही रहती है और हमें मालूम न हान पर भा अुमक अपन नियम जरूर होन ह जिनका बास्के सहज भावम कुतरला तीर पर अयान् अचूक रूपमें अनुसरण करता है। अिन नियमाका यति हम वड योग समर्थे ता हमें बालमृष्टिर् माय काम करना आ मवता है। नहीं तो बेचारे बास्के हमारे दोषके कारण शून्यो हान ह और जनकी शिक्षा गुल्म ही बिगड जाती है। जावरकी दया है कि असा ही स्वभाविक मज्जता अुमन भाता पिनास या मच्चे मानव-हृदयक बास्केमें रखा है। जहा वह है वहा अिन नियमाका अपन आप पात्रन हाता है। जना करने लिये अुन नियमाका बोरी विद्या काम नहीं देता।

मॉण्टमोरीर अिम विधानका अुपमा द्वाग समाज-गुण्य या नागरिकक मानसका शिक्षा पर लागू करें ता या कहा जा मवता है कि नागरिकका अव्यक्त मानस अमका प्राथमिक शिक्षा तयार करता है। अिम प्रकार बास्केकी सामान्य और अनिवाय निगुल्य भावप्रिय शिक्षा नागरिकक अव्यक्त या गुल्म समाज-मानसका तयार करनेवाला प्रक्रिया मानी जा मवता है।

अिमलिअ अिम शिक्षाका विचार करते समय यह याद रखना चाहिय कि अुमक द्वारा हमें समाज-गुण्यक अव्यक्त मानसका शिक्षित करना

है भुग मान पर अिन गिभावा अमर हाता है । अिगलिअ वर बडी ह् तर ममय गमात्र जीवना गाय महर नाग अाप्रता हाता पाति । गमात्र जीवना मूत्र जीर प्रारभिक व्यरगत आग बालर अिगमें न रूप प्रग वरग और विकमिन हाग जगा ममगता पाति । अर्थात् शालामें बालरता ज्यानतर अिन मूत्र व्यरहाराहा अपन भातर गुय एनशान ग्याभावि जीर समचित पाग ब्रावन जीवता अवगर मिल्ता पाटिय । बालर भुय भावम जम जीवनामें जानपुत्रक गणा जीर जुगग अगता गमात्र मानग स्वभावत गिधिन हागा । गिभा वर वयक्तिर प्रकिया नहा है वह सामाजिक पानवता तयार करनवानी सामाजिक या सामुन्त्रि प्रकिया भी है यह न भूना चाहिय ।

अिस प्रकार बालरक मूत्र मानगकी अपमा द्वारा यन् जनना बाल नागरिककी गिभावा विचार करे ता मनुष्यके समूह-जीवन जीर व्यक्ति-जीवनाके मूल व्यापाराके वारेमें हमें सोच ेना चाहिय और अुह गिभामें गुय दना चाहिन । अमे जीवनाके मल व्यापार क्या है ? मरा सयाठ है कि व विरकुल आमानीमे गिनाय जा मरत ह

१ तदुहस्तीकी देखभाठ ।

२ अद्योग और इनर-वला — अुत्याक परिधम ।

३ भागाय जावनकी समस (हाय-वानके अलावा आया द्वारा) — पानोरामना ।

अिन वस्तुआका प्राथमिक गिधामें प्रत्यग स्यान होना चाहिय । अितना पा रपना चाहिय कि यह किमी पडितकी तरह या लेमन करनवाले वगारीकी तरह न हो परंतु जीवनाके ममयन और अुसमें स्वय सहयोग देकर असे ग्रहण करनकी अुत्कृष्ठा रसनवाठ मानसके लिअ आवश्यक ढगसे हो । अयात् यह प्रकिया प्रवृत्ति-परायण जीर अद्यम-परायण होनी चाहिय ।

अिस परमे जाग वरकर देखें तो सच्ची प्राथमिक गालामें अितना काम होना चाहिये

(१) स्वठना और आरोग्यके अिअ बालरकी और गालाकी सफाअीके काम प्रत्यश कराय जाय ताकि अुनकी आदत प अस्वच्छताके लिअ घुणा पदा हो हायासे सफाअी करनमें घणा या हल्कापन — जो अक झूठ बडप्पनका प्रशन बन गया है — न मरुम हो ।

शिक्षा सामाजिक भाग है हमारे घरके ममान बन रहे गावामें स्वच्छताका शान्तिव वाज बाना । प्राथमिक शिक्षामें स्वच्छता और सफायाका राज आयेक घटका कामक्रम अगत नागरिकके अत्यन्त मानसमें यह वाज घोसगा जा आग पनपकर बटा वृत्त बन जायगा ।

(२) बायककी काम चान्नवाग शिक्षाका तागम दनक शिक्षे अगायक अद्याग हागा । शिक्षा वह अपयागा सजनका रम चयगा । किना प्रकारक खर्चमें नहा परन्तु समाजन शिक्षे अुपयोगा नमजन कर्ममें बद्धि और विवकरा जो व्यवस्थिति हाना चाहिये अमका अान्त अम अपन-आप पडगा । जसा कजा गग मानन गगत हैं अुद्याग कवट बायकका शिक्षाका तागम दनवाग हा नहा है वह अमका बद्धि तथा विवक शक्तिका ना अनजाने परन्तु अचूक गगस विकाम करता है । अमका समाज जाभाका निमाण भा शिक्षामें निहित है । आशिक्षास खर्वे ना मानवका अधिकाग विद्याओं शिक्षा प्रकार प्राप्त हुआ है निमाण हुआ है और विकसित हुआ है ।

अब हम शिक्षे अुद्यागका सामाजिक पन्त खर्वे । वह यह है कि अेक गतागन अधिक समयम गका शिक्षा प्रणालीमें स और अुसक परिणाम स्वल्प माना गगके मानसमें स ही कजा-कौशलका जा तागम मिष्ट गगा है वह अुद्यागस कारण फिर अपन आप दगस बायकामें जड पकडगा । अगत राष्ट्रमें अुद्याग व पन्तवार बड काम घघा वट ता हा वह राष्ट्र खडा रह सकता है । अिनक शिक्षे गक नागरिकका प्राथमिक शिक्षाक मूसम मानसमें अुद्याग और हुनर-कजाका अान्तें मुक्तिार रूपमें निमाण हाना चाहिये । गांधीजीकी धनियादी शिक्षामें यह अक बड महत्वका चाज है शिक्षाका आर अभी तक थाड हा शिक्षाकारका ध्यान गया है । मसका अुनहण यग ध्यानमें खने लायक है । १९१८ स वहा शिक्षामें जा शान्ति हुआ व अुमक अत्यानका आधार है । (शिक्षे वारमें देखिय शिक्षे सस्य पड — सस्यक ज० बा० कृपागना प्रकरण ६)

(३) अूर तागरा धाज बनावगा गगा है — सामाय जीवनकी गमम । हमें याग ख्यना चाहिये कि बायक जग जमा स हागा है वहा अमी गगस वह जीवनका समझना चाहता है । पर, मात्र-नामान अमक सनी बाडा गांव साग समाजनत्र सरकार आशिक्षा जा जा और जहाँ जहा अुसक आगगागर जीवनका सग करत है वहा वहा अुद्धे प्रहा करतक शिक्षे

## गाधीजीकी पाप पद्धति

अब यह हम अब गण्डूत नामें जना छाती पर बरी हुआ किन्ती मरतारम ग रहे थ। अिस काममें हमन कमग कम ६० थन ता थिय ही ह। यह आज दीपकता गह स्पष्ट है कि पापगता जम जान जनतान जिमी अब जाकपर अतिगमित कापन थि हआ था।

नरम विचारन राजनातिमान अप्रज नामकता जूनरण करन वधा निन काप-गद्धतितता विनाम विधा। जममें काप-नाननता जोचिय जन्ती तरह सुरक्षित रहता था। यथि अनन हा जोचियता विचार करना हाता ता वह पद्धति काफा होना। हम जानन ह कि सरराय मोननाउ आतनात्रिव दगामें आम तौर पर अितना काफी हाता है। नरम लाग मुराग्यन थिअ जस्तरतस ज्याग चिन्ता करत थ अह विन्ता रायकी आनतिक बरात्री गरू गहमें दियाकी नही दी थी। अिसथिअ अनकी वह मयाना पद्धति अन मोके पर जमका सिद्ध हकी और १९१० व जमानमें भारतीय जनताको अपन स्वाभिमानकी रक्षा करनक थिअ नयी पद्धति ठूड़नी पडा।

यह व्यावहारिक बात तो स्पष्ट ही थी कि कोभी भी नभी पद्धति आगाका जुपयागी जीर बारगर मालम हानी चाहिय। अिसके विना ता गग किसी पद्धतिके पास तक नहा फरकते। परन्तु अिसके अलावा वह याग्य भी होनी चाहिय। अिन दानो गतोंनो पूरा करनवागी पद्धति लोगोन गाधीजीके सत्याग्रहमें देखा। देखते ही अहें प्रतीति हो गभी कि यह पद्धति और य नता अब हमारे लिअ अपयुक्त ह।

✓ अिस पद्धतिके जाधारभूत सिद्धान्त दो थ — सत्य और अहिमा। अन पर निर्मित पद्धतिके सिद्धान्त भी दो थ — असहयोग और कानून भग। य साधन अुचित हेतुक थिअे काममें लिय जान चाहिय। अनक अपयोगमें पूरी सामाजिक जिम्मणारीका भान होना चाहिय। समाज गरीरक लिअ वे हानिकारक नही हान चाहिय। अिसथिअ चाहे जसा असहयोग नहा किया जा सकता। चाहे जसा कानून भग भी नही हो सनता। करना समाज छिन्न भिन्न हा जाय। अिसथिअ असहयोग अहितक होना चाहिय कानून भग सविनय होना चाहिय यह स्पष्ट बता दिया गया।

अिम परम निश्चिन गणामें यत् सत्याग्रहण गस्त्राका वणन करना हा ता व ग ह

१ अहिंसक अमहत्या।

२ सविनय वानन भग।

जिन दा विगणणामें अिन सायनाका औचिय हा नहा ममाया द्रआ है अुनमें जिनकी अनिवाय प्रभाव गकिन भा निश्चिन है। जिन दा विगणणारी भावनाआओ जिम ह् तत्र लाग कायम रवेंग अुम ह् तत्र अनका गकिन अमोष वनगा यह निष्प ममारक धारणक नतिर कानूनम निक्ता कर वनाया जा मक्ता है। जिमाक त्रिअ गाधीजा अपन ग्गस कहत हैं कि सच्चा मयाग्रह कभी हारना ही नहा।

अक मूग्म विवेचन गाधीजाक अहिंसक अमहत्याग पर अमी मामिक आगचना का है कि यह अक निपघातमक वस्तु है अमका विघायक भाग अृतना मामन नहीं आना।

अिमता अय यह नहा कि गाधीजाता पद्धतिमें कव ग निपघवा हा है। कवल गलको दखनस जमा अम जर हा मक्ता है परन्तु वह ठीक नहा है। गल अपन जमराकी मुख्य आवयकताके अनुमार पदा हाता है। जिम कालमें गाधीजीका पद्धति दगाक मामन पा हुआ अुम समय मरकारक साय अमहत्याग करनकी भावना मुख्य थी अितना हा नहा जमा करनमें निपघातमक नहा परन्तु वहा विघायक रहस्य निहित था। जिमलिअ वह गल मामन आया। और अमका विघायक भाग जा राष्ट्रक मजाव मह्यागम मन्वय रपता था धारे धार अुन्य हाता गया।

१९०४ म जा रचनात्मक कायकम गणप्रवाग गु हुआ है वह जिम जन-मह्यागन कायम ही मन्वय रखता है। जिम प्रकार अमग्में गाधा-पद्धतिक तीन अग मान जा मक्न ह। और यह तीमग अग अिनना व्यापक और विगा हा कि गाधीजीन अपन ग्ग्या और भापणामें अुग जावार मना अगा और अग-अुपागारा ममावग करनवाग वजापा है। यह अुनर तत्वगानना विघायक भाग है और मच पूछा जाय ता अगाके च पर प्रागगिक काम देनवा अगोक्त दा गाधन अपनी गाधनताका वल प्राण कर मर और कारण धन म हा।

गाधीजीकी गनानन पद्धति मत्वमय और अहिंसामय वावनता है। अगमें एनर प्रगग आयें—और व ता आवेंग ही—अग समपरे लिखे

सत्य और अहिंसात्मक युद्ध प्रणाली भी अगामें निहित है। यह यह है कि पाप या अनिष्ट का माघ अगस्त्याय दिया जाय और जल्द ही या अगस्त्याय सविनय प्रतिकार करने का विधान भग दिया जाय।

यह हुआ मारमें गांधीजीका पद्धति। अगस्त अगस्त अगस्त अगस्त ही दिये ता व नय नहा ह। परन्तु अहान अिन मकर आग आ गुणयुद्ध पद्धति शास्त्र और तत्त्वज्ञान-युक्त नातिथम दिया है जा अन्तर्गत अमृत्युत्त है।

अिग बारमें अब सगारका भा प्रकति हा मत्रा है। अिग अन्तर्गतमें अिग पद्धतिना जम पिछली मन्तोर अन्तिम अन्तर्गतमें हुआ। तबज जब तब अमन तरह तरहका बगौटिया पार वा ह। बग जा मरना है कि पिछले विन्वयुद्धन अुसकी आविरी पराशा कर ला। अिन मन्तर्गत अिनना ता जगतक विचारका मत बन गया है कि यह अब अगस्त्याय चीज है जिमकी तरफ ध्यान देना चाहिये। अम पर व अमृत्युत्त कर मर्के या न कर मर्के यह दूसरी बात है।

मञ्जी १९४७

८

## ‘आखिरी प्याला’

१९३१ में गांधीजीके अिग आखिरी प्याला \* गानवाक कवि शबरचन्द मघाणी आज सगरीर विद्यमान नहा ह अिसअिग आजरी गांधीजीका मना दगाका वह कवि हृदय विन गलामें वणन करता यह ता कौन कह सकता

\* यहा गुजरातके प्रसिद्ध कवि श्री शबरचन्द मघाणीकी छत्रो कटोरो नामक कविताकी ओर सकेत ह। यह कविता अन्तर्गत अिग अिग अम समय अपणकी थी जब व १९३१ में दूसरी गोलमज परिषदमें शरीक होन लन्दन जा रह थ। कविताकी दो लाक्षणिक पकितया अिस प्रकार ह

छल्लो कटोरो झरलो आ पी जजो बापु!

सागर पीनारा! अजति नव ढोळजो बापु!

ह बापू जहरका यह आखिरी प्याला तुम पी जाना। तुमन तो जहरका महासागर पी डाला ह। अब गोलमज परिषदमें मिलनवाली जहरकी अजलिको गिरा न दना अुस भी पी जाना।

है। परन्तु जितना सहा है कि आखिरा प्याग ता आज गायातक पानक लित्र आ रहा है। अक गुगम दगाका अमका गुलामास छुवानक लित्र नडास ग्रहा करक त्रिनिदानन न कना त्वा हा न जाना हा अिम टगम अम षय दना दनेकी घडा अम पुष्पक जावनमें कया हाना चाहिये। १ १ में लाकनायक अिम मनाग्न विग त्न पर अुनक हायानि गायातान दगाका स्वरा उ-बूचका यग आग दानका जिम्माराका भार अवन कषा पर लिया और धमभावना तथा त्गनक माय जाग बणाकर आज लित्रामें जम नग किा है। परन्तु— फिर भा — ता ना यति दामें आज सबस अधिक दुःखा हृय विभाका है ता वह महामा गाथाका है। कुरनका खल ममज्ञमें नहा आता। जिना समय त्रिन महानुभावक हृयमें भारतक भविष्यक भयम्यान दान त् हैं और अुमा समय वहा धनप वहा बाण हान पर भा अन भयाका दूर करनमें आज वह गचारा मन्मूस कना है जोर अिमलित्र तुवा है। अुनन अस्मिक धममुद्धन स्वगाय त्नका बाण अगया। प्रावान मग भारतका तरह वह सफ त्जा परन्तु जन्में यद यद हा ठहरा। काम निवग ज्ञान पर बय उरा ग जाय का तख धम फिर गिविग णडकर पाछ रद गजा है जोर युद्धाका मग जम त्ना छनवाग मना भावनाओं फिर मानव-हृयमें जवग्न ग्या ह। जिनालित्र महानाग्नक अतमें बच त्ना सना ममयग्न पात्र विद्यात्म विप्र हा जात ह और मानव गनायक मनातन त्रिनिदानक जाय आत्वक कवि-श्रुपा बहत है

अध्वबाविरोन्वय न च कचिच्छाति माम् ।

धमायन्व कामन्व म धम कि न मुञ्चत ॥

[ गाय अुवा क्क मैं पुकार-मुकार कर कह ग्या ह परन्तु काजा मरा दान मुनता नहा। धमा अय जोर काम गाना त्त्र ह ता लित्र जस धमका मवन कया नहा किया जाता ]

और धमराज आन्वय प्रक करत है कि हम मचमुच यदमें जात है या फार है?

अतर्षो षयावाग नवात्रयो यज्ञान ।

जनाश्रमत्रयाकारा जयन्तुमान परात्रय ॥

[ अय जगा श्रानवाग यद अनय हा है जिा जयका स्वल्प परा जयका होनक कारण हनारा यह जय परात्रय ही है। ]



मारात अगिमत वहे जानवाल युद्ध थायें हमारी अनी हा त्या दृष्टी लागता हे। यं यद्ध वास्तवमें अगिमत था हीं नहीं — स्वयंता यद्ध था। अिमरा मदन यं अगिमत हीं त्या है। स्वयं हात पर भा हमें अम स्वयंत्रताया स्वां नया आता। पाकिस्थानत हमें हरा सिंग अनी पराजय-वर्द्धित वरग लाग अबल जं सिंगारा दत ह।

और गांधात्री तय अया करक वं रं ह मय और अगिमत बिना बात भा तुम्हारा काम नया चरगा तुम नया मुक्त अिगतिभ में जना मुं बल नया रग मरता। अनाति और राजधमका अगभा मानव धम अष्ट है और अिम अनातन धमक अलगत जना समाय अ ह। अिग भा हम अन्का बात नहा मानत। अिम अगाका कल्याताका जागिरा प्याग पाता क्या पगम्बराका सामाय भाग हा हाण ?

१८-३-६३

## ९

## स धम कि न सेव्यते ?

महाभारतका मारा अितिहाम अिग अन्क बां अतमें महाभारतकार स्वय हा मार निकार कर कहत हैं

अन्ववाग्विरोम्यय न च क्वचिच्छान्ति माम ।

धमायन्व वामन्व स धम कि न मन्वते ॥

हाय अचा करक म पुरार-पुरार कर कह रहा ह परतु काभा मरी बात मुनता नहा। धमम हा अय भा और काम भी मिद्ध होता है अिस धमका मदन तुम क्या नहा करत ?

और धमपूवक काम तथा अय (अर्थात ममत्र तावन) व्यतात करना जा गया अमक बां अिस अतुय अयवा तुराय कहत हैं अमक सिद्ध हातमें क्या वुठ वारा रह जाता है ?

धमक अन् और व्यापक नियममें थडा गांधात्रीक जीवन-कायका समपनका वं कुत्रा है। य धम और नियम व्यवहारमें और परमायमें व्यक्तिगत व्यवहारमें या प्रत्यक जगन-व्यापी मानव-व्यवहारमें समान रूपम

सत्य हैं तथा अनुकूल पालन या अनुत्पन्नका अच्छा-बरा परिणाम अवश्य होता है—फिर भले वह किसी मर्यादित दृष्टिमें जल्पा या दरम अनुत्पन्न होता गया। चतन-वस्तु और कमवस्तु दाना अथवा विषयका दा अर्थ अर्थ पदार्थों द्वारा किया गया निरूपणमात्र है। और जिसलिखित कमका नियम अर्थात् धम चतन-वस्तुका तर्क ही व्यापक और अर्थ है। अतः अर्थमें वह तो धमक अनुसार किया जानवाला कम हा चतन-कम अथवा आवर-कम है। जिसलिखित धम और कम दाना अथवा बनकर रत्न ह तब चतन अपन पूर्ण रूपमें विराजमान कहलाता है। जिसका अनुत्पन्न पुण्याय — मायाका नाम दाना हा ता दाजिय यद्यपि यह यादा गौण बात हुआ।

गांधाजा धमक अिन विन्व नियमका अनुसरण करनेवाले धम-पुण्य व। प्रत्येक कम धमकम हाता चाहिये भू ही वह कम व्यक्तिगत या गणनातिक शत्रुमें हाता हा या स्वजनक रूपमें अथवा शत्रुक विच्छेद हाता हा। अिमा व्यभिचार शू चारा वगैरा यि अथम हा ता य मत्र अपन या पराज मित्र या शत्रु मत्र मायक व्यवहारमें समान रूपम अधम हागे। अिनता हा नहा अच्छम अच्छा अदृश्य पूरा करनेक अि अथान अयाया अयाचारा या जातिमका मामना करनेमें गुणमाम मुक्त अिनमें अपन कुम्बिका मरण-मायण करनेमें या स्वल्प-मवा करनेमें भा अिन अधमरूप कमोंका आशय हरगिज नहीं लिया जा सकता। कारण अधमम कमा अच्छा परिणाम नपा आता अधमम ता हमार अच्छ हुनुक माय हमारा भा नाग या हाता है। साथ ही अयाया अयाचारा शर और जातिम मनुष्य राजा या ध्यापारती नोसरा करना या अनुम काममें माय अना या अनका कारवायाका स्वाकार करना भा अनुम हिमा चारी शूठ अियातिमें भाग अना हा कया जायगा। धामिक पुण्य कमा गुणमा अयाचार या अनाचारका चुनचाप महन नहीं कर सकता।

परन्तु अयाय और अयाचारका प्रतिकार धमपूवक कम किया जाय ? अिम मामलमें गांधाजाका दा हुआ दन अनुकूल अतिमाय अन था। पाप यदि अमत् है—अथम है ता अनुकूल अपना स्वतंत्र अन्तिम हा नहीं है। पाप स्वयं अपन बल पर कभी मडा नहा रह सकता। अतः अन्त-मूक्त या मडा रहकर अि अमनस पापका ही बल चाहिये। यह बल मिलना बल हा जाय ता पाप अपन-आप नष्ट हा जाता है। अयाचारा अथवा जातिम आत्मा अपना

अप्याय और अत्याचार अगु अप्याय-अत्याचारमें सामनने मित्राणा गत्यागने वर पर ही पगता रहता है। अत्रिात्रि पानी या अप्यापीके सिद्ध लडाभी सबसे पहउ अगु पाप या अप्यायव गाथ हूम स्वयं जा मत्याग करा ह् अगुने वर वरनम अथान् अगत्यागग ही पुन होती है। अत्रिगता दूगरा नाम आमगुद्धि है। हम अपनी कमजारी या पापन नारा ही दूगरा जात्रिम या अत्याचारी बननमें मरन न ह। अत्रिगत्रि पत्र हूम वर गत्याग दा वर कर दें जोर जम मर्यापन जाधार पर हा स्वयं मर राना या पत्रा पत्रना बद कर दें ता अपन-आप आधा या शायन पूरी लडाभी बनन हो जाना है। कारण सामनवाल अत्याचारीका आधा वर अमन कम हा जाना है जोर हूम स्वय अस ह् तन अधिन मव वन जान ह्। हमन अपनी आत्मगद्धि कर गी हा ता फिर अत्याचाराका बनन करने त्रि शायन अन ही बदम वाकी रह जाता है जोर वह है प्राणाना वाजा ग्याकर भा हम जमन अत्याचारके अधान न ही और असने साय सीध मधपमें आपें। अथान धमका ही दत्रास अनुसरण कर। अस करना अत्याचाराका पूरा तरह मतम बननका साधा वरम या जात्रिरा फमग सावित हाता है कयाकि धमका मत्य अम समय असक अधमके विरुद्ध सीधा टकर गता है। और यह तो सग वान है कि सत्यके सामन असयका त्रिा रहना सभव हा नहा है। परतु हमारे द्वारा धमक त्रिम सत्यको जमग बनाना आसान नहा है जोर आसान है भी। कयाकि अिममें धमक लिअे आत्म-वर्द्धिदान ही करना हाता है। और यह वत्रिान जिनता गद्ध — जर्थात सच्चा हागा जतना हा धमका जपराक्त अत्र नियम अमठा बनन गगा। यह आम-वर्द्धिान अथवा तप अम अप्यापीक विरुद्ध लडी जानवाकी लडाआमें सीधा — आत्रिरी बदम है। त्रिमत्रिा गांधीजी कहने थ कि अक ही सच्चा सत्याग्रही हो तो भी स्वराय जवय आवगा। कयाकि अस अरुके गुद्ध — सच्च वलिनानस धमका वित्र नियम जमठी बनन लगता है।

वापूजा स्वय अस सचे सत्याग्रही बननका सनत प्रयत्न करत थ और त्रिस वातमें कया वाभी गका हा सकती है कि अनके अकेकेक अम सचे सत्याग्रहके सामन — या या वहिय कि सत्यके प्रयोगके सामन भारतमें अत्रजी सलतनतके असत्यकी अमारत हमेगाचे लिअ टूट कर धरागापी हो गगी ?

वापूजाक त्रिम आम-वर्णिन अथवा तपक प्रसगाकी भाग नाच धारनस अत तक दा गजा है। जक प्रसगाका नरु अपवानक प्रसग भा वयाय पठ, वगराक विरुद्ध आत्म-वर्णिनक या माघा वाग्वाजाक हा प्रसग कह जायग। परन्तु अपवास खास विरुद्ध मयाग्राके भातर विचार पूवक ग्राया जानवाग असा नाजुक कम् है कि अुस आम उननाका ल्यागामे सामूहिक कम् नहा बनाया जा सकता। त्रिमार्गि अपवासक प्रसगाका जेक प्रसगामि अग रखा गया है। परन्तु मयाग्रहा पुपक दृष्टिकागम भाके ता व मभा समान रूपमे आत्म-वर्णिनक — तपचवकि हा प्रसग थ।

अतमे अेक वान अप्रमनुन रूपमे भा कह ना अचिन माग्म हाता है। अजाके विरुद्ध ल्या गजा ग्रागामे गाधाजान जननाम आमगादि — अमहागम ग्राकर साथ आविरी कम् (आम-वर्णिन करेग या मरेगे) तक कम् अुठवाव। अपजाका मग्म मानना करना मभव नहा या त्रिम गचाराक वारण प्रजा या-वदुत अगोमे गाधाजाक त्रिम काय रूपमे गामिग दृष्टा। फिर भा या कहता चाहिय कि अेक मच्च धम-मुपक — मयाग्राक वर पर हा प्रजा मुख्यत अपना आजानाका मवम हागिग कर सका। त्रिमा प्रकार गाधाजा पाकिम्नानक पापक विरुद्ध भा मपुन मग्मनाम प्रजाका नभव करत। गाधाजी विभाजनका पाप कहन थ और जमा व त्रिम गक मच्च अयमे कन थ। अन्हांन वभा मग्मानाका विभाजनका मागका हिमा भा दलिम स्वाकार करन याग्य नहा माना। और जम हरिजनाका मवग त्रिगामि अग्य करनक मवढाना डक विच्छक कम्क विरुद्ध अन्हांन प्राणाका बाजा ग्या ग थ वसा हा भारत-भाताक त्रिम विच्छक वाग्मे भा अन्हांन किया हाता वाग्ण य विच्छ अहे पाप का नरु गता थ। पाकिम्नानक विरुद्ध अपना लडाआक त्रि अन्हांन प्रथम आमगादिका कम् प्रजा द्वारा आरामि गुरू वगनर त्रि अपन गगम पग भा कर दिया थ। त्रिम आमगादिक कम्तर या अनका पाकिम्नानक विरुद्ध माघा — अन्तिम कम् भा जेर आना जोर अुम अक मच्च मयाग्रहा धम-मुपक वर पर हा बडा हू तक पाकिम्नानक विरुद्ध लडा जानवाग यद ना मग्मना पूवक पूरा हुआ हाता — जोर गाय मव गाचन अमन ददुन जला पूग हाता। परन्तु अपजाके विरुद्ध मग्म यद करनेमे जा गचारा प्रजान मग्मूग का व मग्मानाके विरुद्ध लहनमे अम त्रिमाशा नग ग अित्ति पाकिम्नानक

विश्व अहिंसक यद्धमें गांधीजीका अनुकरण करके वर आनातानी करा गया। फिर भी वर वीररायण अपनी जानना जान मान पर ल जात त्रिभ साह्यपूर्वक अरुण चक्रा रे क दग पर कागिन करता हा रूत। परन्तु मुगलमानाका मगस्त्र विराधन जगी परास्त करानी अधास्ताका इम मग अनुन यद्धव ही मागमानका appeasement—मुगलमानाका हर मरुग मग रसनका काम ही माना ल और अतमें इमन अनरी हया कर ही दम लिया। परन्तु जगी गिद्धि प्रात करत गियाभा दनवा मगस्त्र विराधन कभा जम जोर जपायाका स्थायी नाग हारर मगी गानि स्थापित ना हा मरुता—वर पाड इम मुरागमें अपना नजरन मामन हाता रनवाका महारक उडाभियमि भा मागना नहा चान भ ही मुराग वा मगाधाना मरा जघत्राक विश्व मरुग इममें पार लयापी हुआ अगिक लडाभाम सबक मोवनमें विश्वास रन ल हा।

## गांधीजीकी जेल-यात्राओं

### १ दक्षिण अफ्रीकामें

१९०८ जनवरा १ द्रासवाक हत्यारे कानूनक नामस प्रसिद्ध और अगियाभी दफतरमें प्रत्यक भारतीयका अपना नाम लज कराकर परवाना उनकी वानम सम्बन्धित कानूनक विरुद्ध किय गय सत्याग्रहमें जाननिस्वगमें पकड गय। दो मामकी सानी ककी सजा हुआ। सरकार द्वारा समझौतकी गते पेन करन पर २० दिन वा ३ जनवरीको छुट।

१९ ८ अक्टूबर १६ सरकारक विश्वासघात करन पर फिर सत्याग्रह गरु हुआ। अतमें गांधीजी ७ सितम्बरकी वाक्त्रस्टमें पकड गय और अुह दो महानकी सरुन कदकी सजा हुआ। सजा पूरी करके १३ सितम्बरकी छुट।

१९ ० जनवरा १५ द्रासवाक अिमिग्रान अकका भग करके नानास द्रासवाक जात हुआ वाक्त्रस्टमें पकड गय तीन मासका सजा हुआ। २४ मआको छुट।

१९१३ नवम्बर ६ नय अिमिग्रान किलक विरुद्ध हत्तागियाक माय द्रासवाकमें प्रवण करते हुआ पामफमें पकड गय जमानत पर छाड गय।

नवम्बर ८ स्पण्डटनमें फिर पकड गया। फिर नमानत पर छाड गया।

नवम्बर ९ टाकवय नामक स्थान पर फिर पकड गया और मुकद्मा चलानक लिजे डडी ले जाय गया।

नवम्बर ११ डडामें ९ महानका मल्ल कत्का सजा हुआ।

नवम्बर १७ दूमरी धाराके मातहत वाक्कम्में और तान महानका मल्ल कत्का सजा हुआ।

सरकारन ममयौतकी बातचीत करनक लिजे १८ निस म्बरका छाड दिया।

## २ भारतमें

१९१७ अप्रैल १७ चम्पारनमें जाचक लिजे गया थ। वहा माताहारा जिग छोडनका सरकारा नास्मि मिग न मानन पर मुवदमा चगाया गया परन्तु मजा दनक बजाय सरकारन वाक्कमें मुकद्मा वापस ले लिया।

१९१९ अप्रैल १० राष्ट्राय सप्ताहक मिल्सिस्में गगाकी अत्तजनाका गान करनक लिजे पजाव जाने हुए लिस्लाक नज्जाक कासाक पास पकडे गया। परिणाम-स्वरूप लागामें अधिक अतृप्तना फलन पर बम्बशी लाकर छाड दिया गया।

१९२२ माघ १० 'यग श्रिडिया पत्रमें लिख गया तान लयकि लिजे राजद्रोहक अभियागमें पकडकर छह बपकी मानी कत्का मजा दी गया।

यखदा जम्में अपण्डिसाश्रियामका तकराफ हा जान पर ९ फरवरी १९२४ का छाड दिया गया।

१९२० माघ १२ १२ माघ १० ० का गडी-बूच गुफ का और दाडामें नमक-नानून ताडा, परन्तु पकड नहा गया। वाक्कमें ० मजीका गतके समय बरारीमें जुहू १८७७ क रग्गान २५ क मानन पकड कर मुकद्मा चगाय बिना ५ मथाका यखदा जम्में बन् कर दिया गया।

माधा श्रिविन-ममश्रीतरा बातचातन लिजे १६ जनवरा १९२१ का छाड गया।

१०३२ जनवरी ६ ३१ सिंगपूर १०३१ का फिर गंधावती लडाकी गुरु का मंत्रा। ६ जनवरी १०३२ का मंत्रार गुरुण गाव बम्बआमें १८१८ व गुरुणान ३ व माणत परड कर मुक्तमा सलाय बिना परवडा जन्म बन् कर निय गय।

८ मजी १० ३ का २१ निना इगिजत गवाग गुरु वरन पर गुरारत जुगा निन छाड दिया।

१०३३ जनवरी ३१ व्यक्तिगत गंधावत गुरु वरन पर परडकर परवडामें धार निन ग्यागतमें रग जानन वान ६ जगन्तरा नियत्रणन अधान छा निय गय।

१०३३ अगस्त ६ परतु गांधीजान जग नियत्रणता जुगा निन गधिनय भग किया अिमन्त्रि जह वर वपकी साग वन्की मजा दकर परवडा जन्में बन् कर दिया गया।

अिम वाच मक्तेनान्के साम्प्रदायिक निययन सिलमिन्में अपवास गुरु वरन पर अ २३ अगस्तको छा निया गया। परतु गांधीजान मजाका समय पूरा हान तक जयान ४ अगस्त १९ ४ तक वक्ठ असृयता विरोधी काम करतरा ही नियय किया।

१०४२ जगस्त ० भारत छोटा आन्तकनर सिन्सिन्में बम्बआमे पकडकर भारत रग वान्तकी २६ वा धाराने अनुमार आगागा मह्में नजरन् रत गय।

६ मजी १९४४ का वीमारोन कारण जिन्गी खतरमें मानकर सरसरान जन् छाड दिया।

### गांधीजीके उपवास

१९१३ फीनिक्स — आग्ने दो साधियाक दापके सिन्सिन्में प्रायश्चित्त स्वल्प अ सप्ताहका उपवास। बान्में भी सा चार माग तक जब हा समय भाजन किया।

१९१४ फीनिक्स — असे ही कारणत १४ दिनका उपवास।

१९१८ अहमदाबाद — (माच १२) अहमदाबाद मिठ मजदूर समझीता होन तक अपना ह्ताल चाडून रवें जयवा मिठका कामकाज

हमेश्च त्रिंशत् छाह न ३ तत्र तत्र अन्नका म्पान न करनकी प्रतिना । २ त्रिंशत् जुषवासर वात् समवाता हा गया ।

- १९१९ सावरमता — (अग्र १) नन्ध्यान्में रत्ना पत्नी अवाहनक प्रयत्नक प्रायश्चित्त-स्वरूप तान त्रिंशत् अपवाम । तगानि त्रिंशत् प्रकारका एक त्रिंशत् जुषवाम करनका कहा । अपगध कर्म वाग्नि स्वय हाजिर हा जानका अपात् वा ।
- १९२१ बन्धुआ — (नवम्बर ११) पाच त्रिंशत् जुषवाम त्रिंशत् आक वल्मक आगभनक माक पर हुअ तगान मित्रमिन्में प्रायश्चित्तक रूपमें ।
- १९२० वारडाग — (फरवराक दूमर मज्जाहमें) चोगचौराक हत्या वाणक मित्रमिन्में पाच त्रिंशत् जुषवाम ।
- १९२४ त्रिंशत् — (मिनवर १८) काणक द्विदू-मुस्लिम दगाके वात् हिन्दू मुस्लिम अन्तक त्रिंशत् २१ त्रिंशत् जुषवाम ।
- १९२५ सावरमता — (नवम्बर २४) आश्रमक साधियाका भूत्क मित्रमिन्में मात त्रिंशत् अपवाम ।
- १९२२ यरवहा जत् — (मिनवर २० तगान्म) मकडानालक साम्प दाधिर निणयक विद्वद प्राणान् अपवाम । २६ मिनवरका तगामक पाच अज सग्वारद वत् २४ निणयना जानकारी कगआ जान पर जुषवाम छात् त्रिंशत् ।
- १९२२ यरवहा जत् — (मिनवर २०) अप्यानात्त पत्थनका जत्में मागा हुआ भगाना काम न मित्र पर अन्तर जुषवामकी सहानु भूतिमें जुषवाम । दा त्रिंशत् आश्रमन मित्त पर जुषवास छात् ।
- १९२३ यरवहा जत् — (मजा ८) २१ त्रिंशत् हरिजन जुषवाम । सरकारने भुमी त्रिंशत् गापाजाको जत्त छाह त्रिंशत् था । अपवामका पूषातुति पूनामें पाकुटा नामक स्थान पर २० मजाका हुआ था ।
- १९२३ यरवहा जत् — (अगस्त १६) मजाक छत्कारन पद्दत मिन्नवाला मुविपाके मरवार डाग वत् कर दन पर जत्में स हरिजन थापका मज्जान करनका छत् प्राप्त करनक त्रिंशत् जुषवास पूर किया । २० जत्तका अद्द कर्षीर त्रिंशत् हा साम्प अत्त तात्में हा त्रिंशत् गया । परन्तु २१ अगस्तका अन्तका सिपति गनीर हान पर अद्द बिना तन छाह त्रिंशत् गया ।



- १९४४ जुगभा — हजिजत गान्ध्यानी अर विराधाता रजिजन गान्ध्यानी अर प्रसारणन एगीम माग तव गांधीजान तान्ध्यानी श्यमें गात शिना अणवाग शिया ।
- १९३० राजकाण्ड — (मास ३ शान्ध्यानी) राजकाण्ड टाडन गान्ध्यानी प्रजाता शिया हुअ गभीर वचनता भग शिया यण जातर अणवाग । वाअगराय द्वारा मारिम स्वायरता पन बनान पर ७ माचता दोपहरक २-२० बज जुपनाग एडा ।
- १९४३ आगाया महल — (फरवरा १० शान्ध्यानी) तीन गनान्ध्यानी अपवाम सरकारी आगपान विरुद्ध ।
- १९४७ कान्कता — (सितबर १) कान्कतमें साम्प्रदायिक अरतात शिअ अणवास । ७३ घण्टे याण गहरमें सपूण दान्धिता अर शिअ बीतन पर और सब जातियात जोगा शारा अपन अपन हथियार गांधीजाक सामन पेश करना गरू बरन पर तथा शान्धिता आणवामन दन पर अपवाग छाडा । (सितबर ४)
- १९४८ नजी दिल्हा — (जनवरी १३) साम्प्रदायिक अरताते शिअ अनिश्चित अवधिका अपवाम । १८ जनवराका सब जातियात १३ नताआ द्वारा साम्प्रदायिक अरताक लिअ भरसक प्रयत्नकी प्रतिज्ञा करन पर अपवास छाडा ।

जल और जपशामकी ये सब यातनाओं अथवा तपश्चर्याओं अिस महा पुरुषन सहन करके जो सफलताओं प्राप्त की है जा आन्दोलन जगाया है कामोके हृदय जिस तरह हिलाय है अन सबके प्रतापसे आज हिन्दुस्तान अथवा या कहिये कि बहुत हद तक सारी दुनिया शांति और स्वतन्त्रताक दानाका अनोखा गम ले रही है। उनकी अिन सब यातनाओंका यह विवरण अन महापुरुषक प्रति और अनके दिये हुअ अमूल्य अन्तराधिकारके प्रति हमारी जिम्मेदारीका याण सना कायम रख यही कामना है।

फरवरी १९४८

गोपालदास पटेल

## सरदार और जवाहरलाल

गांधीजीने एक अवसर पर अपन व्यक्तिवका वणन अिन गल्पमें किया था म प्रत्यक्ष व्यवहार-कुशल आत्मावानी हू। केवल आत्माका गगन विहार क्वि कलाकार और नतिवाण या गायक सिनिक — मतानन आशुबवमें दखनका मित्र मकता है। अिम वगक लाग कदाचिन् जपन आत्माका विचार अमन आचरणकी भाषामें या मानव-जावनका मर्यादाओंमें नही करत या कर सकत। कौन जाने अिमक पाछ क्या रहस्य है। गांधीजीकी अक बडा विगपता य था कि व आत्माका ध्यान जावनमें अमका प्रयोग करक दखनक हंतुम करन और रखत थ। अिनालिअ व प्रयोगका क्षणभर भा भल नग सरत थ और न भग्ना चाहत थ। व अखिन् भारतक अक पूरा पाढ़ा जिनन लम्बे समय तक अद्वितीय पितृतुल्य नेता रह सक अिमका भा यहा कारण था। व्यवहार और गगन विहार वस्तुस्विति और आत्मा तात्कालिक सकलता और दूरदर्शी विजय—य इन्द्र अम हू जिनका जाम तीर पर आपसमें भल वगना कतिन है। य इन्द्र अुनमें अवमाथ गुण लअ थ। व वक्क व्यावहारिक बनकर नग परन्तु आत्मामे प्ररित हाकर अिम व्यवहारमें पठ और अिमलिअे आत्मा व्यवहार कर बन गय थ।

य ती गुण ययामभव अलग हाकर माना मूर्तिमान बन गय हा अिम प्रकार गांधीजाक सगक दा बड मायियामें दखनका मित्र हू पंडित जवा हरलाल और सरदार वल्लभभाभा गांधीजा द्वारा भारतका अकड मवाक अिने तयार करके दी हुअी अिन दा गुणाकी अनुपम जाडा हैं। मागतमें गांधीजीक पाम अिविध वायकी आवश्यकतावाला क्षत्र मौजूद था अुअ और अज्ञानक कारण स्वभावतः गगन विहारका प्रमा बन वगनवाग युवक-वक् और व्यवहार तथा दुनियागरीक मयानपनक कारण स्वभावतः वक्क व्यवहारमें बननवाग प्रत्यक्ष बल — अिन दानाका भारतका आजागका गवामें गांधीजाका अुरभाग करना था। अकका वक्क गगन विहारका तजीन कममूमि पर काअरत करना था ना दूरका वक्क अवसरवाक या धन-धन प्रकारेण काम बनानकी वगार जइनाम बाहर निवाकर और नअ बनकर अुगका अनुक शक्तिका

ध्ययका सामां माहना या । यत् काय गांधीजीन भिन्न न गुणात् मूर्तिमान्  
प्रतिनिधि पठित्वा ओर सरकारका समार करण अर्थात् शान्ति किया । यत् जादा  
आज स्वतंत्र भारतका भविष्य निर्माण कर र्गा है — जिमीतिप्र शान्ति प्रम  
सत्तारा बागद्वार गाँवा है ।

जिन दानार्थ जमन्नि पन्हू शिन्त अवगम अभाभमा शान्तिमें  
मनाय गय सरकारका जमन्नि ता १-१०-४८ वा और पश्चिमात्ता  
ता० १४-११-४८ वा । शान्ति जिन प्रम आनरभाव जोर अग्गात्तम य  
त्नि मनाय वट्ट भारतवं शिन्त न मन्तर्विषयात् प्रति प्रजाका कृपाता प्रशान्त  
करता है ।

पठित जवाहरलालका अपन शान्ति-शान्ति और शिन्त-शान्ति नाम जमार  
स्वभावक ह । भारतमाताका मिट्टाम बना हुआ शरार और अगुना शान्ति  
यत्नि भारतस प्रचलन करता हठी जागा न हाता ता पश्चिमात्ता अपनी शिन्तार्थ  
दवावस अद्वज मामन्त या अमरावके पत्रका गाँवा शनवाठ डगम जावन शिन्तान ।  
असक बजाय अन्हान भारतवं शरारवान मवक यननका प्रयत्न किया जिनक  
दो कारण बताय जा सक्ते ह — जनकी भारतीय आत्मा जोर गांधीजीका  
गुणपद । अपनी एक पुस्तकका नाम अन्हान डिस्वररी आफ् जिडिया रगा  
है असमें यह भाव साफ नजर आता है । भारतन मन्चे स्वरूपका अगुकी  
ससृष्टिका जोर गोखल-मर्तिका जा सागात्कार अट्ट हुआ अगका आनन्त जिन  
पुस्तकमें एकल हाता है । यह वस्तु जवाहरलालका अनकी विगयता  
शिन्तान नही बताओ बल्कि अग वस्तुस भिन्न दूसरी हो बानाम अनका  
विगयती शिन्तान अट्ट आनप्रान कर किया फिर भी व अपनी मन्चा  
आत्माका पहचान सक । अिमी प्रतातिका अन्हान भारतका सा तत्कार —  
डिस्वररी आफ् अिडिया — बट्टकर वणन किया है असा मरा खयाल है ।

अुपराक्त शिन्तान अट्ट आन्तक रूपमें यूरोपाय समाजवात् शिन्तयाया ।  
अम शिन्तानके कारण जाज भी जब वे यूरोपमें जात हाग तब अट्टे वटा  
अवाकापन या परादापन गाय ही लगता हीगा । परन्तु गांधीजीके साश्रिष्यमें  
रहने हुअ और साथ काम करने हुअ जसे अन्हान यह साखा कि स्वशान्तिभिमान  
ही काफी नही है असक साथ मानवताका अभिमान भा चाहिय वस ही  
अुन्हान यह भी साखा कि सिफ समाजवात् ही काफी नही है असम आग  
बट्टकर गांधीजीका सर्वोन्त्यवात् जोर शान्तिवात् भी हाता चाहिय ।

अिम कारणसे वे समाजवादी हुए भा गांधीजीके साथ रहकर बाग बंद सब और भारतकी तथाकथित समाजवादी पार्टी कुछ अपन एक मनुचित पत्रकारके रूपमें प्राण करनेमें अमफल रहा। आजकाल 'समाजवादी' नताआका पत्रमें जवाहरलालजीकी कल्पना नहीं की जा सकता, अिमका कारण यह है कि अुनके व्यक्तित्वका गांधीजीन जब विगय रूप लिया और तालामके जरिये असका विकास करके अस अपना राजनातिक अक्षराधिकार सभालनके योग्य और सुन्द बनाया। समाजवादी पार्टीन जवाहरलालजी जमना सा दिया अिममें अुम पार्टीकी भा अतिनामिन कामका अगजा लग जाता है। जवाहरलालजीमें असा ब्यक्तिक बग था कि वे अुम पार्टीके निरे अवास्तविक और अलज हुअ मानसके गिवार नहा बन सकत थे। अस असफरताअय मानसम जवाहरलालजीका आमा आच्छान्ति होकर पना नहा किन गिामें मुडकर मुक्ति पाता। भारतक लिअ वह अक बडा आफन ही हाती। परन्तु पडितजीका मानस और प्रनिभा अुमस अधिक बलवान और अधिक तजस्वा थी। और यह चीज आज मिद्ध हा चुकी है अिस सभी दख मकत ह। भगवान कर अुनके तज और अुनका गतिकका लाम भारतका और जातका दीघ का तक मिठता रहे।

सरदार वल्लभभाजीकी प्रतिभा और जनका ब्यक्तित्व अिसस मिद्ध स्वरूपक ह। वे धरतीक ह और धरतीकी तरफ अचल अटल ह। स्थिर भूमि और भूमिका पर पर जमाय विना वे किमा बातमें न ता स्वय हाय डाण्ट ह और न अय किमाका डाण्ट दन ह। अिस काममें वे पहें अुसमें गहरे अतर जानकी अुनकी बलाका मूल अुनके स्वभावका अुपरानत विगपतामें है। यह बात अुह किसीस सीगनी नहा पडी।

यह चीन नहा मानता कि मनुष्यका और घन्नुका या घटनाका मूपाकन करके घटना चाहिये? परन्तु जमा कर नकनवा विग ही लाग हात ह। अिसके अिअ बालनिकतासा रग विरगा मगग और अुअनामें बाय द सबनवाला पारली दृष्टि चाहिये। यह अेक विरग मानव-बकि है। गगन विगार पाहित्य अति आगवाड अियाअिम भी यह दृष्टि घुपग हो मकता है। दृष्टिका यह बगार गुाणना राखनीति और ब्यवहारमें बडा काम दनी है। यह अकिन सरदार माहवमें गरम ही दगनका मिलता है। अिया दृष्टिस अुन्धान गांधीजीका और अुनके कापकी भी दगा और अुनका मूपाकन

## फुशल व्यूहवार माअण्टचेटन

जमानरा गोरा पयाती हा गा भुमरा रिगाग कटा ४ रि अर बार हायमें रिगा रि भुम पयातर ही भुगा राटि रि अगमें ना पण लगे या बाजाम पर लगे बराकि बारमें अर जाय ता बार भा माय ही अर जाना है। कुल रिगाग पापम लगे माअण्टचेटन भारता रिगि राजनातिर समस्या हए वा जगा अब कए ना गयता है। गयरा विभाजन अन्तमें दगे ता जमानरा हा गोरा हुआ न ? अतर १५ग माअण्टचेटरा बधाया दी जा रही है अिसमें अगए मुरा ता घटी माना पापगा रि भाअरती राजनातिर गतरज पर कगा बाउ कए जाय रिगम रिगिग लगाता गाबा हुआ दाव सफर हा सए—अिम बाजका रिग कुण्ट नोसापनिन गमस लिया और अपना कुण्टताका जगन पूरा जसाग रिगा। कम भाअरती समस्या कम हउ की जाय यए नो पाणियामएर गयराय रिगि गत्र नातिगान निश्चित ही बर रिगा था यह काम काआ माअण्टचेटरन गिर पर नहा था।

पाकाको पता होगा कि जिगा साहबका नातिका जए जवन पामा हमगा यह होना था कि काआ बात मामन आय तब पए ता अुम अर धकता गगा दिया जाय और बादमें प्रतीगा की जाय रिग वीर बाअमरा खया माअूम हा जाता और अपन मित्राम बाचचीत करना हा ता असका भा मौका मिट जाना और याम बात ता यह थी कि ब सए अपना दाव गाच सकत थ। ३ जन १९४७ का जब माअण्टचेटरन नभा याजना पग का तब भी यह दाव चगनरी जिगा साहबन बागिग की था। परन्तु रिगमें अह सफर नही हान दिया गया बयाकि जमीनका सौगा माअण्टचेटरन दूमरी तरह पग नही सकत थ। अिगांजि आरी याजनामें पए जो जून १९४८ की तारीख थी वह पीछ हएकर अक्टुम १५ अगस्त १९४७ के न्पमें सामन आभी। और तारीख अितनी पीछ हए जान पर अन्हान अर सनिकक ढगस अवसरव याप्य काय करनकी जो कुण्टता और व्यूहाकि दिवाभी जमवे लिअ व सचमच बधाओवे पात्र ह।

अगस्त १९४७

## धर्मवार देश और भाषावार प्रान्त

१

पाठकाका अति गायकम आचय हागा। व सावेंग धमवार देश कमा ? अिममें ता हमार विवात नहा है। और अिम वानका भाषावार प्रान्त व साथ क्या जाना जाता ह भाषावार प्रान्त ता ठीक है परन्तु धमवार का ठाक नहा। और जनका भाषावार प्रान्त व साथ क्या वास्ता ?

आपत्ति ठाक है। परन्तु अुमना जब हमरा पहू भा है धमवार का या राष्ट्रका नाति ठीक नहा अमा हम कहत ना जकर ह परन्तु हमारा वृत्ति और मानन देखे ता मधमूच क्या मायम हाता है ? जान अनजान भी अन्तमें धमवार दग हा अय्य हा जाय क्या अमा वृत्ति या मनाया हमारा जनतामें नहा पाया जाना ? य का वान महा है कि अिम वारमें वान चर ता हम अदिम युग पमर नना करत परन्तु हमार हयवा भाव अमा न्ना है।

और भाषावार प्रान्त ? अिम सम्बन्धमें हमन कुछ कपोसि आयाक तीर पर अब भावनाका अजन किया है। अुम हम अमरमें भी गना चाहत ह परन्तु अमा करनमें तरद-तरद सवाय पना हात ह अडा अडा अमरें गडा हाता ह और यह भा शायद हा काआ वह मर कि अमा करनमें प्रान्तों वाच कव-नाय अगड पना नना हाग।

अर्थात् धमवार का वा हमारा बुद्धि ता विराय करता है परन्तु हयवा माभला न्का है। अिमअि अमरमें वहा प्रवण ग्ना है। और भाषावार प्रान्त व अिअ मनका वृत्ति ता नमार हाता है, परन्तु अुसका अमर करनमें बडी वापाअें गडा हाता ह जा हमारा हा मनाभावनाआनी अुपज है। अिमअिअ अरराअ अीपकमें अगा विविध ममस्याका हू तब जकर दाता प्रान्ताका आदा ग्या है और य ममस्या भारतन वतमान प्रान्ताका हा ममस्या है अगा कहें ना काभी आपत्ति न्नी अुनाया जा सवना।

नीयवमें अबत का हूभी दा विराधी सिगारी मनवाती याना गिण्ड  
गिण्डमें अर और चाजकी आर भा प्यान जाता है । धर्मवार का  
पाकिस्तानका आत्मा ह । अग देवाका भागवार प्राण की प्यान पग्वाह  
नहा है । पायन वह ता मार पाकिस्तानमें अब ही भाग प्यानका सिगार  
करेगा । वर्ना पाना भापाका अब मुख्य भापा मानकर पानिस्तानका  
पाकिस्तानका अब अलग प्रान्तका पन दनम वग क्या मायनात हा ग्या है ?

धमवार देव क जागवा जपनात पर भा पाकिस्तान कहुता ता  
यह है कि विधर्मो प्रजाजन भी पाकिस्तानका नागरिक रन सकेंग । जोर  
कायने आजम जिन्नात जपन अब वक्तव्यमें पूनाका प्राकमर गाडगिण्डका  
हवाका दकर कहा है कि अमा हाता काभी विचित्र वात नहा । प्रोफमर  
गाडगिण्डका मत जिन्ना साहब अिस प्रकार अदत करत ह

डाक्टर डी० आर० गाडगिल जम प्रसर अध्यापक अपन ९  
अक्तूबर १९४७ के वक्तव्यमें कहुन ह कि नय भारताय युनियनका  
हिंदू राय अथवा अधिक अच्छी तरह कहें ता हिंदू राष्ट्रीय  
रायाका सध कहुना ही अमका सच्चा वणन है । वे कहुन ह कि  
भारतीय युनियनको हिंदू राय कहुनम ही असका मुख्य और मबमे  
मूचक लक्षण व्यक्त हाता है । वे आग बनाने हैं कि अिसका यन अथ  
नही कि भारतीय युनियनके प्रगामें हिंदू-परम्पराके बाहरके गगार  
लिअ स्यान नहा हागा और उनके प्रति भदभाव रया जायगा ।

अर्यात् जिन्ना साहब यह कन्ने ह कि धमवार देवाका आत्मा मरा  
ही नही है भारताय युनियनका भी यही आत्मा है । और अिसमें मुग-पने  
मिद्धान्तकी दष्टिम काभी दाप नही क्पाकि विधर्मो अल्पमत भी धमवार  
देवाके तत्रमें रह सकत ह ।

अिस बारेमें वस्तुत अनका मुख्य आगय अितना ही मातूम हाता है  
कि दोना नय राय अिस आत्मा पर चरें क्योकि अनक मतानुसार क्या  
वे अिमी गगस अल्पमत नहा हुअ ह ? अमा हा ता वे भारताय युनियनको  
हमगा तग कर सकते ह जोर अपन देवास तो घर मुस्लिमोफो गभग निकाल  
ही बाहर कर देंग । वामें पाकिस्तानी धावती मचाते रहनके लिअ सुविधा  
पूण सिद्धान्त यही बन जायगा कि युनियनमें जो मुसलमान ह उनके लिअ

पाकिस्तान सरकार जिम्मेदार रहगी। जिस प्रकार यह सिद्धान्त रूपसे व्यवस्था हा जाय ता सदाके अि भारतका सतान रह मवत ह जगी कि मुस्लिम गीगकी अब तककी नीति रहा है। भारताय यूनियन हिंदू राय है यह स्वीकार कर लिया जाय ता यह बात आनान हा जाय। जिस प्रकार पाकिस्तान अपना आत्मा दूसरा पर भा थोप दना चाहता है और जिसमें था गाइगिज जसाके विचार वाछिन सहायता देने ह। अस्तु।

३

अब भाषावार प्रान्त क सिद्धांतरा विचार कर तो अुमे भारतीय यूनियन अपना आत्मा मानता है। परंतु अमक अमरमें वह जल्दी कर्म नहीं अुग मवता। अगा करनमें अनन विघ्न आत ह।

जिस प्रकार गीपकर दा आत्मा जम ह माना भारतक दा टुकड़ाकी परछाआ जिसमें भा पडा हा। पहला आत्मा पाकिस्तानन चलाया दूसरा आत्मा काप्रस अपन समन रखनी है। पहला आत्मा भारतीय यूनियनक मत्पे मदनकी पाकिस्तान वागिग करना है दूसरा आत्मा स्वाभाविक होनेके कारण पाकिस्तानका तग करता है यह साचता है अिमना क्या किया जाय? पहला आत्मा भारतमें अब गनालास जा ससृति और राय-व्यवस्था विव मिन हानी आ रही है अमक विरुद्ध है जब कि जिस्लामक ता धम प्रधान रायक गिवा और कौअी व्यवस्था समनमें हा नहा आती। और श्री जिभान जिस ढंगस पाकिस्तान हागिल किया है अुम श्वते हूअ फासिस्ट ढंगस काम किय बिना अुनका छकारा ही नहीं है। भारत अुमक बिबुल विरुद्ध है।

४

बान यह है कि किगा विरोध जाति या राष्ट्रवा निर्माण धम भाषा, जाति प्रदेश भूगाठ आदि अनक प्रकारक तत्वाका अेकभाय ऐकर होता है। यह अब अतिहामिक विराम है। किमी भी अब तत्त्वक आधार पर राष्ट्र पन नहा होना यह अेक गमूह भावनाका परिणाम हाना है और वह भावना अुम पुणपाया अुत्पन्न और पुष्ट हानी है जो किमी प्रणामें रहनवाण लोग अपन गमूह-जीवनमें गाय रहकर बरत ह। जम गह जावनको बर और प्ररणा देनवाणे अुपरोक्त मार तत्त्व अब प्रणामें गाय रहकर समाज-जीवन



निर्माण करनेमें सन्ध्याग दत्त बन्धु पर अन्ध-दूमरेत गाम जात्रात हाकर राष्ट्र भावना निर्माण करने है। अंगलिअ अत्र तस्यामें ग विनी अत्रा अन्ध बन्धु या मुख्य मानकर काम किया जाय ता राष्ट्र स्वभाविक निर्माण पर अन्ध्या चार हाता है। मनष्य समाजमें अग अन्धकार हा सत्ता है अत्रा कारण यह है कि समाजमें काथा प्रबन्ध मनुष्य पैदा हा जाता है ता बन्धु अग समाजकी भावनाका अपन समपक्ष अत्र ता माया-दा पात्र अगी बना सकता है। अगा काम मि० जिज्ञान भारताय राष्ट्र मुगलमानामें किया है। परिणाम स्वरूप काप्रमका कान्ताकी भारताय स्वरायका अत्र प्रान्तिमें से दा प्रान्तिया अुपन्न हा गयी। अत्र यह जिग काप्रमन गाता या और जिस यूनिपनमें मूर्तिमान किया जा मकेगा और दूमरा पारिस्तानता जिमन द्वारा हिन्दू मुसलमाना १८ वा सन्ध्याम पहलका अपूरा रत्न अत्रिणम अत्रिन वपौक बन्धु फिर मजीव बन रहा है। माना अतिहासका सरम्बना जा बाधके कालमें अत्रजी रायक महस्यलमें छिप गयी थी अब फिर स्वरायमें प्रग हो गथा। अत्र प्रकर अत्रजान यहाम जानक पहल यह बगडा बहुत बरे ढंगसे षडा कर दिया और हमें लचार कर दिया। राजा काल्म्य कारणम् अमीका ता नाम है।

## ५

अब भाषावार प्रान्तकी बातका देखें। राष्ट्रका बनानमें आन्ध्रान हान वाके अन्ध तत्त्वामें भाषा धमकी तरह अत्र सासृतिन बन्धु है परन्तु वह प्राय प्राणिक हाता है धम असा हा सकता है और नहा भी हो सकता है। धमक जातिन अन्ध भन्धु होन पर भा भाषा अन्ध सबमें अकरूप हाती है। मतन्ध यह कि भाषाका तत्त्व अन्ध सबमें प्रबन्ध और समावन्धु तत्त्व हाता है।

प्रत्यक दामें प्रबन्धकी दष्टिसे असेने कुछ विभाग करनेका जरूरत हाती है। असे विभाग अत्रज गामक असे असे अन्धना राय बन्धुता गया वसे-वसे असे कान्तेमें रखनेके लिअ करत गया। अत्र कारण असेमें पूव अतिहासकी कुछ प्रादेनिक व्यवस्था ता आगी परन्तु और कुछ नही हुआ।

अत्रजाने कालमें चात्रु हुआ यह व्यवस्था स्वरायक अन्धकार नही हो सकती। अन्धमें भी देशा रा वाके समावेका सवाक बहुत बडा है। अत अत्र बड प्रश्नका क्या किया जाय? काप्रसन बरसोमे भाषावार प्रान्तकी जो

कयना अपने सामन रखा है वह अब कायलत्रमें अतरनका वागिग बर रहा है।

जिसमें भयस्यान स्पष्ट ह पहला तो यह कि कुठ लग अमा मान कर चलन ह माना भाषा हा प्रान्तका नकगा वनानमें अेकमात्र मख्य वस्तु हा \*। जिसक परिणाम-स्वरूप मौजदा प्रान्त तथा गगा रागामे मिग्टा हुआ सरलरि वगड खड हा मकन ह। गगाका गिग्याका अक जमा वाम है जिसक त्रिअ भाषावार प्रदेश अुत्तम मुविधा बन मकता है। परन्तु यह हा मकता है कि वहा प्रेग आधिक औद्यागिक राजनातिक तथा गासनिक दृष्टिस मफ न ना हा। जिसलिअ वस प्रगका गिगण-व्यवस्था म हा भाषावार

\* महाराष्ट्रमें प्रा० डा आर० गागिगिन अमा राय फलाजा है। अुन्हां यह कपना का कि भारत अक बग मधराय है अुमक घटक भाषावार प्रान्तरे राय ह। अर्थात अुनका दृष्टिमें अमराकाकी भाति भारत माना भाषावार रायका समूह राय हा और म मता माना अिन घटक रायमें हा। जिसलिअ तब अिम तरह आग बग कि प्रयक रायमें अुमका कु भाषा प्रग जिसका करक रण देना चाहिय। और जिस प्रकार भाषावार गय-अुनगनका अल्लालन महाराष्ट्रमें वग हुआ।

य त्रिचार वात्मवमें गन या। अुपर था जिग्रा कहन है कि घमवार सपरागमरा बलना था गाडगिन का थी। अुगाम मिगता गगना दूनरा बलना यह भाषावार राष्ट्राय गयरे मपका माना गायगा। दाना अकसी हा गन और तथ्यमि दू ह।

भारत अक रायक रूपमें स्वतत्र हुआ है। अमरीकाका तरह रागान जिसका हाकर बाआ सावनीम भारत नहा बनाया है। जिस प्रकार भारताय पूनिनका अक मूल राय है जिसका भूगाल निश्चिन हुआ है। यह अुमकी अलानिक जिनिहागस और अुमर गनिधानम भी गगा जा मकता है। जिस सावनीम रागना राष्ट्रगना या पालियामण तब चाह तब और जम चाह वम बानन बनाकर अुमक पग राय बना मकता है और अुनमें फरबल कर मकता है। मन्त्व यह कि घटक रायका मू सावनीम अगि व नही है। महाराष्ट्रमें भाषावार राष्ट्राय प्रग राज्यका जा अल्लान अुग वह अुपगत गनकमाक कारण हा अग अता स्पष्ट मगता है।

हो परन्तु अगरी राय-व्ययस्या सौ फोगडी भाषावार नहीं भी है। फिर भी बम्ब्रा गहर निम प्राणम जाय अगता विचार कराए लिख कुछ राग अग विद्यामें पर कि य अग सारर भाषावार पार्सी जाए अग ल्य ।। अिम गताका कारण यह मायता है कि भाषा ही प्रान्त विभाका अवमात्र निशायक तत्व है । वस्तुतः जैसा ना है । पर मर है अ दष्टिमें रखन गयर मुख्य तत्व हा परन्तु यी अरमात्र तत्र नहीं हा सक्ता । वना यूनिवर्स लिख य पावन भावना वन जाया और पाकिस्तानका साम्प्रदायिक उदाहारा अत हानर बा भाषावार प्रात बनान पर अमें जबानिस्तान का पागपानभरी ल्याथी टि जायगा ।

## ६

भाषावार प्रात गिभाक लिख गाय तौर पर जरूरा है अमर बिना गिहाके काममें कठिनाथी आता है यह आजरा गिवाथी न्न ल्या है । अिसका हल भाषावार विचविद्यायाकी स्थापना और गिगा-नपरा पन व्यवस्था है । परन्तु अग्रजी और अदू भाषा अिममें विचार करापेगा गाय माया भी पचापेगी । (अक मुस्लिम-जाकी और दूगरी अपज-जाकी भाषाका भेंट भारतको मिनी है ।)

अदू कोथी गर हिदुस्तानी प्रान्तकी भाषा नहा फिर भा अग्रजी रायन अस प्रारभिक गिगामें स्थान दकर मुमत्मानामें अुस अपनी प्रात भाषा समझनकी भावना जाप्रत कर दी है । अिमका क्या किया जाय ? अिसी प्रकार कुछ लोग अग्रजी राय और अीसाथी धमके असरर अपजाको अपनी भाषा मान वठ ह । अनका क्या हो ? यह सवाल अनक धमकी लागू नहा हाता । अत्बता डर ता रहता है कि अममें भी धमका दया जायगा । तब ती भाषावार प्रात का प्रान्त धमवार देग की ह् तब चग जायगा और फिर नय स्तान की बला पना हो जायगी ।

## ७

अिस प्रकार धमवार देग और भाषावार प्रात य दा चार्जे भारतके अितिहासमें स आज खास तौर पर अूपर अठ आथी हैं और वे अपना ह् च् चाहती ह । यह ह् ल् न् निकात्तमें सच्चे धमकी और भारतकी सच्ची सस्कृतिकी परीक्षा होगी । अससे असी गलती करानके लिख जिन्ना साहव आज बडस बड कारण प्रस्तुत कर रहे ह वसी गलती यदि हम कर

बस ता त्रिमक्ष लिखे भविष्य हमारी पानीका जिम्मेदार मानगा। कलकका यह टाका हम अपन माये पर लगा सकेंगे? जवाब साफ है—नहा।

२७-१०-४७

१४

## लोकतंत्र या नौकरशाही

हम स्वतंत्र हो गये हैं त्रिमक्षि चारा जागम जाकतत्रक नाम पर कहा जाता है कि जनता अब सर्वोपरि बन रहा है अब दामें प्रजाका राय है। बात मही है। परन्तु यह ता निद्वान्न हुआ व्यवहारमें क्या है? सरकारा अधिकारा हा अभी तक अमरा मताधारा मान जात है। और त्रिमीका विन्नेगा गामनमें नौकरशाही कहा जाता था।

त्रिम सत्ताशाहीक मानमका गहरा दोष भारतमें आजका नहा है। कपनी-सरकारक जमानम अग्रजान हमारी प्रजाका यह दाप देव त्रिया था और त्रिमात्रि जिं जिंमें ककर जमा अक अक राजा या ठाकुर बडा त्रिया और अम कुल मता सौंपकर अपना रायतत्र तत्रा त्रिया था। आज भी वहा तत्र चालू है क्याकि वह सत्ताक आग जाचार बन जानकी लागानी करुण मानमिक दगा पर रचा गया है। त्रिमत्रि हम लोकतत्र लोकतत्र ता त्रिगने ह परन्तु अम प्रकारकी रायप्रथाका आनने न तो भागनक लोगामें ह न सरकारी गामन-तत्रमें।

अन मानमवाणी नौकरशाहाका कट्टा-जानि \* पम हाता है। अत स्वराय आ जान पर ना तुरन्त मुधरन लगनक वजाय सरकारी नौकर अपना पुराना नौकरशाही मता कायम रम मका है। यहा कारण है कि यद सतम हानक बा भी वह अपन-आप कट्टा छागनका प्रगति नहा हाता अम अम बयान दता है कि यति कट्टोल हट जायगा ता अमक बडूत बुरे परिणाम हात। अमकी त्रिम बातमें कुछ सबाआ हाणी। परन्तु प्रान यह नहा

\* और क्याग गप तया सभाजवाणी दग क अनुगार बना हजी म यात्रनाथे—पचवर्षीय योजनाथे यत्राद्योगका प्रगति बाग विचार—भी त्रिम नौकरशाही या अरगरशाही पडनिका हा पारण दनवा ह त्रिनता मरा जाट त्रैना ठीक हागा।

१५-३-५३

—म० दे०

है या अिना छात्र नहीं है। प्रत्येक छात्रागणों के बीच पर गणनायक बनना हो ता नोकरगणितो गिनाय गगरी जगगता है। आत्र यत् क, गिनाय जो साधा अमर हायमें जा गया है अुगत यत् पर यत् गिरजुत जीर भ्रष्टाचारम गत् हुय तत्रका यगती रली है। गिनाय परिणाम-रूपम त्याग पारा तगम गत् हुय जागमीरी मनागता भाग रत् ह। आत्रागत् क, गिनायमें अमर कत् अगह्य हा ता यह बात है। अिगता अत् हाता हा यगिन्। तर्ी ता ग्वात् भारतके भातर लातनत्रका गिनाय हा गतरमें पर जायगा जीर गारात् वत्राय वागी नोकरगणहा राय करमा तथा लात गिनायि मनागता लभम अमर गार्में पमतर अमर कत् अनुगार र्गनगत करत र्ग। यत् अयत् भयकर दगा है।

असे ही कुछ स्पष्ट अस्पष्ट उरम गांधीजीन कटात् विरुद् जा गिनाय-भा छड गिया है यह ममममें आन लायत् है। गारिगतात् कारण खतरमें पडा हुभी माग्गगयिस अकताको विरम स्थापित करनका मग्ग र्गन वात् यत् कट्टात् हटवानका आगगत् अकता दूगरा जनता हा कामता मत्रा है।

जनता पर टूट पडनका तयार व्यापारी वग जीर अतर गिगार यत् हुत्रे गराय त्रोग—दाना अिस कट्टोत्का ह्यानका वान पर अरमन हो रहे ह अिममें भा यहा अत् कारण है। मूचक बात यह है कि सरकारा नोकर ही ग्यात् तर कट्टाल ह्यानका विराध करत दिग्याभी दत् ह। जनता अमर पागमें स छूना चाहती है यह अत् गुभ चिह्न है। परन्तु कत् यत् रत् कि गांधीजी हा अुम अिम पागस छडा सकत ह अुसकी शन यह है कि वह अनका नन्त्व स्वीकार करे। नही तो मीजग ढगका कट्टात् तो हत् जायगा परन्तु लागा पर राय ता मध्यमवर्गी यापारियाका और सरकारा नोकराका हा वायम हा जायगा। परन्तु आम जनताको यदि सत्चा व्रान्ति करना हा ता असे गांधीजीकी अयनीति पर वापस जाना चाहिये। वह अयनीति यह है कि खाना जीर ग्रामोद्यागा द्वारा जाना आगस्य मिटाकर और अुत्पादन वगत्तर किफायत जीर स्वावठवनके द्वारा लोगाको अपना जायिक स्वराय प्राप्त कर र्गना चाहिये। अिसा तरह लाग अपना 'गाही' स्थापित कर सकेंग जीर मत्रियाका भी लाकराय स्थापित करनके वायमें अपना आवश्यक सहयाग द सकेंग।

## राष्ट्रीय सविधानकी दो शाखाओं

हमार एका स्वतंत्र सविधान बनाया जा रहा है जिसका एक शाखाओं है। उनमें से एक शाखाका सविधान-सभा विचार करता है।

राष्ट्रक सविधानका एक शाखा यह हुआ। जिस शाखाका सब काम जानन है। अबबाराओं जोर बाहर भा अमका मूब चकारों जोर विनापन हात ह। जिस कारणम एक-मानस पर असा अमर पता है माना महा दणका सविधान तयार करनेवाला काम है। परन्तु स्वतंत्र और लाकनाधिक राष्ट्रका सविधान जिननन पूरा नहा हा जाता। अमका दूसरा अग एकमतका निमाण और अमका सविधान है। एक राष्ट्र-सविधानका महत्त्व हाता है परन्तु अमका परिपूर्ण एकसुवाका मम्याआ द्वारा हाता है। अमक जिना एकतत्र च नहा सकता। अमिात्रि सविधान-सभाक माय काग्रम और दूसरे दल भी अपना नया और नवपगक अनुरूप सविधान तयार करनेका काणिा कर रहे है। एक सविधानका यह दूसरा शाखा है। और अमलमें यह बडा कामता है, क्वाकि अम पर हमार एक निमााका बन्त बडा आसार रहा। परन्तु एकका बात ता यह है कि साभाय एककि मनमें यह बात जितना ठमा नहा है। जिस बातका कान्किारा महत्त्व अमका मनपमें नहा आया है। परन्तु वह महत्त्व जितना अधिक है यह एक गांग किन्तु बडा मूचक बातका अस्तित्व करके हम बतायेंगे।

हमार दणकी सविधान-सभाका जम हात एक गाधाजान अमक त्रि अयक परिथम किया तथा सतन चिन्ता और जागृति बताया। परन्तु अमक अच्छा तरह बन जान पर बुन्हात अममें अपना बहुत मन नहा गया। अमिात्रि नन कि अमका महत्त्व कम है परन्तु भविष्यका कायानरुव त्रि जममें लगनका जफरल नहा था। महा तक कि राष्ट्रपिता हात हुअ ना जन्मान दणका अमि बिस्मरकीय बननवाका सभामें जग तक मूब या है पर एक ग्यनका समय नहा निशाला।

अब दूसरा शाखाका दणिक। काग्रमका नया सविधान तयार करनेक त्रि अन्तान जितन अमिा त्रि और घट त्रि ह ? मर्तनों तक व अमि कारणें चिन्तन करते रहे और काग्रमको मात्मान दण रह। अतमें दणको या म्त्रावत्र बुन्हात त्रिा यह भा अमिा त्रिातममें था। बुन्होंन बताया

है या भिन्नता छाग नहीं है। प्रत्येक साक्ष्यार्थी के रूप पर सम्पूर्ण ध्यान हो ता नौकरणा का विचार समझने के लिये आवश्यक है। जिनके पास नौकरणा का साधन अमर हाथमें जा गया है अमर बन कर वह विद्वान् और भ्रष्टाचार्य मर हुये तबका ध्यान करना है। भिन्न परिस्थान-अवस्था का कारण समझना जिनके हुये आत्मीयी मनाया भाग नहीं है। आत्मीय कृष्ण राज्यमें अगर वह अमर है तो यह बात है। जिनका अर्थ जाना ही चाहिए। तबका ध्यान भारतके भविष्य के लिये विचार है। परन्तु वह ध्यान और गांधीजी के साथ नौकरणाहा राज्य करना तथा लाभ विचारित मन्त्रालय लक्ष्य अमर जायमें फलपर अगर वह अनुसार सम्मान करता रहे। यह ज्येष्ठ नमस्कर देना है।

अस ही कुछ स्पष्ट जगत् जगत् गांधीजी के विचारों के विचारों का विचारना छेड़ दिया है वह समझमें आने लायक है। गांधीजी के कारण सन्तरेमें पडा हुआ साम्प्रदायिक अन्तर्गत विरम स्थापित कराना मन्त्रालय का यह कर्तव्य है। तबका ध्यान अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत है।

जनता पर दूरे पडाना तयार व्यापारी वगैरे अन्तर्गत विचार बन हुये गराव लागे—दाना जिन कर्तव्यों के हटाने की बात पर अरमन हो रहे हैं जिनमें भी यही एक कारण है। मूखक बात यह है कि सरकार नौकर ही ज्येष्ठ तर कर्तव्य हटाने का विरोध करने लगा आ देन है। जनता अमर पायमें म छटना चाहती है यह एक शुभ चिह्न है। परन्तु वह यह सोच कि गांधीजी ही जिन अमर पायस छल मन्त्र ह जिनके मत यह है कि वह अन्तर्गत नौकर स्वीकार करे। नहा तो मीठे दूधका कर्तव्य ता हट जायगा परन्तु उगा पर राज्य ता मध्यमवर्गीय व्यापारियों और सरकारी नौकरों का ही ध्यान हा जायगा। परन्तु जिन जनताको यदि सच्ची शक्ति करनी हो ता उसे गांधीजी की जयन्ती पर ध्यान जाना चाहिये। वह अर्थनीति यह है कि खाना और ग्रामाचार्य द्वारा अन्तर्गत मिटाकर और अन्तर्गत बढ़ाकर विचार्य और स्वावृत्तवने द्वारा लोगोंको अपना आर्थिक स्वराय प्राप्त कर लेना चाहिये। इसी तरह लोग अपना 'शाही' स्थापित कर सकेंगे और मन्त्रियों भी लक्ष्य स्थापित करने के लिये अपना आन्तरिक सहयोग दे सकेंगे।





कि अब कामें बाधना विना ही गांधीजी जोर लाग-भवन-संग नये कामें जग लाया था। राज्य-सिंहास भांगरी लाय जायता गांधी सिंहास नहीं कर मना था काम वा लागामें बाध आर जमकर काम करनेवाले विविध धर्मों लाग-भवन ही कर मना है। जैसा लागारा अब जब बड़ा मय मना करता था। जनता जग सिंहास लायता ही नये सविधान लाने शुरू मरगा। यना पक्का बांधी गिरगळी और लागारो दारुनीमें घमासनी चलाय-बाधो ही जगल हागा और जग सिंहास भिन्न हो जायगा। जिनसे प्रामें पत्र पत्र हाकर देगो स्वतंत्रता ना ना जाय ता आरथ नहा। अब ममयमें बलाय और प्रामाय मरवारार कामें या सेना और पुत्रिय बर पर हुकूमत चलनवाया डिक्टरेटारी पना हा जायगी जयवा लाक-भवनो सेवाख्या तय पर मूक आधार रनपर चलन वाया अर्वाचान जगका लायनत्र जुत्यत्र हागा। बाधमय दूमरे प्रामकी चान — अकतत्र — पना करनेका आरथ अपनाया है। जिनसे सिंहास बर नया सविधान तयार करनेकी कोशिश कर रही है।

देगवे स्वतंत्र सविधान पर जमर डालनवाया यह दूमरा बर है। वह भी सविधान-सभाक बराबर ही महत्व रखता है। आगरी शानिन मच्चे बीज जिस बातमें निहित रहेग कि देगवे सविधानकी अिम दूसरी गांधीके मवधमें हम क्या करते ह।

पुराना अितिहास याद करें तो १९२०-२१ में गांधीजीन बाधसका असा सविधान तयार करके अुसकी शान्तिकारी गक्ति प्रगट करके दिता ग या। जसने बर पर जाग बरकर १९३० में फिर नया सविधान तयार किया गया और जस नये सविधानके द्वारा स्वतंत्रता प्राप्त की गया। प्रजाका निर्माण करनेके सिंहास राजनीतिक स्वतंत्रताक माधतकी जरूरत थी बर माधत अब हमें मिठ गया है। असने साथ हमारे आग बड़नसे पहल ही गांधीजी गहीन होकर स्वयं हमें आगना माग दिता गय ह। यह सच है कि अस माग पर हमें अुनका प्रत्यक्ष नतुंय प्राप्त नयी है। परंतु देगवे आग बरनके सिंहास जिस नये सविधानकी जरूरत है वह अिमसे स्पष्ट हो जाता है। वह सविधान तयार करनेकी जिम्मेदारी बाधस पर है जस राय-सविधान तयार करनेकी जिम्मेदारी मरवारी सविधान-सभा पर है। लोगको लोक-सविधान तयार करनेके अिम कामको अधिक ध्यान देकर समझना चाहिय।

## भारतके राज्य सविधानका जन्म

१

२६ जनवरी १९३० का दिन जब स्वातन्त्र्य दिवसके रूपमें निश्चित किया गया तब जिस बातका खयाल नहा था कि जुम धर्य जिसको आन्तर मचमुच स्वातन्त्र्य दिवस बननेका सौभाग्य भा प्रदान करेगा। वह दिन ठीक २० वर्ष बाद जिस महीनेमें मचमुच स्वतंत्र भारतका स्वातन्त्र्य दिवस बन रहा है यह महाभाग्य प्रदान करनेके लिए भारतकी सब सत्तानाको जगत्पिता परमात्माका आभार मानना चाहिये।

यह दिन दिखानेवाले गांधीयुगका इतिहास जितना भव्य है अतना ही उसकी फलश्रुतिके रूपमें निर्माण हुआ भारतकी सविधान-सभाका इतिहास भी भव्य है। जिस सभान तान वर्षमें मचमुच अपना भगीरथ काय पूरा कर लिया और वह भी सब-सम्मतिसे। (मौलाना हमरत माहानीका विरोध केवल विरोध था परन्तु जिस दृष्टिसे नहा था कि जो कुछ हुआ था वह त्याग्य है।) तनीस करोडकी आवाजावागे राष्ट्रका एक सविधान बनना भारतके इतिहासमें ता अपूर्व वस्तु है ही गायन ममारमें भा अपूर्व हो।

और सविधान तयार करना कुछ आगावा बनाने रायविद्या और कलमबाजाका खर आगता है। परन्तु स्वतंत्र हानवाले देगेके लिए वह याम्निविक चष्टा हानी है। देगेकी जनतामें विद्यमान ममी बलाबल दापानाप पूणापूणा और द्वायन्याका मयन शुरू हाता है मरूपमें अम राष्ट्रका समुद्र-मधन ही बह तो बुचिन हागा। मरूपमें विद्यमान मरु-दुरी गकितयाका दवामुद्र-मधम मचना है और अममें स नयनात निवाग्ना हाता है। जब मरु मरुप्रक्रिया हा—या या कहिय कि यह महामय चर अम ममय अमकी रक्षा करनेके लिए मजबूत मरुकाका बर हाना चाहिये नहा ता मरुग्यामें जमा आजकल मरु रहे ह वमा या अमो तरहका और कुछ हा मचना है। अमो बारेमें मरु गावधान और गड परा रहनवाली सरकार न हा ता सविधान अक तरफ घरा रह जाय या या कहिय कि मयनकी प्रक्रिया विगड जाय।

भारतमें अम बल नहा थ मा बात नगी। जम प्रथम बर मुमरुमानाका या जिस बरुता देगे दा टकड परनका बात म्बीवार करके अकम

रातम कर लिया गया। दूसरा बंड या अपराध द्वारा दूध गिराने का हुआ दंडी राजागादीना जगत्। गांधीजीकी शिगाभी दुभी कुणा जोर दूरसी नीति अिम जहरका भी गान कर लिया गरण मारण राताआका ममज्ञा-बुझाकर अह म्मन भारतीय माणमें तिरा लिया। अस्पृश्यताक सामाजिक बिषका भा अधजान १०३२ म ही यापर बनानका कोणिक की थी। अकिन गांधीजान तामरण अपयाम द्वारा अन जगत ही दबा लिया और या आउडहरका ही मनिभा रनता कायका मगिया बना लिया। और कन्द्रीय मरवारका बबड काप्रमकी न बनाकर याम्मनमें राष्ट्रीय अयवा सपण बनाया या भी काभी छाया बान माबिा नहीं म्मा। साम्मवानी और समाजवाण दगान भा कुछ विरापी बण फेंकन काफी प्रयन किय जा अभी तन जारा ह। परन्तु व बबड राजनातिक विराधनन जस रहे ह अिन दगान पास काभी राष्ट्रीय कायनम नहा है।

जिन तीन वर्षोंमें आतरि सुल गति और मुख्यवस्थाक प्रन भी कम नहीं अडे। और हाण हा में आजा हुआ जनताका तरह तरहकी आगाओं आकाशाओं माणें जोर तराज भी जवस्त परानी बन हअ य। फिर देणके अण जण वग अपन अपन हितारी राचनानमें पंकर जो नित्य और निष्ठर दगाही व्यवहार करन रहे वह भा कम गभीर भयस्थान नहा था। जोर य वग बबड आर्थिक ही नहा परन्तु राजनीतिक धार्मिक और सामाजिक भा रहे ह। अिन सब कनिाअियास पार होकर जतमें २६ जनवरीका अपना राष्ट्रीय सविधान समय प्रजाक हितके लिअ तयार करके हम अणक भविष्यकी ओर प्रयाण कर रहे ह। अिम धय अवसर पर जिस स्थितिका सभव बनानका सब गगाता हम अडजिअ अपण करन ह। भारतकी जय हा।

२३-१२-४९

२

स्वतंत्र भारतकी अपरोक्त तारीखक चार ही दिन बाद अुतना ही स्मरणीय बना हुआ दूसरी तारीख आती है ३ जनवरीकी। यण तारीख तो अुमस भी अधिक स्मरणीय और प्ररक बनगी क्यकि २६ तारीख यदि स्वतंत्र सविधानके कणवरका जमदिन ह ता ३० तारीख अुस कणवरके आत्मतण्वका स्मरण नित्य बन जानी है। जिस गक्तिन भारतकी आजानी

वापस लानमें मवम अधिक् याग दिया बुसकी सर्वोच्च परावाप्ला तो अिती  
 त्ति दुनियाका प्रत्यक्ष दग्नेका मिला भावा भारतका आत्मा क्या है,  
 अिमका गांधीजीन अपनी वाणास ता वणन किया हा था ३० जनवराके  
 त्ति शुद्धान अुम पूण रूपमें अपन आचरण द्वारा मिद्ध कर दिताया ।

हमारा आत्मा सर्वान्य है और अुसका अुपाय जा नीचेत नीच (अत्य)  
 हा मवन ह अुनका मभा मवस पट्टे करनम मिट जाना है । पाकिस्थानम  
 त्ति और भारतमें मुमलमान अुम समय अत्य थ स्वतत्र भारत अिम  
 मू नहा मवना । यह या दिग्गनका गांधीजा गहाट हुअ । भागव  
 आत्माका आजक मवयुग् (धम निरपण) राज्य — अिन गलामें पण  
 मिया जाना है । अिमका अय गांधीजीकी कुरवाना बतानी है । हिंदू महासभा  
 और अमक विचारन दूमर कुछ प्राचान जाणो-मवाना लाग बहन ह कि  
 यह ता नास्तिक राज्य हा गया हमें हिंदू राज्य चाहिये । और जाणों  
 दयवाना हिंदू राजनगतिन यह भी कहते ह कि भारतमें त्तिनुआका बहुमत  
 है अिगलिने हिंदू राज्य हा होना चाहिय । अमे गग अभी तक राजपूना  
 और मराठाने काक मकाण हिंदू धममे ही प्ररणा ेत जान पत्त ह ।  
 अितिगमन बनाना है कि हिंदू धमकी अिन जावन-गिटिन अन्तमें देका गुगम  
 बनाना यह दृष्टि अकना प्ररक या प्रगतिगा मिद्ध नहा हुअी । और अमक  
 वा हिंदू धमक नव मस्वरणका अवाचीन यग शुभ हुअा अिनक परमक  
 पुण्य गांधीजा थ । शुद्धान हिंदू धमका पुगण पवित्र प्राचीन विगात्नाका  
 फिरम जाकिन किया और प्रत्यक्ष जावन-व्यवहारमें त्तिवा त्तिवा कि त्तिदू  
 धम अक गनानन शक्ति है । अमा हिंदू धम काजा मग्प्रणय या मज्ज्व  
 नहा है ब, विमा विगप अत्मा कितार या प्रनक व्यक्ति तक हा मदान्ति  
 रनगाना धम नई है । जाकन धमका यह दान परम मानव धम-गना है ।  
 य वस्तु गांधीजान अपना कुरानीग भारतना मग या रणनक त्ति  
 विरामनक रूपमें ग है ।

अिन प्ररार २६ और ३० जनवरी गाना मिक्कर स्वतत्र भागनना  
 खण्ड बनाना है । सर्वान्य राज्य ही मच्चा हिंदू राज्य है यहा गचा  
 गावुग् राज्य भा है । हिंदू धम और हिंदू समाज अपन हा पापम क्षीणनज  
 बना या आज जगनहा पू निरन्तवाना हिंदू जाणो-मवाना अिम  
 पण मगन हिंदू के जावन और मग्गम गमन ह कि हमारे धमका

नवयुग आरम्भ हो रहा है। अगले चरण और अगली जगत्-जगती नव प्रकृत चरनरा युग आरंभ हो रहा है अगला नया आगमनाहू है।

३

गवियान-जन्ममें तागर धारणका काम पूरा होना पर श्री आर्यभट्टन अर्ध-रम्या भाषण किया। अगमें बुद्धान नव ध्यायना दा रि जाभित्त सवका बधानिक इगम कानूनन अनुगार धरना धारिप रिगार रि तहरी पद्धतिका जोर मत्याग्रह अगत्याग जोर गवियन कानूनन भग आरिपि पद्धतिका भी छोडना पडगा। पुरान तरम दलर लाग रिमा प्रचार १९२० ग गांधाजीका कहने आय थ। अर नव युगमें तय पैसा हुअ नरम गवियानकाी लाग नी यह कह ता अिममें आचय न्हा।

परन्तु अिम विचारका अर बात ध्यानि नन याय है। नी आर्यभट्टन सत्याग्रह अित्याधिका क्या अय मानकर यन् कहा हागा? हरिनारा नर ननाकी हेमियतम बुद्धान भी कुछ सत्याग्रह और अगह्याग जाति छड थ। मनुस्मृतिका जलानका तरीका भा अग गमय आजमाया गया था। यन् अुम सत्याग्रह समझकर व कहन हा रि वन गयाग्रहण रि अर म्यान नहा रन ता रिगमें आपत्ति नहा बराकि वह मन्चा मन्चाग्रह नहा था।

जोर जाज अनगन हन्ता जाति तग करर या मनाकर काम निता उनके जो हठाग्रही डग भारतमें शुरू हुअ ह व भी त्याग ह बराकि वे सत्याग्रह नहीं ह।

परन्तु गांधाजीकी मिताओ हुअी चाज ता जुनका अकमान और अनमान जावन भेंट है। वह अुनका मानर-नरिवारका मिताया हुआ अुनान पाठ है। जुमके रि अर स्थान था रिमा कारणग स्वराय आया अमे अर स्वतत्र भारतमें हम जिगना स्थान गेग जुनका वह मुरात या मन्चा अयका मपूर्ण स्वराय बनगा जोर सवकी गान्ति ममृद्धि और सुय द गवगा। सत्याग्रहके द्वारा लोकनत्र सनाथ हुआ है अर व्यक्ति भा सत्याग्रहके द्वारा महागक्ति भिद्ध हुआ है सत्याग्रहसे स्वानश्रयन अपना परम गस्त्र प्राप्त किया है सत्यको अपन जसा ही अमोय जोर परम कल्याणकारी गस्त्र सत्याग्रहसे मिला है। स्वतत्र भारतम अम पर कोआ प्रतिबन्ध नहा लगा सकता। परन्तु सच पूछा जाय ता बिन्हा और सत्याग्रह पर प्रतिबन्ध लगा हा कौन सकता है?

